हिन्दी-शेक्सपियर

पाँचवाँ भाग

लेखक

गंगाप्रसाद, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१४

सर्वाधिकार रक्षित]

[मूल्य ॥)

Printed and published by Apurva Krishna Bose, at the
Indian Press, Allahabad

विषय-सूची ।

Each change of many-coloured life he drew,
Exhausted worlds, and then imagined new,
Existence saw him spurn her bounded reign,
And panting time toiled after him in vain

DR JOHNSON

शेक्सपियर और स्त्री-जाति ।

इस भाग में हम यह दिखाना चाहते हैं कि अपने नाटकों में शेक्सपियर ने स्त्री-जाति को कौनसा स्थान दिया है। नाटक वास्तव में सांसारिक घटनाओं के फोटो होते हैं जहाँ तक उन घटनाओं का सम्बन्ध मनुष्य-जीवन से है। इसलिए हमारे विचार में यह जानना किसी प्रकार से लाभ शून्य न होगा कि स्त्रियों ने इन मानवी घटनाओं में कहाँ तक हिस्सा लिया है। इस अन्वेषण से दो बातों का पता लगेगा एक तो यह कि शेक्सपियर या उसके सहकालीन पाश्चात्य मनुष्य स्त्रियों को क्या समझते थे। दूसरे यह कि शेक्सपियर-लिखित ग्रन्थों के अवलोकन से मनुष्य-जीवन को कहाँ तक लाभ पहुँचेगा या दूसरे शब्दों में जो स्थान इस महा कवि ने स्त्रियों को दे रक्खा है वह कहाँ तक उचित है।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि हम मनुष्य-जीवन में से केवल स्त्रियों के विषय में यह विचार क्यों उठाते हैं और पुरुषों को क्यों छोड़ देते है, क्योंकि मनुष्य-जीवन में स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही सम्मिलित है। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि आज कल हमारे भारतवर्ष में स्त्रियों को बहुत ही तुच्छ स्थान दिया जाता है और उनके अधिकार पद-दलित हो रहे हैं। ये आज कल हमारे देश में प्रायः उस स्थान पर बैठी हुई दिखाई पड़ती हैं जहाँ नीच से नीच भी बैठना पसन्द न करेगा। प्राय इन को मनुष्यों

के पैर की जूती कहा जाता है और यद्यपि इस समय हमारी चमड़े की जूतियों का मान अधिक हो गया है परन्तु इन कल्पित जूतियों को अभी उसी स्थान पर छोड़ दिया गया है।

इस से यह नहीं समझना चाहिए कि प्राचीन भारतवर्ष में भी स्त्रियों की यही दशा थी। क्योंकि प्राचीन वेद शास्त्रों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मनुष्य-जाति के दो बराबर के खण्ड करके आधे को पुरुष और आधे को स्त्री कहते थे। अर्धांङ्गिनी शब्द समानत्व की यथार्थ सूचना देता है। मानसिक, आत्मिक, शारीरिक तथा अन्य सब अधिकार उनके तुल्य थे। परन्तु यह अधिकार हमारे देश में शेक्सपियर के समय से बहुत पहले छिन चुके थे। यूरोप में भी इस से पहले स्त्रियों को नीच समझा जाता था और शेक्सपियर के पश्चात् भी दो एक कवियों ने इनको आदर की दृष्टि से नहीं देखा। उदाहरण के लिए मिल्टन ने अपने महाकाव्य 'स्वर्गविछोह' (The Paradise Lost) में 'हव्वा' (Eve) का बहुत बुरा चित्र खींचा है और आदिम मनुष्य के स्वर्ग विछोह का कारण उसी को ठहराया है। निज जीवन में भी मिल्टन का यही विचार था और जब वह अन्धा होने के कारण अपनी लड़कियों से लैटिन के ग्रन्थ सुना करता था तो केवल स्त्री-जाति की तुच्छता और अयोग्यता का विचार करके उसने उनको इतनी शिक्षा प्रदान नहीं की थी जिस से वह उन ग्रन्थों को समझ सकतीं या उन में किसी प्रकार की रुचि प्राप्त कर सकतीं।

भारतवर्ष के आधुनिक कवियों ने प्राय स्त्रियों के अधिकार की रक्षा नहीं की और इनको उस उच्चश्रेणी से गिरा दिया है जो उन्हें वास्तव में ईश्वर से मिली थी। अबला विचारी अबला

ही है और उसका सताना कोई वीरता का काम नहीं है परन्तु न जाने हमारे बड़े से बड़े कविगण इस के ऊपर क्यों कुपित रहे हैं। यदि शृङ्गार-रस का वर्णन करते हुए इन्होंने स्त्रियों का लोहा माना है तो केवल इतना ही कि इनको विषय-भोग का साधन ठहरा दिया है। इस से अधिक उनको किसी माननीय घटना में सम्मिलित नहीं किया। हाँ यह ठीक है कि कहीं कहीं उनके पातिव्रत तथा अन्य प्रशंसनीय गुणों को बड़ी प्रबलता से दिखाया है परन्तु पुरुषों और स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत सी अरोचक बातें लिखी गई हैं। अनेक-पत्नीभाव भारतवर्षीय कवियों में बड़ा प्रबल है। कालिदास की शकुन्तला को ही लीजिए। उसकी माता मनका किस प्रकार तपोभङ्ग करती है। शकुन्तला को सपत्नीभाव से कितना कष्ट पहुँचता है। और दुष्यन्त किस प्रकार अन्य स्त्रियों के प्रेम में शकुन्तला को भूल जाता है। 'विक्रमोर्वशी में काशीराज—पुत्री की उर्वशी के दर्शनानन्तर क्या दशा होती है और पुरूरवा किस प्रकार एक अप्सरा को देखकर निज स्त्री को त्याग देता है' जहां कहीं राम-सीता के सम्बन्ध का वर्णन आता है वहाँ अवश्य बड़े बड़े उच्च भाव दिखाये गये हैं परन्तु यह एक असाधारण बात है। गोस्वामी तुलसीदास जी की कविता का अनादर किये बिना भी हम यह कहने से नहीं रुक सकते कि उन्हो ने स्त्रियों को अनेक प्रकार के भोगों में सम्मिलित कर दिया है। वह एक स्थान पर लिखते हैं "स्रक् चन्दन बनितादिक भोगा" अर्थात् स्त्रियां भी एक प्रकार का भोग हैं। स्त्री-जाति के लिए यह बड़ा अपमानसूचक है और जिस जाति के उदर से हमने जन्म लिया है और जिसके स्तनों से हमारा पालन पोषण हुआ है तथा जिसको प्राचीन ऋषियों ने 'मातृदेव' के नाम से पुकारा है उसी जाति का ऐसा अपमान

करना बड़ा अनुचित है। जहाँ हमारा यह विचार नहीं है कि स्त्रियाँ पुरुषों की शिरोमणि हैं और पुरुष उनके दास हैं वहाँ हम इस को भी उचित नहीं समझते कि इनको पुरुषों की दासी समझा जावे।

इस विषय में हम Ruskin रस्किन की सम्मति लिखते हैं। उनका कथन है:—

We hear of the "Mission" and of the "rights" of woman, as if these could ever be separate from the Mission and the rights of man——as if she and her lord were creatures of independent kind and of irreconcilable claim. This, at least, is wrong. And not less wrong——perhaps even more foolishly wrong is the idea that woman is only the shadow and attendant image of her lord, owing him a thoughtless and servile obedience, and supported altogether in her weakness by the pre-eminence of his fortitude.

This, I say, is the most foolish of all errors respecting her who was made to be the helpmate of man. As if he could be helped effectively by a shadow or worthily by a slave.

अर्थ— हम स्त्री जाति के उद्देश और अधिकारों के विषय में बहुत सुना करते हैं मानो यह पुरुषों के उद्देश और अधिकारों से भिन्न हैं—मानो स्त्री और उसका पति एक दूसरे से स्वतंत्र और भिन्न हैं। कम से कम यह तो अनुचित है। और यह विचार इससे कम अनुचित नहीं या शायद और भी अनुचित है कि स्त्री अपने स्वामी की एक छाया मात्र दासी है जिसका कर्त्तव्य है कि बिना किसी सकोच के अपने पति की हर प्रकार की सेवा किया करे। और अशक्त अवस्था में उसके अपूर्व साहस द्वारा सुरक्षित हो।

मेरा विचार है कि उस स्त्री-जाति के विषय में जिसको पुरुष की सहायता के लिए बनाया गया था यह बड़े अनर्थ

की बात है। मानो उसको एक छाया या दासी से पूर्ण सहायता मिल सकती है।

जो विचार रस्किन ने ऊपर लिखे वाक्यों में दिखलाये हैं उनसे हम सर्वथा सहमत हैं और शेक्सपियर के नाटकों में भी इन्हीं की झलक पाई जाती है।

शेक्सपियर के नाटकों में प्रायः नायक प्रसिद्ध नहीं हैं किन्तु नायिकायें हीं प्रसिद्ध हैं। सिवा पंचम हनरी और (वैरोना के दो भद्र पुरुषों में से एक) वैलिण्टायन के और किसी पुरुष को उसने इतनी उत्तमता से नहीं वर्णन किया। ओथेलो शायद बहुत अच्छा नायक सिद्ध होता अगर अपने सरल स्वभाव के कारण वह हर प्रकार के धोखे में न आजाता और नीच कार्य्य न कर बैठता। कौरियोलेनस, सीजर, एण्टनी यह सब यद्यपि वीर थे परन्तु अपने अभिमान के कारण नष्ट हो गये।

हैम्लिट केवल उदास और काल्पनिक युवक था। रूमियो सन्तोषहीन था। वेनिस का व्यापारी अपनी दरिद्रता से ही मुक्त न हो सका। राजा लियर का मित्र कैण्ट वास्तव में बड़ा भद्र पुरुष था परन्तु उसके उजड्डपन ने उसे कृतकार्य्य होने न दिया। और लेण्डो को देखिए तो यद्यपि उसके भाव बड़े उच्च प्रतीत होते हैं परन्तु वह भाग्य के हाथ में एक प्रकार का खिलौना है जिसके जीवन को सहारा देनेवाली केवल रोआलिन है।

'हनरी पंचम' का आरम्भ ही सैलिक नियम-सम्बन्धी वादविवाद से होता है जिसमे स्त्रियों के अधिकार पर आलोचना की गई है और हनरी की विजय एक प्रकार से

स्त्री-अधिकार की विजय है। 'राजा लियर' की कनिष्ठा पुत्री कौर्डीलिया का चरित्र कैसा प्रशंसनीय है। उसकी सत्य-प्रियता, पितृभक्ति, धर्मपरायणता सबही विचित्र है। डेसडि-मोना के पातिव्रत का तो कुछ कहना ही नहीं। सिम्बेलिन की पुत्री इमोजिन किस प्रकार अपने धर्म की रक्षा करती है, हनरी अष्टम की महारानी केथरायन किस सन्तोष के साथ अपने पति से बिछुड़ता है, सिल्विया, वायोला, वर्जीलिया किस प्रकार मनुष्यत्व के उच्च से उच्च भाव से पूरित हैं। इन सब का विचार ही हम को एक नई दुनिया में ले जाता है और मानवी आदर्श को बहुत ऊँचा कर देता है।

शेक्सपियर के नाटको में जहाँ कोई दुर्घटना होती है उसका कारण कभी किसी स्त्री का नहीं ठहराया किन्तु किसी न किसी पुरुष की मूर्खता या निर्बलता ही इसका हेतु है। जब कभी इस दुर्घटना का प्रतीकार हुआ है तो उसका साधन कोई न कोई स्त्री है और यदि वह स्त्री अपने काम में सफल नहीं होती तो परिणाम बुरा होता है।

शरद ऋतु की कहानी में लियोन्टीज व्यर्थ अपनी पतिव्रता स्त्री के सतीत्व पर शङ्का करता है और इसी के कारण अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। अब इनका उद्धार किसके द्वारा होता है? क्या किसी पुरुष का यह साहस होता है कि लियोण्टीज़ को समझा सके, कदापि नहीं। एण्टीगोनस और अन्य पुरुष राजा की हाँ में हाँ मिलाने लग जाते हैं। अब ऐसे विकट समय में केवल एक अबला पोलीना उठती है और समस्त कहानी को शोकजनक से हर्षप्रद बनादेती है। पोलीना के बिना लियोण्टीज का जीवन अन्धकारमय था।

राजा लियर की दुर्गति अपनी मूर्खता और बुद्धिहीनता के कारण हुई। वह यह न समझ सका कि सत्य क्या और अनृत क्या? यदि ऐसे समय में स्वार्थरहित कौर्डीलिया पर वह विश्वास करता तो अवश्य बचजाता। कौर्डीलिया ने प्रयत्न भी यथाशक्ति किया परन्तु लियर का पागलपन उसको भी ले डूबा।

औथेलो का तो कहनाही क्या है। इतनी प्रबल प्रेम-शक्ति होते हुए उसकी सरलता ने न केवल उसका ही नाश किया किन्तु सर्वस्व नष्ट हो गया।

'रूमियो और जूलियट' में जूलियट ने रूमियो के बचाने की कितनी कोशिश की और किस प्रकार अपने प्राणों की परवा न करते हुए अपने सतीत्व को रक्खा। परन्तु नाश किसके द्वारा हुआ केवल रूमियो के सन्तोषाभाव से। "जैसे को तैसा" में न्यायाधीश एंजीलो और इज़ाबिला का भाई क्लौडियो किस प्रकार अपने धर्म से पतित हो जाते हैं। परन्तु इनके धर्म की रक्षा करने वाली देवी इज़ाबिला ही है। 'कोरियो लेनस' में यदि मातृ-शिक्षा पर यथोचित काम किया जाता तो माता का प्रिय पुत्र नष्ट होने से बच जाता। परन्तु इस शिक्षा के विस्मरण से ही वह आपत्ति में फँस गया और माता की ईश्वर प्रार्थना द्वारा उसका उद्धार हुआ। और यद्यपि वह अपनी मृत्यु से न बच सका तथापि देश अहितरूपी कलङ्क का टीका उसके माथे से मिट गया।

प्रोथियस किस प्रकार अनेक स्त्रियों को देखकर उनके रूप से मुग्ध हो गया और अपने धर्म से पतित हो गया। प्रतिज्ञाओं को भूल गया। मित्र को निकलवा दिया। परन्तु दृढ़ जूलिया

अपने सत्य पथ से न डिगी। 'ग्रीष्म रात्रि के स्वप्न' में आपने पढ़ा कि किस प्रकार डिमेट्रियस ने हैलीना को कष्ट दिया।

इन सबसे विचित्र बुद्धि उस पोर्शिया की है जिस ने एण्टोनियो को दुष्ट यहूदी के आघातों से बचाया और जिससे सिद्ध होता है कि स्त्रियाँ न केवल अपने पतियों को रिझाना ही जानती हैं किन्तु वे बुद्धिमत्ता के बड़े से बड़े और सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य्य कर सकती हैं। जो बात मनुष्यों को आयु भर में नहीं सुझती वह इनको तुरत सूझ जाती है। जिस परोपकार के करने का मनुष्यों को साहस नहीं होता उन्हें यह करके दिखा देती हैं।

शेक्सपियर ने केवल तीन स्त्रियों को कुरूप में दिखलाया है। लैडी मेकबिथ, गानरिल और रीगन। लेडी मैकबिथ भीषण से भीषण कार्य्य करने से नहीं चूकती। रीगन और गानरिल अपने अत्याचारों में चुड़ेलों से भी बढ़ जाती हैं। परन्तु ऊपर लिखित अनेक स्त्रियों के प्रकाश-मण्डल के सम्मुख ये तीन स्त्रियाँ भयानक अपवाद मात्र हैं। और इनसे केवल इसी बात की सूचना मिलती है कि काबुल में भी गधे होते हैं। अन्यथा प्राय स्त्रियाँ कोमल, धर्मपरायण, सती और पतिसहायिनी ही होती हैं।

शेक्सपियर ने जो फोटो स्त्री-जाति का खींचा है वह वस्तुतः हर एक काल और हर एक देश की स्त्रियों में सघटित हो सकता है। अधिकतः स्त्रियाँ पुरुषों को बहकाने वाली नहीं होतीं किन्तु पुरुष ही स्त्रियों को बहकाते हैं। और वे अपने सरल स्वभाव के कारण पुरुषों पर विश्वास करलेती है।

पुरुष स्त्रियों को सुधारने वाले नहीं हैं किन्तु स्त्रियाँ पुरुषों को न केवल सदाचारी ही बनाती हैं किन्तु कष्ट के समय में उनको शान्ति देती हैं। इसीलिए मनुजी महाराज ने कहा था।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

इति।

हिन्दी-शेक्सपियर

पाँचवाँ भाग

बात का बतङ्गड़

(MUCH ADO ABOUT NOTHING)

मसीना के महल में हीरो और बीटरिस नाम की दो युवतियाँ रहती थीं। हीरो का बाप लियोनेटो मसीना का राजा था। बीटरिस लियोनेटो की भतीजी थी।

हीरो एक गम्भीर स्त्री थी परन्तु उसकी बहन बीटरिस हँसमुख और चञ्चल थी। वह नित्यप्रति अपनी बहन को अपने हास्य-प्रहसन द्वारा खुश किया करती थी। संसार में छोटी से छोटी भी घटना ऐसी न थी जो बीटरिस के हास्य का विषय न हो सकता हो।

जिस समय का इतिहास हम वर्णन कर रहे हैं उस वक्त कुछ उच्च श्रेणी के वीर पुरुष किसी युद्ध से लौट कर लियोनेटो से मिलने के लिए मसीना में आये। इनमें आरागन (हस्पानिया) का राजा डोन पेड्रो और उसका मित्र क्लॉडियो भी था जो फ्लोरेंस का शासक था। इन दोनों के साथ एक रसिक मनुष्य बेनीडिक भी था जो पेडुआ का राजा था। इस युद्ध में इन सब ने बड़ी वीरता दिखाई थी और विजय पाकर खुशी

मनाने के लिए वे मैसीना में आये थे जहाँ कुछ दिनों रहने का उनका विचार था।

ये लोग पहले भी मेसीना में आये थे और हीरो तथा बीटरिस से उनका परिचय हो चुका था।

जिस समय डान पीडरो और उसके साथी लियोनेटो के समीप आये उसने कहा—

"महाशय लियोनेटो। फिर आपको कष्ट उठाना पड़ा। संसार चाहता है कि खर्च से बचता रहे। परन्तु आप नहीं बच सकते।"

लियोनेटो—आपके शुभागमनरूपी कष्ट मुझको नित्य हुआ करें। क्योंकि ऐसी दशा में कष्ट के अभाव से शान्ति ही शेष रह जाती है। जब आप यहाँ से चले जाते हैं तब दुःख ही रह जाता है क्योंकि आनन्द तो चला ही गया।

डौनपीडरो—(हीरो की ओर संकेत करके) क्या यह आपकी लड़की है?

लियोनेटो—इसकी माता ने कई बार मुझसे यही कहा था।

बैनीडिक—क्या आपको इस बात में सन्देह था कि इनकी माता से पूछना पड़ा?

बैनीडिक की इसी प्रकार की हास्यप्रद बातें सुनकर बीटरिस बोल उठी—

"बैनीडिक! तुम अभी कह ही रहे हो! भला कोई सुनता भी है कि वैसे ही कहे जाते हो"

बैनीडिक—आहा! घृणादेवी! आप अभी जीवित हैं।

बीटरिस—क्या घृणा कभी मर भी सकती है जब उसके भोजन के लिए बैनीडिक जैसे मनुष्य मौजूद हों। यदि आप

उसके सामने जायें तो आदर सत्कार भी घृणा में परिवर्तित हो जायगा।

बैनीडिक—सिवा तुम्हारे और सब स्त्रियाँ मुझे चाहती हैं। परन्तु मुझे किसी से स्नेह नहीं है।

बीटरिस—यह तो स्त्रियों का भाग्य है। नहीं तो आप जैसे हानिकारक जीव उनको अपने प्रेमालाप से बड़ा कष्ट दिया करते। मुझे यह पसन्द है कि कुत्ता भोंकता रहे परन्तु यह पसन्द नहीं कि कोई मुझसे प्रेमालाप करे।

बैनीडिक—ईश्वर करे आपका ऐसा ही स्वभाव रहे नहीं तो किसी के मुँह को नोच खाओ।

बीटरिस—तुम जैसों का मुँह तो नोचने से भी अधिक भद्दा न मालूम होगा।

बैनीडिक को एक स्त्री के मुख से ऐसी हँसी की बातें सुनने से क्रोध आ गया। क्योंकि जो मनुष्य हँसी किया करते हैं वे दूसरों की हँसी सुनने से चिढ़ भी बड़ी जल्दी जाते हैं। बैनीडिक जब पहले मैसीना में आया था तब भी देख चुका था कि बीटरिस उसको खूब चिढ़ाया करती थी। इस प्रकार जब कभी यह दोनों कहीं मिल जाते और परस्पर वार्तालाप हो जाता तो इन सब बातों का यही परिणाम होता कि अन्त में वे एक दूसरे से अप्रसन्न होकर ही पृथक् होते थे। परन्तु इन दोनों का वाग्युद्ध कभी बन्द नहीं होता था।

बीटरिस युद्ध का समाचार पूछते समय कहा करती थी कि महाशय बैनीडिक इतने वीर हैं कि उनके मारे हुए पुरुषों को मैं खा सकती हूँ। अर्थात् इनसे एक मनुष्य भी न मर सका होगा। बैनीडिक इस बात से तो अप्रसन्न न हुआ क्योंकि वह वास्तव में एक वीर पुरुष था और बीटरिस के कथन मात्र

से कायर सिद्ध नहीं हो सकता था। परन्तु जब बीट्रिस ने उससे एक ऐसी बात कह दी जो उस पर फबती थी तो वह नाराज हो गया। क्योंकि काने को काना कह देने से वह चिढ़ ही जाता है। बीटरिस ने कहा—"तुम तो राजा के भॉड हो"। भॉड़पना बैनीडिक मे था ही। इसलिए उसे यह बात बुरी मालूम हुई कि एक स्त्री मेरे दोषों को इस प्रकार प्रकाशित करे।

सुशीला हीरो पाहुनों के सन्मुख बड़ी शान्ति से बैठी रहा करती थी। राजा क्लौडियो उसका बड़े ध्यान से देखा करता था। और उसके रूप तथा लावण्य पर मोहित हो गया था। परन्तु डान पीडरो को बीटरिस और बैनीडिक की बात सुन सुन कर बड़ी हँसी आती थी और एक दिन उसने लियोनटो से कहा—

"यह तो बड़ी चंचल स्त्री है क्या ही अच्छा हो अगर इसका बेनीडिक से विवाह हो जाय।" लियोनटो ने उत्तर दिया—

"महाशय! अगर इन दोनों का सम्बन्ध हो जाय तो एक सप्ताह में ही यह लड़ते लड़ते पागल हो जायेंगे।"

यद्यपि लियानटो के विचार से इन दोनों का जोड़ा मिलाने के योग्य नहीं था परन्तु डान पीडरो के मन में अभी यह बात बनी रही कि किसी न किसी प्रकार इनका विवाह हो जाना चाहिए।

जब पीडरो क्लौडियस के साथ राजमहल में चला तब उसे मालूम हुआ कि बीटरिस और बैनीडिक के विवाह के अतिरिक्त एक और विवाह होने वाला है। क्योंकि जब क्लौडियस महल से बाहर आया तो उसने हीरो की इतनी प्रशंसा

क्यों कि पीडरो को यह निश्चय हो गया कि वह हीरो को चाहता है। उसने क्लौडियो से पूछा—

"क्या आप का हीरा पर प्रेम है।"

क्लौडियो—महाराज ! जब मे पहले मसीना में आया था उस समय मे युद्ध पर जारहा था और स्नेह करने का अवकाश नहीं था। परन्तु अब शान्ति के समय में वीररस की जगह शृङ्गार रस ने लेली है। और अब जो मैं हीरो को देखता हूँ तो उसकी ओर मेरा मन आकर्षित हुआ जाता है।

पीडरो को क्लौडियस और हीरो का सम्बन्ध ऐसा उचित मालूम हुआ कि उसने लियोनटो से प्रार्थना करके यह विवाह स्वीकार करा लिया। और हीरो भी उस से विवाह करने पर राजी हो गई क्योंकि क्लौडियस बड़ा वीर और गुणी पुरुष था। जब ये सब बातें निश्चय हो गई तब विवाह संस्कार के लिए एक तिथि नियत कर दी गई।

यद्यपि विवाह के दिन निकटस्थ ही थे परन्तु क्लौडियस को एक एक घड़ी सौ वर्षों की बराबर बीतती थी। क्योंकि युवक मनुष्य जिस बात को करना चाहते हैं उसको जल्दी ही करना चाहते हैं और चाहे उसके होने में थोड़ाही समय क्यों न हो, उनको बहुत बड़ा मालूम होता है। इस समय मे क्लौडियस का जी बहलाने के लिए पीडरो ने एक और उपाय सोचा वह यह था कि किसी प्रकार ऐसी बात करनी चाहिए जिस से बेनीडिक बीटरिस से प्रेम करने लगे और बीटरिस भी बैनीडिक को चाहने लगे। हँसी के लिए लियोनेटो ने भी यह बात मान ली। और तो और सुशीला हीरो भी क्लौडियस के कहने से

इस बात पर राजी हो गई कि जो कुछ मुझ से बन सकेगा, मैं भी इस सम्बन्ध मे यथाशक्ति कोशिश करूँगी।

अब सवाल यह था कि किस प्रकार इस काम को करना चाहिए। पीडरो की समझ में एक बात आई कि सब लोग बैनीडिक को झूठ मुठ यह बात निश्चय करा दें कि बीटरिस उस से प्यार करती है। और हीरो बीटरिस को यह विश्वास दिलादे कि बैनीडिक उस के प्रेमरोग से पीडित है।

पहले पीडरो, क्लौडियस और लियोनेटो ने अपना कार्य्य आरम्भ किया। जब बैनीडिक बाग की एक कुंज में बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था उस समय वे सब लोग एक निकट की कुंज में जाकर टहलने लगे, जिस से उन की सब बातें बैनीडिक को सुनाई दे सके। पर उसे यह बात मालूम न हो कि यह बातें मुझे सुनाने के लिए कही जा रहीं हैं। पीडरो लियोनेटो से कहने लगा—

"लियोनेटो! आपने आज मुझ से यह क्या बात कही कि तुम्हारी भतीजी बीटरिस बैनीडिक से प्रेम करती है!

क्लौडियस—चुप! बैनीडिक सुनता होगा! मुझे तो यह आशा न थी कि बीटरिस किसी मनुष्य को भी चाहती हो।

लियोनेटो—मुझे भी यही ख़याल था। परन्तु यह बडी विचित्र बात है कि बीटरिस बैनीडिक से इतना प्रेम करती है। दिखलाने को तो वह उससे बहुत लडती है और उसे ख़ूब ही चिडाती है।

बैनीडिक ने दूर से जो यह बात सुनी तो मन में आश्चर्य करने लगा। परन्तु लियोनेटो ने फिर कहा—

"क्या बताऊँ, कुछ समझ में नही आता। परन्तु इसमें

कुछ भी सन्देह नहीं कि बीटरिस का बैनीडिक के लिए अगाध प्रेम है।

पीडरो—वह बहाना तो नहीं करती ?

क्लौडियस—हाँ, शायद यही बात हो ।

लियोनेटो—नहीं नहीं, ऐसा बहाना कोई नहीं करता। यह तो सच ही प्रतीत होता है।

पीडरो—अच्छा, उसका प्रेम आपको किस प्रकार जान पड़ा ?

क्लौडियो—हाँ यह तो बताओ—

लियोनेटो—मेरी लड़की ने यह कहा था क्या आपने नहीं सुना !

क्लौडियस—हाँ वे तो मुझसे भी कहती थी !

पीडरो—मुझे बड़ा आश्चर्य होता है मैं तो यही समझता था कि बीटरिस का हृदय कभी इस योग्य नहीं है जिसमें किसी का प्रेम समा सके !

लियोनेटो—हाँ, और विशेष कर बैनीडिक का जिसको वह साफ साफ गालियाँ देती है।

बैनीडिक इस बात को सुन कर मनमें कहने लगा कि इसमें कुछ कपट छल मालूम होता है परन्तु एक बातसे छल प्रकट नहीं होता क्योंकि यदि कोई छल होता तो सफेद डाढी वाला वृद्ध लियोनेटो इसमें सम्मिलित न होता।

पीडरो ने फिर पूछा—

"क्या बीटरिस ने अपने प्रेम की कथा बैनीडिक को सुना दी है?" २

लियोनेटो—नहीं नहीं। वह कहती है कि मैं कभी यह बात प्रकट न करूँगी।

क्लौडियस—आपकी पुत्री ने भी यही कहा था। बीटरिस कहती है कि मैं सब के सामने उसकी हँसी कर चुकी हूँ।

इसलिए अब किस मुँह से कहूँ कि मैं तुमको प्यार करती हूँ।

लियोनेटो—यह कहती ही कहती है। मुझे निश्चय है कि वह बीस बार रात में सोते से उठेगी और सफे के सफे लिख डालेगी। प्रेम बड़ा प्रबल है।

क्लौडियस—हाँ! हाँ! मैं आप को बताता हूँ। आपकी लड़की कहती थी। बीटरिस ने एक पत्र लिखा।

लियोनेटो—फिर क्या?

क्लौडियस—जब देने का समय आया तो अपने निलर्जपन पर लज्जित होगई और फाड़ डाला। कहने लगी, "मुझे विश्वास है कि बैनीडिक सुनते ही मुझसे हँसी करने लगेगा।"

फिर वह कहने लगी—

"बैनीडिक! बेनीडिक! दया करो।"

लियोनेटो—मेरी लड़की ने तो बहुत सी बातें बनाई हैं। वह कहती है कि अगर बेनीडिक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की तो वह आत्मघात कर लेगी!

पीडरो—फिर यह अच्छा होगा कि बैनीडिक से हमी लोग इस बात को कहदें।

क्लौडियस—कहने से प्रयोजन? बैनीडिक ऐसा कठोर है कि बिचारी रमणी को ख़ूब ही कष्ट देगा।

पीडरो—यह बैनीडिक की दुष्टता है। क्योंकि वह बड़ी अच्छी स्त्री है। और उसका चालचलन भी निस्सन्देह है।

क्लौडियस—और वह बुद्धिमती भी है।

पीडरो—सिवा इस बात के कि वह बैनीडिक को चाहती है और सब बातों से उसकी बुद्धिमता प्रतीत होती है।

लियोनेटो—जब बुद्धि और प्रेम में लड़ाई होती है तब प्रेम ही की जय होती है। मुझे बीट्रिस के लिए शोक है। क्योंकि वह मेरी भतीजी है और मैं उसका संरक्षक हूँ।

पीडरो—जो वह मुझसे इतना हित प्रकट करती तो मैं अवश्य उसे अपनी अर्धाङ्गिनी बना लेता। मेरी तो यही राय है कि बैनीडिक को इस बात की सूचना दे दी जाय। देखें वह क्या कहता है?

लियोनेटो—क्या इससे कुछ लाभ होगा?

क्लौडियस—हीरो तो यही कहती है कि वह मर जायगी और कभी बेनीडिक से न कहेगी। क्योंकि हँसी कराने से मर जाना अच्छा है।

पीडरो—हाँ उसका विचार ठीक है क्योंकि अगर उसने अपने प्रेम का प्रकाश किया तो बैनीडिक अवश्य उससे घृणा करेगा। क्योंकि वह बड़ा दुष्ट है।

क्लौडियस—आदमी तो भला है!

पीडरो—बाहर से तो भला ही जान पड़ता है।

क्लौडियस—मैं तो उसे बुद्धिमान् समझता हूँ।

पीडरो—बात तो अच्छी कहता है।

क्लौडियस—बहादुर भी है।

पीडरो—झगड़ा भी नहीं करता। परन्तु लियोनेटो! मुझे तुम्हारी भतीजी के लिए शोक है। चलो बैनीडिक के पास चलें और उसे इस बात से सूचित करदें।

क्लौडियस—नहीं नहीं! महाराज! इस समय न कहिए।

पीडरो—अच्छा जाने दो! हीरो से सब बातें मालूम हो जायँगी! बैनीडिक मेरा मित्र है। मैं चाहता हूँ कि

वह यह बात जान ले कि वह इस युवती के योग्य नहीं है।

ये बातें करके वे लोग बाग से भोजनशाला की ओर चले गये। बैनीडिक कुंज से निकला और अपने मनमें सोचने लगा :—

"यह बात हँसी की नहीं है। क्योंकि वे बड़ी गम्भीरता से बात चीत कर रहे थे। उन्होंने यह सब हीरो से सुना होगा। उनको बीटरिस पर तरस आता है। इससे जान पड़ता है कि उसकी अवस्था शोचनीय हो गई है। ये लोग मुझे बुरा भला कहते है और समझते हैं कि अगर मुझे बीटरिस के प्रेम का पता चल गया तो मैं उसकी हँसी करूँगा। इनका यह भी खयाल है कि बीटरिस बिना प्रेम का प्रकाश किये ही मर जायगी। वे कहते हैं कि स्त्री तो रूपवती है। इसको मैं भी मानता हूँ। बुद्धिमती भी है। सदाचारिणी भी है। ये लोग कहते हैं कि मुझसे प्रेम करना उसकी मूर्खता है। पर मैं तो इसको मूर्खता नहीं कहता। अगर वह मुझसे प्रेम करती है तो क्या मैं उससे न करूँगा। मुझे कभी विवाह करने की इच्छा नहीं थी और मैं विवाह का बड़ा विरोधी था। पर क्या इच्छाओं में परिवर्तन नहीं होता? जो खाना मनुष्य को जवानी में अच्छा लगता है वह बुढ़ापे में नहीं भाता। जब मैंने कहा था कि मैं क्वारा ही मर जाऊँगा तब मुझे यह क्या मालूम था कि मेरा विवाह हो जायगा।"

जब बैनीडिक महाशय विचार कर रहे थे तब वहाँ पर बीटरिस भी आ गई और कहने लगी :—

"अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं आपको भोजन का निमन्त्रण देने आई हूँ।"

बैनीडिक—सुन्दरी, मैं आपका अनुगृहीत हूँ। आपने बड़ा कष्ट किया।

बीटरिस—इस धन्यवाद के लिए मैंने इतना ही कष्ट किया है जितना आपने धन्यवाद देने में। अगर मुझे कष्ट होता तो मैं न आती।

बैनीडिक—तो यहाँ आने में आपको हर्ष हुआ है?

बीटरिस—हाँ, उतना ही हर्ष हुआ जितना आपको भोजन खाने में होगा।

बैनीडिक को अभी से यह खयाल होने लगा कि जो कुछ पीडरो और क्लौडियस ने कहा वह सब ठीक है। उसे बीटरिस के मुँह पर प्रेम के चिह्न दिखाई देने लगे क्योंकि जो कुछ मनुष्य के मन में होता है उसी के अनुकूल बाहर भी दिखाई देता है। अब उसने कहा कि "मैं अवश्य बीटरिस को प्यार करूँगा, अभी जाकर उसकी तसवीर लिये आता हूँ।"

बैनीडिक को जाल में फँसाने के बाद अब इन लोगों ने बीटरिस के फाँसने का यत्न किया और हीरो ने अपनी दो सहेलियों मारगरेट और अर्सला को साथ लेकर वही काम करना आरम्भ किया जो क्लोडियो आदि ने किया था। जिस समय बीटरिस पीडरो और क्लोडियो से बातें कर रही थी उस समय मारगरेट ने जाकर उससे कहा :—

"श्रीमती जी! हीरो और अर्सला आपके विषय में चुपचाप कुछ बात कर रही हैं। अगर तुम चाहो तो बाग की कुंज में जाकर इस को सुन सकती हो।"

यह वही कुंज थी जहाँ बैनीडिक पहले दिन बैठा पुस्तकावलोकन कर रहा था।

जब हीरो को मालूम होगया कि बीटरिस आ गई तब वह अर्सला से यों कहने लगी :—

"अर्सला ! मैं जानती हूँ कि वह एक दुष्टा स्त्री है। वह कभी किसी का ख़याल नहीं करती।"

अर्सला—फिर क्या आपका दृढ़ विश्वास है कि बैनीडिक बीटरिस को चाहता है ?

हीरो—पीडरो और मेरे स्वामी दोनों कहते थे।

अर्सला—क्या उन्होंने आपको इसकी सूचना देने के लिए कहा है ?

हीरो—उन्होंने तो मुझसे यही प्रार्थना की थी कि मैं बीटरिस को इस बात से सूचित कर दूँ। परन्तु मैंने उनसे कह दिया है कि अगर आप बैनीडिक का भला चाहते हैं तो कभी बीटरिस को इसका पता भी न लगना चाहिए।

अर्सला—क्यों ? आपने ऐसा क्यों कहा ? क्या आपके ख़याल में बैनीडिक बीटरिस के योग्य नहीं है ?

हीरो—हे ईश्वर ! बैनीडिक ऐसा ही योग्य है जैसा एक आदमी का होना सम्भव है। बीटरिस बड़ी कठोर स्त्री है। उसकी आँखों से घृणा बरसती है। वह अपनी बुद्धि के आगे किसी को नहीं समझती। उसे किसी का प्रेम नहीं है।

अर्सला—मेरा भी यही विचार है, कि उससे यह बात नहीं कहनी चाहिए। नहीं तो वह व्यर्थ बैनीडिक को चिढ़ाया करेगी।

हीरो— तुम सच कहती हो। चाहे कितना ही बुद्धिमान्, रूपवान् या योग्य पुरुष क्यों न हो, बीटरिस उसकी

हँसी ही उड़ाया करती है। यदि कोई सुन्दर मनुष्य हो तो कहती है कि यह मेरी बहन सी मालूम होती है। अगर काला हो तो कहती है, कि ईश्वर ने धब्बा डाल दिया। यदि लम्बा हो तो कहती है कि बरछी के समान लम्बा है। यदि छोटा हो तो कहती है कि बौना है। यदि बातून हो तो कहती है कि बक्की है। यदि शान्त हो तो कहती है कि गूँगा है। इस प्रकार हर एक मनुष्य के दोष निकाल देती है और उनके गुणों को छोड़ देती है।

अर्सेला—ठीक है, ठीक है। उसमें यह बड़ा दोष है।

हीरो—पर उससे कहे कौन? मैं कहूँ तो मुझसे लड़ पड़ेगी, मुझको हँसी करेगी। इसलिए बैनीडिक को राख में दबी हुई आग के समान सुलगने दो।

अर्सेला—अच्छा कह तो देना चाहिए। देखें वह क्या कहती है?

हीरो—नहीं नहीं, इससे तो यह अच्छा है कि मैं बैनीडिक के पास जाऊँ और उससे कह दूँ कि तुम उससे प्रेम न करो। मैं अवश्य कोई ऐसा उपाय सोचूँगी जिससे उसका प्रेम छूट जाय। मैं अपनी बहन में कुछ झूठ-मूठ दोष लगा दूँगी। क्योंकि दोषों के मालूम होने से स्नेह दूर हो जाता है।

अर्सेला—नहीं! नहीं! ऐसा मत कीजिए, नहीं तो आपकी बहन बदनाम हो जायेंगी। ऐसी मूर्ख भी नहीं है। जब सोचेगी तब बैनीडिक जैसे योग्य पुरुष का तिरस्कार न करेगी।

हीरो—मेरे प्यारे क्लौडियो को छोड़ कर वह इटली भर में सब से योग्य पुरुष है।

अर्सला—श्रीमतीजी। मुझे क्षमा कीजिए। मैं तो समझती हूँ कि बैनीडिक सब से योग्य पुरुष है।

हीरो—हाँ वह बहुत प्रसिद्ध पुरुष है।

अर्सला—यह सब उसकी योग्यता का फल है। श्रीमतीजी! आप के विवाह में कितने दिन रहे हैं?

हीरो—कल होगा, चलो वस्त्र तैय्यार करो।

यह कहती हुई हीरो तो सहचरी सहित चली गई। बीटरिस, जो कान लगाये इन दोनों की बाते सुन रही थी, अपने मनम कहने लगी कि "अगर यह बात सच है तो मै अवश्य बैनीडिक से प्यार करने लगूँगी। जब वह इस प्रकार मुझे चाहता है तो मुझे कठोर नही बनना चाहिए।"

इन दोनों शत्रुओं का इस प्रकार आपस में मिल जाना बडा ही उत्तम दृश्य था। परन्तु अब हीरो को आकस्मिक विपत्ति का हाल सुनना चाहिए। क्योंकि दूसरे दिन जब कि हीरो का विवाह होने वाला था एक बडी दुर्घटना होगई जिसके कारण हीरो और उसके योग्य पिता लियोनेटो को बडा कष्ट हुआ।

विवाह के एक दिन पहले डौन जौन ने, जो जौन पीडरो का भाई था और जो उसके साथ युद्ध से लौट कर आया था, पीडरो के पास आकर कहा—

"यदि आपको अवकाश हो तो मै कुछ कहना चाहता हूँ।"

पीडरो—क्या एकान्त में?

जौन—हाँ, क्लौडियस को साथ ले लीजिए। क्योंकि इस बात से इनका सम्बन्ध है।

पीडरो—क्या बात है?

जौन (क्लौडियस से)—क्या आप का विवाह कल होगा?

पीडरो—हाँ, तुम को तो मालूम है ।

जौन—मैं नहीं कह सकता कि जो बात मुझे मालूम है वह इन को भी मालूम है या नहीं ?

क्लौडियस—यदि कोई विघ्न हो तो बताओ !

जौन—शायद आप ख़याल करेंगे कि आप की मेरी शत्रुता है ! मेरे भाई को आप से प्रेम है और इन्हीं ने इस विवाह का प्रस्ताव किया था परन्तु वधू अयोग्य है ।

पीडरो—कहो, बात क्या है ?

जौन—स्त्री सती नहीं है ।

क्लाडियस—कौन ? क्या हीरो ?

जौन—हाँ वही । लियोनेटो की हीरो ! तुम्हारी हीरो ! सब जगत की हीरो !

क्लौडियस—असती !

जौन—हाँ, असती । यह तो नम्र से नम्र शब्द है । वह तो इससे भी बुरी है । आप सोच न कीजिए । आज आधी रात के समय मेरे साथ चलिए और जो कुछ मैं दिखलाऊँ वह देख आइए । फिर अगर हीरो पर आपका प्रेम हो तो अवश्य विवाह कर लीजिए । परन्तु आपको योग्य तो यही है कि उसका त्याग दीजिए ।

क्लौडियो—क्या यह बात है ?

पीडरो—मुझे तो यक़ीन नहीं आता ।

जौन—अगर आप उस बातको जानना नहीं चाहते जिस को मै दिखलाना चाहता हूँ, तो जाने दीजिए । पर अगर आप मेरे साथ चलेंगे तो दिखला दूँगा ।

क्लौडियस—अगर आज रात को मैं कुछ बात देख लूँ तो फिर

कल विवाह न करूँगा। बल्कि कल समस्त सभा में इसे बदनाम करूँगा।

पीडरो—यदि मुझे विश्वास हो गया कि हीरो असती है तो मैं भी कल इसको बदनाम करने में तुम्हारा साथ दूँगा।

सच बात यह है कि हीरो असती नहीं थी किन्तु जौन एक दुष्ट आदमी था। वह पीडरो और क्लाडियस से शत्रुता रखता था। इसके अतिरिक्त उस में स्वाभाविक नीचता भी थी। उसे यह बात पसन्द न आई कि क्लोडियस का विवाह ऐसी योग्य स्त्री के साथ हो जाय। इसलिए उसने पीडरो और उसके मित्र को कष्ट देने के लिए हीरो को बदनाम करने की ठान ली और उस कार्य्य को पूरा करने के लिए बोकियो नामी एक दुष्ट आदमी को कुछ रुपया देने का वादा करके कहा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिस से यह विवाह न हो सके। बोकियो ने उत्तर दिया कि मैं अवश्य इस काम को कर सकता हूँ।"

जौन—किस प्रकार?

बोकियो—मैं ने आप से कहा था कि हीरो की सहेली मारगरेट मुझसे प्रेम करती है।

जौन—हाँ! मुझे याद है।

बोकियो—मैं उस से कहदूँगा कि रात्रि के समय वह हीरो की खिड़की से हो कर मुझ से बात चीत करले। मारगरेट अवश्य मुझ से बात करने आवेगी। और हीरो के वस्त्र भी धारण कर सकती है, यदि मैं उस से कहदूँ।

जौन—हाँ यह तो अच्छा उपाय है।

बोकियो—परन्तु आप को कोशिश चाहिए। आप उसी समय क्लोडियस को लेकर दूर से दिखला दीजिए कि हीरो किसी अन्य पुरुष से रात के समय बातें कर रही है।

क्लौडियस इसके असतीत्व को देख कर अपना मन फेर लेगा। कहो कैसी कही।

जौन—बहुत अच्छी! बहुत अच्छी! हर्रा लगे न फिटकरी, रंग आवे चोखा! पर देखो अपनी बात से मत हटजाना, नहीं तो मुझे बड़ी लज्जा उठानी पड़ेगी।

इस प्रकार जब जौन, क्लौडियस और पीड़रो का साथ लेकर हीरो के मकान की ओर आया तो हीरो की सहेली मारगरेट अपनी स्वामिनी के वस्त्र पहने हुए खिड़की में होकर बोराकियो से बातें कर रही थी।

क्लौडियस को यह चाल मालूम न थी। उसे विश्वास हो गया कि यह हीरो ही है। इसलिए यह देखकर उसको बड़ा क्रोध आया और जितना प्रेम वह हीरो से करता था उतनी ही उस से घृणा करने लगा। अब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि दूसरे दिन धर्ममन्दिर में जाकर हीरो की कलई खोलूँगा। राजा पीड़रो ने भी यह बात स्वीकार करली। क्योंकि उसे यह बहुत बुरा मालूम हुआ। निस्सन्देह किसी स्त्री का इससे अधिक दोष नहीं हो सकता कि विवाह की रात को अपनी खिड़की में होकर वह एक अजनबी आदमी से बातें करती पकड़ी जाय।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब विवाहसंस्कार का समय आया और सब लोग धर्ममन्दिर में एकत्रित हुए, उस समय क्लौडियस ने बड़े ज़ोर से क्रोध में आकर हीरो के दोष वर्णन करना शुरू किया। निर्दोष हीरो खड़ी खड़ी सुन रही थी और कहती थी—"क्या मेरे स्वामी का स्वास्थ्य अच्छा है? आप इतना क्रुद्ध क्यों होते हैं?"

क्लौडियस ने पीड़रो से कहा—

"आप क्यों चुप खड़े हैं आप भी साफ साफ कहिए।"

पीडरो—मैं क्या कहूँ। मुझे तो लज्जा आती है, कि ऐसे योग्य मित्र का विवाह एक अपवित्र स्त्री से कराने में मैंने सहायता दी।

लियोनेटा—अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ। या वास्तव में यह बाते हो रही हैं?

जौन—अजी यह सब सत्य है।

बैनीडिक—यह तो विवाह सा नहीं मालूम होता।

हीरो—सच? हाय परमात्मा!

क्लाडियस—लियोनेटो! देखो यह मैं खड़ा हूँ। यह राजा हैं। यह उनके भाई हैं। और यह हीरो का मुँह है।

लियोनेटो—यह तो सब कुछ है, फिर क्या?

क्लोडियस—मैं आपकी लड़की से एक बात पूछता हूँ। आप इसका ठीक ठीक उत्तर इससे दिला दीजिये।

लियोनेटा—बेटी! सच सच कह दो।

हीरो—ईश्वर मेरी रक्षा करे! किस प्रकार का प्रश्न है?

क्लाडियस—अपने नाम को धब्बे से बचाओ!

हीरो—मेरे नाम पर कौन धब्बा लगा सकता है?

क्लोडियस—हीरो ही हीरो के नाम पर धब्बा लगा सकती है। वह कौन आदमी था जिस से तुम कल रात बारह और एक बजे के भीतर खिड़की में हो कर बातें कर रही थी? अगर तुम सती हो तो ठीक ठीक बताओ!

हीरो—उस समय मैं किसीसे बात नहीं करती थी।

पीडरो—फिर तो तुम सती नहीं हो। लियोनेटो, सुनो! मैंने, मेरे भाई ने, और इस मेरे दुखिया मित्र ने इसको एक आदमी के साथ बातें करते देखा और सुना, और उस

हुए ने निर्लज्ज होकर साफ साफ कह दिया कि सहस्रों बार हमसे बात चीत हुई है।

डौन—धिक्! धिक्! धिक्! महाशय! रहने दीजिए! ये बातें कहने योग्य नहीं है। हीरो! मुझे आपके इस असतीत्व पर शोक है।

हीरो को इन बातों के सुनने से इतना दु ख हुआ कि वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी और सबने यही जाना कि हीरो मर गई। पीडरो और क्लाडियस दोनों धर्ममन्दिर से चले गये और उन्होंने यह भी न देखा कि हीरो और उसके पिता लियोनेटो को कितना दुःख है। क्योंकि क्रोध के मारे उनका हृदय पाषाण से भी कठोर हो गया था।

बैनेडिक वहीं रह गया था। उसने बीटरिस की सहायता से हीरो को मूर्छा से जगाया। बीटरिस को अपनी बहन की इस आपदा पर बड़ा दु ख हुआ, क्योंकि उसको भली प्रकार ज्ञान था कि हीरो बड़ी सदाचारिणी स्त्री है। उसको इस दोषारोपण पर बिलकुल ही विश्वास नहीं आया। वह अपने मनमें कहने लगी कि लोग झूठ बोलते हैं।

परन्तु हीरो का बाप लियोनेटो सन्दिग्ध-आत्मा का पुरुष था। वह डोन जौन जैसे सज्जन की साक्षी को झूठा नहीं मान सका। जिस समय हीरो मूर्छित पड़ी हुई थी वह लज्जा के मारे चिल्लाने लगा। वह कहने लगा—' मौत! मौत! आज मेरी लाज रख ले। हे हीरो, तू अब आँखें मत खोलना। क्योंकि ऐसा लज्जा का काम करके मर जाना ही उचित है।"

जब बीटरिस के परिश्रम से हीरो ने कुछ आँखें खोली तो लियोनेटो ने फिर कहा—

"हाय! यह तो जीवित है। अरी क्यों उठती है? धिक्,

धिक्! समस्त संसार धिक् धिक् कर रहा है। भला यह इस बात का कैसे निषेध कर सकती है। हीरो आँखें मत खोल! हीरो, अब तेरा जीवन व्यर्थ है। जो मैं जानता कि तू इस लज्जा के होने पर भी जीवित रहेगी तो तुझे चुपके चुपके मार डालता! मैंने कभी इस बात पर रंज नहीं किया कि ईश्वर ने मुझे केवल एक ही लड़की दी। हाय! तू मेरे क्यों पैदा हुई? और मैंने तुझे स्नेह से क्यों पाला? अगर मैं किसी फकीर का लड़की को गोद ले लेता और वह आज ऐसी निर्लज्ज हो जाती तो मैं यह कह सकता था कि यह मेरे वंश की नहीं है। परन्तु क्या किया जाय। मैं अपनी लड़की के ऊपर अभिमान करता था। मैं अपनी लड़की की प्रशंसा किया करता था। हाय! आज वह डूब गई। स्याही के गड्ढे में डूब गई। उसके माथे पर कलंक का टीका लग गया, जिसके धोने के लिए सात समुद्रों का पानी भी काफी नहीं है।

बैनीडिक—श्रीमन! सन्तोष कीजिए। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ है कि कुछ कह ही नहीं सकता।

बीटरिस—अपने जीवन की सौगन्ध, मेरी बहन को झूठा दोष लगाया गया है।

बैनीडिक—क्या कल तुम हीरो के साथ सोई थी?

बीटरिस—नहीं नहीं। कल तो नहीं। लेकिन साल भर से रोज साथ सोती रही हूँ।

लियोनेटो—ठीक! ठीक! क्या दो राजे झूठ बोलेंगे। क्या क्लौडियस झूठ बोल सकता है? वह तो इसे प्राणों से भी अधिक चाहता था! इसको यहाँ से ले जाओ। और मर जाने दो।

पुरोहित, जो अब तक चुपका खड़ा यह भयानक दृश्य देख

रहा था, एक बुद्धिमान् मनुष्य था। उसने बहुत से आदमियों की आँखें देखी थीं, वह सच और झूठ की पहचान कर सकता था। वह कहने लगा—

"कुछ मेरी भी सुना। मैं बड़ी देर से चुपका खड़ा हूँ और हीरो के मुँह की ओर ताक रहा हूँ। मैंने देखा है कि पहले तो लज्जा के मारे इसका मुँह लाल हो गया, परन्तु फिर थोड़ी देर में वह सब लाली जाती रही, जिससे प्रकट होता है कि यह लड़की निर्दोष है। इसकी आँखों में एक प्रकार की चमक है, जो अपराधियों की आँखों म नहीं होती। मुझे तो यही जान पड़ता है कि कुछ धोखा हो गया है। अगर ऐसा न हो तो कह देना कि मैंने धूप में बाल श्वेत किये हैं।"

लियोनटो—पुरोहित जी! यह नहीं हो सकता। भला झूठ बोल कर एक अपराध की जगह दो अपराध करना कौन सी अच्छी बात है।

पुरोहित—देवि! वह कौन मनुष्य है जिसके साथ रहने का तुम पर दोष लगाया गया है?

हीरो—यह तो वेही जान सकते हैं जो दोष लगाते हैं। मुझे क्या मालूम? अगर मैंने किसी पुरुष के दर्शन भी किये हों तो ईश्वर मुझ पर दया न करे। पिताजी! अगर आपको सिद्ध हो जाय कि कल रात को मैं किसी पुरुष से बात करती थी तो कुत्तों की मौत मार डालना!

पुरोहित—इन राजों का स्वभाव कैसा है?

बैनीडिक—दो तो बड़े धर्मात्मा हैं। तीसरा जौन, जो जारज है, दुष्ट है और दुष्टतायें किया करता है।

लियोनेटो—मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अगर वह सच कहते हैं तो इन्हीं हाथों से मैं इसके टुकड़े टुकड़े किये

डरता हूँ। यदि उनका कहना झूठ है तो अभी मेरी भुजाओं में बल है, मैं उनको इसका मजा चखा दूँगा।

पुरोहित—अच्छा मेरी बात मान लीजिये। वे सब देख गये हैं कि हीरो मर गई। अब यही प्रसिद्ध कर दो और समाधि बनवा दो।

लियोनेटो—इससे क्या होगा?

पुरोहित—इससे यह होगा कि जो क्रोध करते हैं वे नरम खायँगे। इससे कुछ लाभ होगा। लोग शोक मनावेंगे और अपने किये पर पछतायँगे। जब क्लौडियो सुनेगा कि हीरा मर गई तो उसका क्रोध शान्त हो जायगा और उसे अपनी प्यारी की फिर याद आवेगी। इससे बहुत बड़ा लाभ होगा। परन्तु यदि मेरा यह सब कथन मिथ्या हुआ तो कम से कम एक बात तो हो ही जायगी, अर्थात् हीरो बदनामी से बच जायगी। अगर तुम चाहो तो उसको किसी मन्दिर में रहने दो।

बैनीडिक के समझाने से लियोनेटो ने यह बात मानली और हीरो को छिपा लिया। वह कहने लगा—

"डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत है।"

अब बीटरिस और बैनीडिक वहाँ रह गये। बैनीडिक ने कहा—

"प्यारी बीटरिस! क्या तुम उस समय से रोती ही हो?"

बीटरिस—अभी तो और रोऊँगी।

बैनीडिक—मैं समझता हूँ कि तुम्हारी बहन पर झूठा दोष लगाया गया है।

बीटरिस—मैं उस पुरुष को कितना चाहूँगी जो इसको झूठा सिद्ध कर दे।

बैनीडिक—क्या ऐसा करने के लिए कोई उपाय है ? मैं तुमको सब से अधिक चाहता हूँ।

बीटरिस—मैं भी कहती हूँ कि तुम से ज्यादा और कोई मुझे प्यारा नहीं है। चाहे विश्वास न करो, मैं झूठ नहीं बोलती। मुझे अपनी बहन का बड़ा दुःख है।

बैनीडिक—तलवार की सौगन्ध ! तुम मुझे बड़ी प्यारी हो। जो कहो सो कर सकता हूँ।

बीटरिस—क्लौडियो के प्राण ले लो।

बैनीडिक का क्लौडियो बड़ा मित्र था, इसलिए उसने उत्तर दिया—

"कदापि नहीं। कदापि नहीं।"

बीटरिस—क्या क्लौडियो दुष्ट नहीं है जिसने मेरी बहन को बदनाम किया ? आज मैं मर्द होती तो क्या कुछ न करती।

बैनीडिक—बीटरिस, सुनो, सुनो !

परन्तु बीटरिस ने एक न सुनी और यही कहती रही —

"क्लौडियो दुष्ट है। बिचारी निर्दोष और सुशील श्री हीरो को दोष लगाता है। उसका अपमान करता है। हे ईश्वर ! तू आज मुझे पुरुष बना दे कि मैं क्लौडियो से इसका बदला ले लूँ। या किसी ऐसे मित्र को भेज दे जो मेरे हित के लिये यह काम करे। क्योंकि आज कल वीरों की वीरता सभ्यता के मारे नष्ट हो गई है और वे दुष्टों को दण्ड देना नहीं चाहते। अच्छा, मैं अगर पुरुष नहीं हो सकती तो दुःख के मारे मर सकती हूँ।"

बैनीडिक—इस हाथ की सौगन्ध, तुम मुझे प्यारी हो।

बीटरिस—तो इसी हाथ से मेरी सहायता करो।

बैनीडिक—क्या तुमको निश्चय है कि यह क्लौडियो का दोष है?

बीटरिस—हाँ!

बैनीडिक—अच्छा लो, जाता हूँ। आज वह अपने कियेका फल पावेगा!

इधर तो बीटरिस के कहने से बैनीडिक ने क्लौडियो को युद्ध करने के लिये बुलाया, उधर वृद्ध लियोनेटो ने भी पीडरो और क्लौडियो दोनो से युद्ध की इच्छा की*। क्लाडियो ने लियोनेटो को तो वृद्ध पुरुष समझ कर टाल दिया, परन्तु वह बैनीडिक से युद्ध करने पर राजी हो गया और यदि ईश्वर की सहायता न आ जाती तो अवश्य एक न एक मारा जाता!

जब यहाँ युद्ध की तैयारियाँ हो रही थी उसी समय एक मजिस्ट्रेट बोरेकियो को पकड़े हुए लाया। उसने बोरेकियो को किसी अन्य मनुष्य से वे सब बातें कहते सुना था जो उसके और डोन जौन के बीच में हुई थीं और जिनके कारण हीरो और उसके सम्बन्धियों की यह गति हुई।

बोरेकियो ने क्लौडियो के सामने पीडरो से वर्णन किया कि रात के समय जो स्त्री खिड़की में उससे बातें कर रही थी वह हीरो की सहचरी मार्गरेट थी जो हीरो के कपड़े पहने हुए थी। अब तो हीरो के विषय में क्लौडियो और पीडरो को कुछ भी शङ्का नहीं रही। यदि कुछ रही होगी तो वह इस वजह से दूर हो गई कि बोरेकियो के पकड़े जाने की खबर सुनते ही डौन जौन वहाँ से भाग गया, जिससे सब लोग जान गये कि जौन का इस दुष्टता में अवश्य कुछ मेल है।

---

*यूरोप में पहले यह नियम था कि यदि किसी बात में दो पुरुषों को सन्देह होता था तो उसका लड़ के निश्चय कर लेते थे, जो जीतता था उसीकी बात सच्ची समझी जाती थी।

जब क्लॉडियो को मालूम हुआ कि मैंने अपनी प्यारी के अकारण प्राण ले लिये तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह हीरो की याद करके चिल्लाने लगा। वह कहने लगा कि जब मैं बोकियो की बातें सुन रहा था तो मेरे शरीर में विष जैसा फैलता आता था।

अब क्लौडियो ने लियोनेटो के पैरों पर सिर रख कर क्षमा चाही और कहा कि आप जो कुछ दण्ड मुझे देना चाहें उसे सहन करने के लिए मैं तैयार हूँ। क्योंकि मैंने अपनी प्यारी पर दोषारोपण करके बड़ा भारी अपराध किया है।

लियोनेटो ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित्त बतलाता हूँ, उसे करना स्वीकार करो। हीरो की एक चचेरी बहन और है, जो रूप में बिलकुल हीरो के समान है। उससे तुम विवाह कर लो। क्लॉडियो ने कहा कि "मैं तैयार हूँ, चाहे वह काली कलूटी ही क्यों न हो।"

परन्तु उसको उस रात बड़ा रंज रहा और वह रात भर हीरो की कल्पित समाधि के पास जाकर रोता रहा!

दूसरे दिन प्रातःकाल क्लौडियो अपने इष्ट मित्रों सहित विवाह के लिए धर्ममन्दिर में गया और लियोनेटो ने एक लड़की को लाकर, जिसके मुँह पर घूँघट पड़ा हुआ था, कहा—"लो यह लड़की हीरो की चचेरी बहन है।"

क्लौडियो ने बिना देखे हुए उस लड़की का हाथ पकड़ कर कहा—"अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपनी स्त्री बनाना अङ्गीकार करता हूँ।"

लड़की ने घूँघट उतार कर कहा—"मैं तो जीवन भर तुम्हारी ही स्त्री थी।"

अब तो सब ने पहचान लिया कि यह लड़की जिसका क्लौडियो से विवाह होने वाला था, हीरो की चचेरी बहन नहीं, किन्तु हीरो ही थी। क्लौडियो खुशी के मारे फूला न समाया और पीडरो ने कहा—

"अरे यह क्या हीरो नहीं है? वही हीरो जो मर गई थी।"

लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"हीरो तो उसी समय तक मरी थी जब तक उसका अपयश जीवित था।"

पुरोहित ने कहा कि विवाहसंस्कार के बाद हम आपको ये सब बातें समझा देंगे, और सरकार की कार्य्यवाही आरम्भ की। परन्तु उसी समय बैनीडिक और बीटरिस दोनों ने अपने विवाह की इच्छा प्रकट की। लियोनेटो, क्लौडियो आदि ने उनको अब बतला दिया कि किस प्रकार धोका देकर बैनीडिक और बीटरिस का आपस में स्नेह कराया गया था। उस समय उनको ज्ञात हुआ कि एक दूसरे के प्रेम की कथा केवल जी के लुभाने के लिए थी। परन्तु अब वे दोनों विवाह का इरादा कर चुके थे। इसलिए इस सम्बन्ध पर अप्रसन्न न हुए और क्लौडियो का हीरो से तथा बैनीडिक का बीटरिस से विवाह कर दिया गया।

इसी समय एक दूत ने आकर खबर दी कि दुष्ट डौन जौन मैसीना से भागते हुए पकड़ा गया। इसका सबसे उचित दण्ड यही समझा गया कि वह विवाह के आनन्दों को देखकर डाह की अग्नि में भस्म हो।



वही भला जिसका अन्त भला

ALL'S WELL THAT ENDS WELL)

रोसिलन देश में एक राजा था जिसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र बतराम उसकी गद्दी पर बैठा। फ्रान्स के महाराज को बतराम के पिता से बड़ा स्नेह था। इसलिए जब उसने इस मृत्यु की खबर पाई तो उसी समय बतराम को पेरिस की राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दी जिससे वह अपने प्रिय मित्र के पुत्र के साथ दया का व्यवहार करके उसको उत्साहित कर सके।

बतराम अपनी विधवा माता के साथ रोसिलन में था, जब कि फ्रान्स की राजसभा से लेफू नामक एक सभ्य उसे महाराज के पास ले चलने के लिए आया। फ्रान्स में उस समय राजतन्त्र राज्य था और सभा का निमन्त्रण आज्ञा के रूप में था, जिसका उल्लङ्घन करना किसी मनुष्य के अधिकार में न था, चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो। इसलिए यद्यपि बतराम की माता को अपने पुत्र के वियोग से बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह अभी विधवा हुई थीं, परन्तु राजनिमन्त्रण को अस्वीकार करना उसकी शक्ति के बाहर था। इसलिए लेफू के आते ही उसने लड़के के भेजने की तैयारियाँ कर दीं। लफू ने रानी को बहुत ढारस बँधाया और कहा कि फ्रान्स नरेश बड़े दयालु हैं, वे आपके साथ पतिवत् व्यवहार करेंगे और आपके पुत्र के साथ पितृवत्। लेफू ने यह भी कहा कि महाराज थोड़े

दिनों से बीमार हैं और वैद्यों ने कह दिया है कि रोग असाध्य है। रानी को महाराज के रोग की बात मालूम करके बड़ा खेद हुआ और उसने कहा—

"शोक है कि इस समय जिराई-डी-नार्बन जीवित नहीं है, नहीं तो वह अवश्य महाराज को नीरोग कर देता। क्योंकि वह एक बड़ा वैद्य था और भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा कर सकता था। अगर आज जिरार्ड जीवित होता तो महाराज के रोग की अवश्य मृत्यु हो जाती।"

लेफ़्—हाँ महारानी! महाराज के मुँह से भी मैंने उसकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। उन्होंने उसको बहुत याद किया था। अगर मौत की कोई दवा हो सकती तो जिरार्ड अवश्य आज जीवित होता!

रानी के पास एक लड़की थी, जिसका नाम हैलीना था। लेफ़् ने हैलीना की ओर देखकर पूछा "क्या यह जिराई-डी नार्बन की कन्या है?"

रानी—जी हाँ! यह अपने बाप की इकलौती बेटी है। इसका पिता मरते समय इसे मेरी देखरेख में छोड़ गया था। यह एक सुशील और सुशिक्षित लड़की है, और मुझे आशा है कि यह एक अच्छी स्त्री बनेगी। इसका बाप बड़ा योग्य पुरुष था और उसीके गुण और स्वभाव इसमें भी हैं।

हैलीना इस समय रो रही थी। इसलिए रानी ने उसे समझाया और कहा कि अपने मृत पिता के लिए इतना शोक करना उचित नहीं है।

अब बतराम अपनी माता के पास से चल दिया। रानी ने अपने पुत्र के वियोग के समय बड़ा अश्रुपात किया और बहुत

कुछ अशीस देकर लेफ़ू से प्रार्थना की कि "महाराज ! आप इसको उपदेश करते रहना, क्योंकि अभी यह अशिक्षित है और राजसभा के योग्य नहीं है।"

चलते समय ब्रतराम हैलीना से भी मिला और कहा कि ईश्वर तुमको ख़ुश रक्खे ! मेरी माता जी की सेवा किया करना और सर्वदा उसका मान करना।

हैलीना को छिपे छिपे बहुत दिनों से ब्रतराम से प्रेम था, जिस की इस राजकुमार को खबर तक न थी। इसलिए इस समय जो अश्रुपात वह कर रही थी वह अपने मृत पिता के लिए नहीं था, किन्तु ब्रतराम के लिए था, जिसका अब उससे वियोग हो रहा था। यद्यपि हैलीना अपने पिता पर बड़ी भक्ति करती थी, परन्तु इस समय उसे अपने मृत पिता का किञ्चित् भी ध्यान नहीं रहा था, किन्तु अपने प्यारे के वियोग में शोकातुर हो रही थी।

यद्यपि हैलीना बहुत दिनों से ब्रतराम के प्रेम मे आसक्त थी, परन्तु वह जानती थी कि ब्रतराम रोसिलन का राजा है और पेरिस के एक कुलीन तथा प्राचीन कुल में उत्पन्न हुआ है। उसके सब पूर्वज बड़े प्रतिष्ठित और माननीय पुरुष थे। परन्तु मैं एक साधारण वंश की लड़की हूँ। मेरा पिता कोई प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध पुरुष नहीं था। ऐसा ख़याल कर के वह समझती थी कि हम दोनों का किसी प्रकार का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है। इसलिए यद्यपि उसे विवाह की आशा न थी किन्तु वह अपने प्यारे की ओर प्रेम की दृष्टि से देखा करती, और कहा करती थी कि ब्रतराम मुझ से इतना ऊँचा है कि उससे स्नेह करना किसी ऊँचे चमकते हुए ग्रह से प्रेम करने के समान है, जिस की प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं है।

अतराम के वियोग से उसका हृदय बड़ा व्याकुल हुआ, क्योंकि यद्यपि उसे विवाह की आशा न भी हो, तथापि एक शान्ति उस के लिए बहुत काफी अर्थात् वह नित्य प्रति सोते जागते, चलते फिरते, अपने प्यारे के दर्शन कर सकती थी। वह बैठ जाती और उसके मनोहर मुँह की तसवीर अपने हृदयरूपी पट पर इस प्रकार खींच लेती कि उसकी एक एक रेखा उसकी स्मृति पर अङ्कित हो गई थी।

हैलीना के पिता जिरार्ड-डी नार्बन ने मरते समय अपनी बेटी के लिए सिवा थोड़ी सी ओषधियों के और कुछ नहीं छोड़ा था। ये ओषधियाँ उसने अपने आयु भर के परिश्रम से इकट्ठी की थीं और इनसे भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा हो सकती थी। इनमें से एक ओषधि उसी रोग की थी जिससे लेफू के कथनानुसार फ्रान्स-नरेश पीड़ित हो रहा था। जिस समय हैलीना ने महाराज के रोग की कथा सुनी, उस समय इस साधारण रमणी के हृदय में उत्साह उत्पन्न हो गया और उसने इरादा किया कि पेरिस जाकर राजा की चिकित्सा करनी चाहिए। यद्यपि हेलीना के पास बड़ी अच्छी अच्छी ओषधियाँ थीं, परन्तु एक बड़ा भय यह था कि जब बड़े बड़े वैद्यों ने राजा के रोग को असाध्य कह कर छोड़ दिया है तब राजा इस अशिक्षित लड़की की दवाओं पर कब विश्वास करेगा। लेकिन हैलीना को इन दवाओं पर अपने पिता से भी अधिक विश्वास था और वह समझती थी कि यदि इन ओषधियों से राजा अच्छा हो जाय तो मैं अपने प्यारे अतराम की भी हो सकूँगी।

अतराम के जाने के पश्चात् उसकी माता को एक नौकर द्वारा ज्ञात हुआ कि हैलीना चुपके चुपके एक कोने में बैठी हुई पेरिस

बातें कर रही थीं जिन से प्रकट होता था कि उस को राजा (ब्रन-रोम) से प्रेम है, और उसका निश्चय पेरिस को जाने का है। रानी ने नौकर से कह दिया कि हैलीना को बुला लाओ।

हैलीना—महारानी! क्या आज्ञा है?

रानी—हैलीना! तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी माता के समान हूँ।

हैलीना—आप मेरी पूज्य स्वामिनी हैं।

रानी—नहीं नहीं। माता! माता क्यों नहीं? जब मैंने 'माता' शब्द कहा तो तुमको इतना रंज हुआ मानों तुमने साँप देखा है। 'माता' शब्द में ऐसी कौन सी बात है जो तुम इतना चौंकती हो! मैं चाहती हूँ कि मैं तुम्हारी मा हूँ और उन्हीं के समान गिनती हूँ जिन्होंने मेरे उदर से जन्म लिया है। तुम मेरी लड़की हो।

हैलीना—मैं नहीं हूँ।

रानी—मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माता हूँ।

हैलीना—रानी! क्षमा कीजिए, रोसिलन का राजा मेरा भाई नहीं हो सकता। मैं एक साधारण स्त्री हूँ। वह प्रतिष्ठित पुरुष है। मेरा वंश नीच है। उसके पूर्वज प्रसिद्ध थे। वह मेरा स्वामी है। और मैं उसकी एक दासी हूँ और मरणपर्यन्त रहूँगी। वह मेरा भाई नहीं हो सकता!

रानी—और मैं तुम्हारी माता भी नहीं हो सकती?

हैलीना—रानी! तुम मेरी* माता हो। मेरी बड़ी अभिलाषा है कि तुम मेरी माता हो जाओ। लेकिन मेरा स्वामी मेरा भाई न हो। आप हम दोनों की मा हो जाओ, पर मैं उसकी बहिन न होऊँ।

---

*अँग्रेज़ी में सास को भी माता कहते हैं और बहू को बेटी।

रानी—हाँ हेलीना ! तुम मेरी बेटी या पतोहू हो सकती हो । ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे । तुम्हारा यही तात्पर्य जान पड़ता है । मै अब तुम्हारी बात समझ गई हूँ । अब मै जान गई कि तुम क्यों अश्रुपात कर रही हो। तुम मेरे बेटे को चाहती हो ! अब स्पष्ट कह दो कि क्या यह बात ठीक है ? देखो, तुम्हारे मुँह तथा आँखों से यही प्रकट होता है ।

हेलीना—महारानी ! क्षमा करो ।

रानी—क्या तुम मेरे बेटे को चाहती हो ?

हेलीना—क्या श्रीमती जी उनको नहीं चाहती ?

रानी—बात मत बनाओ । मैं चाहती हूँ । परन्तु मेरा चाहना और बात है । ठीक ठीक कहो, क्या तुम उसे चाहती हो ?

हेलीना—तो महारानी ! मैं ईश्वर और आप दोनों की साक्षी देकर कहती हूँ कि मै आपके पुत्र से प्रेम करती हूँ । मैं एक दरिद्र वंश की हूँ । परन्तु मेरा पिता सच्चा आदमी था । ऐसा ही सच्चा मेरा प्रेम है । आप नाराज़ न हूजिए । आपके पुत्र की, इस बात से कुछ हानि नही कि मैं उससे स्नेह करती हूँ । मै न तो उसके पीछे पड़ती हूँ और न उससे विवाह की प्रार्थना करूँगी, जब तक इसकी अधिकारिणी न बनूँ । मैं जानती हूँ कि मेरा यह प्रेम व्यर्थ है । मैं भारतवर्षीयों के समान उस सूर्य्य की उपासना करती हूँ जो मुझको देखता तो है परन्तु यह नहीं जानता कि मै उपासिका हूँ । रानी जी कृपा कीजिए । इस मेरे प्रेम के कारण मुझसे अप्रसन्न न हूजिए ।

रानी—क्या तुम्हारा पेरिस जाने का विचार नहीं है ?

हेलीना—है ।

रानी—क्यों ?

हैलीना—मैं सच सच कहूँगी! आप को मालूम है कि मेरे पिताजी मुझे कुछ औषधियाँ बतला गये थे। उन में राजा के रोग की भी दवा है।

रानी—क्या पेरिस जाने का यही प्रयोजन था ?

हैलीना—आप के पुत्र के कारण मैंने यह विचार किया, नहीं तो पेरिस, फ्रांसनरेश या दवाओं का मुझे स्मरण भी नहीं था।

रानी—हैलीना! तुम समझती हो कि राजा तुम्हारी दवा करेगा। क्योंकि वैद्यों ने कह दिया है कि यह रोग असाध्य है।

हैलीना—मेरा आत्मा कहता है कि मैं अपने परिश्रम में अवश्य साफल्य प्राप्त करूँगी।

रानी—क्या तुमको विश्वास है ?

हैलीना—हाँ हाँ! मैं तो यही समझती हूँ।

रानी—अच्छा मैं तुमको आज्ञा देती हूँ। मार्गव्यय के लिए धन ले जाओ। नौकर चाकर साथ ले जाओ। मैं रोसिलन में रह कर तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगी! तुम कल चली जाओ। मैं तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करूँगी!

हैलीना पेरिस में जा पहुँची। उसका लेफ्यू से परिचय हो चुका था, इसलिए उसीकी सहायता से राजा के भी दर्शन हो गये। राजा ने पूछा—

"लड़की! क्या तुम मेरे पास आई हो?"

हैलीना—श्री महाराज! मेरे पिताजी का नाम जिराड-डी-नार्बन था। वे अपने काम में बड़े दक्ष थे!

राजा—मैं उसे जानता हूँ।

हैलीना—बस बस, अब श्रीमान् के सम्मुख उनकी प्रशंसा करना अनावश्यक है। मरते समय उन्होंने मुझे बहुत सी ओषधियाँ बताई थीं। उनमें से एक ऐसी है जिसके लिए वह कह गये हैं कि इसे आँख की पुतलियों से भी अधिक रखना। मैंने सुना है कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। इसलिए आप की चिकित्सा करने आई हूँ।

राजा—हम तुमको धन्यवाद देते हैं। परन्तु जब हमारे बड़े से बड़े वैद्यों ने जवाब दे दिया और हमारे रोग को असाध्य ठहरा दिया तो हमको ऐसा अविश्वासी नहीं होना चाहिए कि असाध्य रोग की इधर उधर दवा करते फिरें।

हैलीना—मेरा जो कर्तव्य था मैंने किया, अब मैं श्रीमान् को कष्ट नहीं दूँगी।

राजा—मैं तुमको उसी प्रकार धन्यवाद देता हूँ जैसे एक मरता हुआ मनुष्य उन लोगों को देता है जो उसे जीते रहने के लिए आशिष् देते हैं। मैं खूब जानता हूँ कि तुम मुझे चंगा नहीं कर सकती हो।

हैलीना—इस बात की जाँच करने में तो कोई हानि नहीं है। ईश्वर बहुधा छोटे आदमियों से बड़े काम कराता है।

राजा—अच्छा जाओ! मैं तुम्हारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ।

हैलीना—महाराज! मैं कोई धोखेबाज नहीं हूँ। आप मेरा विश्वास न कीजिए, किन्तु ईश्वर पर विश्वास कीजिए। मुझे आशा है कि मैं अवश्य आप को अच्छा कर दूँगी।

तुमको इतना विश्वास है? अच्छा कितने दिन में अच्छा करोगी?

हैलीना—जितनी देर में सूर्यदेव के घोड़े दो बार आकाश में अपना दैनिक वृत्त बना सकें और दो बार प्रकाश के दीपक को समुद्र में बुझा सकें। या जितनी देर में जहाज वाला २४ बार बालू को शीशे में बदल कर यह कह सके कि इतने मिनिट गुजर गये।

राजा—अगर तेरी दवा ने काम न किया तो क्या दण्ड?

हैलीना—श्रीमान् मुझको कुत्ता की मौत मरवा डालें! परन्तु यदि मैंने अच्छा कर दिया तो आप मुझे क्या इनाम देंगे?

राजा—बोल, क्या चाहती है?

हैलीना—क्या आप उसे पूरा करेंगे?

राजा—अवश्य अवश्य! मुझे अपने राज की शपथ है!

हैलीना—जिस मनुष्य से मैं विवाह करना चाहूँ आप उसीको मुझे ग्रहण करने की आज्ञा दें। मैं आपके राजवंश में से किसीसे विवाह की प्रार्थिनी न हूँगी! परन्तु ऐसे मनुष्य को माँगूँगी जिसको दे देना आप के अधिकार में है!

राजा ने स्वीकार कर लिया और हैलीना को आशातीत सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि अभी दो दिन भी न होने पाये थे कि राजा का रोग बिलकुल जाता रहा और वह चंगा हो गया। अब राजा ने एक बड़ी सभा की जिसमें अपने राज्य के सब योग्य युवक पुरुषों को बुलाया और हैलीना को आज्ञा दी कि इनमें से जिस किसीको चाहो अपना पति बनालो। हैलीना ने थोड़ी ही देर में बरटराम की ओर संकेत करके कहा—

"स्वामिन् ! मैं यह तो कहने के योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे हैं। हाँ मैं यह कह सकती हूँ कि आयु पर्य्यन्त मैं आप की आज्ञा-कारिणी रहूँगी।"

राजा—हाँ व्रतराम ! अब यह तेरी स्त्री है, तू इसको अङ्गीकार कर !

व्रतराम—मेरी स्त्री ! महाराज ! मेरी प्रार्थना है कि इस काम मे आप मुझे अपनी आँखों से काम लेने दें।

राजा—क्या तुझे नहीं मालूम कि इसने मेरे साथ क्या भलाई की है ?

व्रतराम—हाँ, महाराज ! पर मुझे यह नहीं मालूम कि इसके साथ विवाह क्यों करूँ।

राजा—क्या तुझे मालूम है कि इसने मुझे मृत्यु से बचाया है ?

व्रतराम—परन्तु इससे यह बात सिद्ध नहीं होती कि मेरा कुल नष्ट हो जाय। मैं जानता हूँ कि इसका बाप एक तुच्छ आदमी था। नीच कुल की कन्या से मेरा क्यों विवाह कराते हैं ? आप मुझ से घृणा कर सकते हैं, परन्तु घृणा से अपमान अच्छा नहीं है।

राजा—ऐसा मत कहो। गुणी मनुष्य नीच कुल में उत्पन्न हुआ भी गुणी ही है। यदि एक मनुष्य कुलीन हो परन्तु गुणी न हो तो उसका कुलीन होना व्यर्थ है। यह रूपवती और बुद्धिमती है, यही गुण आदमी को प्रतिष्ठित करते हैं। यदि तू इस रमणी को स्वीकार करे तो इसमें जो त्रुटियाँ हैं उनको मैं पूरा कर सकता हूँ। रूप और बुद्धि तो इसमें है ही। रहा धन और मान। वह मैं दूँगा।

व्रतराम—मुझे इससे स्नेह नहीं है और न हो सकता है।

राजा—(हैलीना से) यदि तुम किसी अन्य को चुनना चाहो तो शायद तुम को कष्ट होगा ?

हैलीना—महाराज ! मुझे हर्ष है कि आप अच्छे हो गये। शेष बात को जाने दीजिए !

राजा—नहीं नहीं ! यहाँ मेरी प्रतिज्ञा भङ्ग हो रही है। इसलिए मै अपनी शक्ति से काम लूँगा। हे अभिमानी लड़के ! तुझे इसको ग्रहण करना पड़ेगा ! अपनी घृणा को रोक और मेरी आज्ञा का पालन कर। अगर ऐसा नहीं करेगा तो मै तुझे अपनी दृष्टि से गिरा दूँगा। और मैं तुझसे इस बात का बदला लूँगा !

ब्रतराम—महाराज ! क्षमा कीजिए, मै अब आप की आज्ञा का पालन करता हूँ। जिस स्त्री से मै घृणा करता था उसी का मै देखता हूँ कि महाराज प्रशंसा करते हैं। इससे अधिक कुलीनता क्या हो सकती है ?

राजा—अच्छा इसे ग्रहण कर और मैं तुझे तेरे राज्य के बराबर देश और दूँगा !

ब्रतराम—मै स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार उसी दिन राजा की आज्ञा से ब्रतराम और हैलीना का विवाह हो गया। परन्तु ब्रतराम को हैलीना से कुछ भी प्रेम न था। राजा उसे विवाह करने पर तो मजबूर कर सकता था, परन्तु प्रेम करने में मजबूर करना असम्भव था।

विवाह के थोड़े दिनों पीछे ही ब्रतराम ने हैलीना द्वारा पेरिस से जाने की आज्ञा चाही। जब आज्ञा मिल गई तो ब्रतराम ने उससे कहा—

"मैं इस विवाह के लिए तैयार नहीं था, इसलिए मेरा

चित्त बड़ा विक्षिप्त हो गया है। इस कारण अगर मैं इस समय कुछ करना चाहूँ तो आश्चर्य न करना।"

हैलीना बिचारी क्या आश्चर्य करती। उसे यह जानकर बड़ा रंज हुआ कि व्रतराम उसे त्याग कर विदेश-यात्रा करना चाहता है। व्रतराम ने हैलीना का हुक्म दिया कि मेरी माता के पास चली जाओ और उनको यह पत्र दे देना। मैं अब कभी तुमसे न मिलूँगा। हैलीना ने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि—

"महाराज, मैं इसका क्या उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो आपकी आज्ञाकारिणी दासी हूँ, और सदा ऐसी ही रहूँगी।" व्रतराम को हैलीना के गिड़गिड़ाने पर कुछ भी तरस न आया और बिना किसी शिष्टाचार के वह वहाँ से चला गया।

हैलीना बिचारी अब व्रतराम की माता के पास चली गई। उसने अपना कार्य्य सिद्ध कर लिया। राजा की जान बचा ली, अपने प्यारे व्रतराम से विवाह भी कर लिया, परन्तु अब वह उसी दुःख की मारी फिर निराश होकर अपनी सास के पास लौट आई। घर पहुँचते ही उसे व्रतराम का ऐसा पत्र मिला जिसको पढ़कर उसके हृदय के दो टूक हो गये। एक पत्र उसकी माँ के लिए था जिसमें लिखा था—

"मैंने तुम्हारे पास तुम्हारी पतोहू को भेज दिया है। उसने राजा को चंगा और मुझे नष्ट कर दिया। मैंने उसके साथ विवाह तो कर लिया परन्तु पतिवत् व्यवहार नहीं किया और मैंने इससे "नहीं" को अनन्त बनाने की शपथ की है। आपको मालूम होगा कि मैं भाग गया, इसलिए मैं पहले ही से सूचना दिये देता हूँ। यदि संसार में जगह हुई तो मैं हमेशा उससे दूर रहूँगा। प्रणाम के पश्चात्

आपका अभागा पुत्र—व्रतराम।

एक पत्र हैलीना के लिए था जिसका तात्पर्य यह था—

"यदि तुझे मेरे हाथ की अँगूठी मिल जाय जिसे मैं कभी नहीं उतारूँगा तो उस समय तू मुझे अपना पति कह सकती है परन्तु यह समय कभी नहीं आने का।"

इसके आगे लिखा था—

"जब तक मेरी स्त्री नहीं। फ्रान्स में मेरा कुछ भी नहीं।"

भतराम की माता ने हैलीना को आदर के साथ लिया और बड़े प्यार से रक्खा परन्तु हेलीना को शोक के मारे कल न पड़ी। उसकी सास ने बहुत कुछ समझाया कि "अब मेरा लड़का तो चला गया, तुम्हीं लड़के के समान हो। तुम ऐसी गुणवती हो कि ऐसे बीस लड़के तुम्हारी खुशामद करें।" परन्तु हैलीना को सन्तोष न आया। वह टकटकी लगा कर पत्र की ओर देखती और कहती "हाय! मेरा स्वामी चला गया। सदा के लिए चला गया।" फिर वह कहने लगी "हाय! मेरा स्वामी केवल मेरे कारण देश विदेश मारा मारा फिरता है। ऐसी दशा में मुझे धिक्कार है अगर मैं यहाँ रहूँ। इसलिए अब मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल रोसिलन की रानी जब उठी तो उसने अपनी पतोहू को घर में न पाया। थोड़ी देर पीछे उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था कि मेरे इतनी जल्दी चले आने का कारण यह है कि मुझे यह जान कर बड़ा शोक हुआ है कि मेरा पति मेरे कारण घर नहीं आ सकता। इस अपराध के प्रायश्चित्त के लिए मैं सेण्ट-ग्राण्ड के मन्दिर में यात्रा करने जा रही हूँ। आप अपने पुत्र को लिख दीजिए कि जिस स्त्री से तुम इतनी घृणा करते थे वह चली गई।"

ब्रतराम पेरिस छोड़ कर फ्लोरेंस चला गया और वहाँ के राजा की सेना में भरती हो गया। वहाँ उसने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई और बड़े पद पर नियुक्त होने को ही था कि उसे अपनी माता का पत्र मिला कि "अब तुम चले आओ, क्योंकि हैलीना यहाँ से चली गई।" यह देखकर ब्रतराम ने घर को लौटने का विचार किया। उसी समय हैलीना एक यात्रिणी के वेष में फ्लोरेंस पहुँच गई।

सेण्ट-ग्राण्ड के मन्दिर का रास्ता फ्लोरेंस होकर था। जब हैलीना फ्लोरेंस में आई तो उसने सुना कि यहाँ एक ऐसी विधवा है जो सेण्ट-ग्राण्ड के जाने वाले यात्रियों को बड़े सत्कार से रखती है। इसलिए वह उसके पास चली गई। इस वृद्धा ने उसको आदर से लिया और कहा कि अगर तुम राजा की सेना को देखना चाहो तो मेरे घर में से देख सकती हो। एक तुम्हारे देश का आदमी भी इस सेना में है जिसका नाम ब्रतराम है। हैलीना ने ब्रतराम का नाम सुनकर निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और अपने पति के दर्शन करने के लिए उसके साथ चली गई। वृद्धा ने पूछा—

"क्या यह रूपवान् नहीं है?"

हैलीना—हाँ मुझे यह पसन्द है।

इस समय इस विधवा की लड़की डायना ने कहा—

"कैसा ही हो, पर यहाँ इसने बड़ी वीरता दिखाई है। मैंने सुना है कि वह फ्रान्स से भाग आया है क्योंकि महाराजा ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कर दिया था। क्या तुमको कुछ मालूम है?"

हैलीना—हाँ यह ठीक है।

अथना—' प्रेम न करने वाले पति की स्त्री होने से, अधिक कौन सा दुःख है ?"

इस प्रकार यह विधवा और हैलीना अतराम के विषय में बातचीत करने लगी। इसके पश्चात् उसने यह भी सुना कि अतराम इस विधवा की लड़की डायना को बहुत चाहता है। और रात को आकर उसकी खुशामद किया करता है कि गुप्त रीति से तुम मुझको अपने कमरे में आने दो। डायना एक योग्य और सुशिक्षित लड़की थी। यद्यपि इस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी किन्तु वह एक कुलीन वंश की लड़की थी और उसकी माता ने बड़ी मेहनत करके उसे धार्मिक शिक्षा दी थी। इसलिए डायना अतराम के फुसलाने में नहीं आई। डायना को यह मालूम था कि अतराम एक विवाहित पुरुष है, ऐसे पुरुष से प्रेम करना अधर्म है। जिस रात को हैलीना इस विधवा के घर ठहरी हुई थी उस दिन अतराम ने डायना की बड़ी ख़ुशामद की क्योंकि वह उसके दूसरे दिन घर जा रहा था।

विधवा ने यह सब समाचार हैलीना से कह दिया और अपनी स्त्री के धार्मिक जीवन की बड़ी प्रशंसा की। अब हैलीना ने अपने पति की पुनः प्राप्ति का एक उपाय सोचा। उसने विधवा से कह दिया कि अतराम की स्त्री मैं ही हूँ। अपनी पुत्री से कह दो कि वह अतराम को अपने कमरे में आने दे। मैं डायना के भेष में उससे मिलूँगी। विधवा को ऐसा करने में सकोच हुआ। तब हैलीना ने कहा—

"अगर आपको मेरे अतराम की स्त्री होने में सन्देह हो तो मैं नहीं समझती कि किस प्रकार आपको निश्चय दिलाऊँ। परन्तु इससे मेरे प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी।"

विधवा—यद्यपि मेरी दशा इस समय सन्तोषजनक नहीं है। पर मैं एक कुलीन घर की हूँ, और ऐसी बातें नहीं जानती। इसलिए ऐसे काम नहीं कर सकती, जिससे मेरे कुल के नाम में बट्टा लगे।

हैलीना—मैं भी यह नहीं चाहती। मेरा विश्वास करो। प्रतराम मेरा पति है। मैंने ठीक ठीक कह दिया है। आप एक काम कर सकती हो जिसमें आपकी बदनामी न होगी।

विधवा—वह क्या है?

हैलीना—प्रतराम के पास एक अँगूठी है जो उसे अपने पूर्वजों से मिली है। इसको वह बहुमूल्य समझता है और अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। परन्तु अब उसका अनुराग आपकी पुत्री पर है। स्त्रियों के प्रेम में लोग अमूल्य से अमूल्य वस्तु दे डालते हैं। यदि डायना उस अँगूठी को प्रतराम से ले ले और मुझे दे दे तो मैं बहुत कुछ धन तुमको दूँगा। इस समय केवल एक थैली रुपया की देती हूँ।

विधवा ने यह बात स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री को बतला दिया कि किस प्रकार कार्य सिद्ध किया जावे। इस समय हैलीना ने किसी के हाथ प्रतराम से कहला भेजा कि हैलीना मर गई। क्योंकि उसने समझा कि अगर वह अपनी पहली स्त्री के मरने की खबर सुन लेगा तो अवश्य खुल्लमखुल्ला डायना से विवाह का प्रार्थी होगा और इस प्रकार उसे अँगूठी मिल जायगी।

उसी रात को प्रतराम डायना के पास आया और प्रेम की बातें करने लगा। उसने कहा—

"तुम देवी हो।"

डायना—नहीं। मैं डायना हूँ।

व्रतराम—हाँ तो तुम देवी* ही हो। परन्तु तुम में प्रेम नहीं है। तुमको वैसा ही होना चाहिए जैसी तुम्हारी मा थीं जब तुमने जन्म लिया था।

डायना—वह उस समय धार्मिक थी।

व्रतराम—ऐसा ही तुमको भी होना चाहिए।

डायना—मेरी माता का कर्तव्य था जैसा कि आपका अपनी स्त्री के साथ है।

व्रतराम—यह न कहिए। मैं उससे विवाह करने पर मजबूर था। परन्तु मैं आपसे स्नेह करता हूँ, और सदा आपका सेवक रहूँगा।

डायना—हाँ, तुम उसी समय तक हमारे सेवक हो जब तक हम तुम्हारी सेवा करती हैं। पर जब तुमने हमारे फूल चुन लिये तो काँटों को हमारा ही हृदय विदीर्ण करने के लिए छोड़ जाते हो।

व्रतराम—मैं शपथ खाता हूँ।

डायना—शपथ खाने से बात सच्ची नहीं हो सकती। बुरी बातों के लिए शपथ नहीं खाना चाहिए।

व्रतराम—प्रेम करना बुरी बात नहीं है। मैं छल नहीं करता। प्यारी मुझे अपना समझ कर मेरे प्राण बचा लो, क्योंकि मैं प्रेमरोगी हूँ।

डायना—अच्छा, इस अँगूठी को दे दो।

व्रतराम—मैं दे देता परन्तु दे नहीं सकता।

डायना—क्या, दे नहीं सकते?

---

* डायना रोमन लोगों की एक देवी का नाम है।

भ्रतराम—हाँ यह मेरे पूर्वजों की निशानी है। इसे खो देने से मुझे बहुत बड़ी अपयश होगा।

डायना—बस बस ! मेरा आत्म गौरव भी इस अँगूठी से कम नहीं है। मेरा सतीत्व मेरे घर का रत्न है जिसे खो देने से मेरा बड़ा अपयश होगा। यह रत्न मेरे पूर्वजों की निशानी है।

भ्रतराम (अँगूठी देकर) लो ! अँगूठी लो। मै, मेरा कुल, मेरा गौरव सब तुम्ही हो।

डायना—अच्छा, आधी रात के समय मेरा दरवाजा खटखटाना ! मैं ऐसा प्रबन्ध रक्खूँगी कि मेरी माता को खबर न हो तुम केवल एक घण्टे मेरे पास रह सकते हो। लेकिन देखो, बातें मत करना। मैं इन सब बातों का कारण फिर बतला दूँगी। रात के समय मैं एक और अँगूठी पहन कर आऊँगी और आपको दूँगी जिससे हम दोनों का सम्बन्ध भविष्यत् में मालूम हो सके कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ।

भ्रतराम—तुमको पाकर मैंने स्वर्ग पा लिया। ज्यों ही मेरी पहली स्त्री मर जायगी, मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा।

डायना—अच्छा अब जाओ।

आधी रात के समय जब अँधेरा हो गया, भ्रतराम डायना के कमरे में गया। वहाँ हैलीना डायना के वेष में उसका स्वागत करने को तैयार थी। भ्रतराम को यह मालूम नहीं था कि हैलीना ऐसी चतुर है। इसका कारण यह मालूम होता है कि उसने कभी हैलीना के गुणों पर विचार नहीं किया था। हैलीना रूप में डायना से कुछ कम नहीं थी। परन्तु जिस चीज को मनुष्य रोज़ देखा करते हैं वह उनको साधारण प्रतीत होती है।

दूसरी बात यह है कि हैलीना को ब्रतराम से ऐसा अगाध प्रेम था कि वह चुपके चुपके उसके मुँह की ओर देखा करती थी और कभी कुछ कहती नहीं थी। कहावत है कि गहरे पानी के ऊपर बुलबुले नहीं उठा करते, इसी प्रकार गहरे प्रेम में बातों की कमी हुआ करती है। यह भी एक कारण था, जिससे ब्रतराम का चित्त हैलीना की ओर कभी आकर्षित न हो सका। परन्तु अब हैलीना को ज़रूरत थी कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए यथाशक्ति उपाय करे। इसलिए उसने ब्रतराम से ऐसी प्रेम की बातें की और चुपके चुपके ऐसा स्नेह प्रकट किया कि ब्रतराम मोहित हो गया। चलते समय हैलीना ने अपनी अँगूठी दी और सवेरा होने से पहले ही वहाँ से विदा कर दिया।

हैलीना ने अब डायना और उसकी माता से पेरिस चलने को कहा। क्योंकि हैलीना के प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन दोनों का वहाँ पर होना आवश्यक था। जब वे वहाँ पहुँचीं तो उनको मालूम हुआ कि फ्रांसनरेश ब्रतराम की माता से भेंट करने के लिए रोसिलन को गया है। इसलिए उन सबने जल्दी से रोसिलन को प्रस्थान कर दिया।

महाराजा का स्वास्थ्य अब तक बहुत अच्छा था। वह हैलीना का बड़ा कृतज्ञ था और उसे याद करता था। इसलिए जब वह रोसिलन पहुँचा तो हैलीना के लुप्त होने की ख़बर सुन कर बहुत शोकातुर हुआ और कहने लगा—

"देखो, हैलीना तुम्हारे घर का एक रत्न थी, जिसे तुम्हारे लड़के ने अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। उसने हैलीना की कद्र न जानी।"

ब्रतराम की माता ने महाराजा की अप्रसन्नता का ख़याल करके कहा—

"महाराज! क्षमा कीजिए। वह लडका है। लडकपन मे उजड्डपन होना ही है। उसने अपराध किया।"

महाराज—यद्यपि मुझे उस पर बहुत क्रोध आया। और मैं उसे मारने का अवसर खोजता रहा, परन्तु अब मैंने उसे क्षमा कर दिया है।

लेफू—महाराज! उस लडके ने आपके साथ, अपनी माता के साथ और अपनी स्त्री के साथ बडा अन्याय किया परन्तु सब से बडा अन्याय अपने साथ किया कि उसने ऐसे स्त्री रत्न को खो दिया जिसके रूप पर बडों बड़ों की आँखें मोहित हो गईं, जिसकी बातों ने भले भलों कानों को आकर्षित कर लिया और जिसके गुणों ने अच्छों अच्छों से प्रशंसा करा ली।

महाराज ने अब ब्रतराम को बुलाया जो अभी फ्लोरेंस से आया हुआ था, और उसे क्षमा कर दिया। परन्तु जिस समय यह बातें हो ही रही थीं, महाराज को फिर क्रोध आ गया, क्योंकि उन्होंने ब्रतराम के हाथ में वह अँगूठी देखी जो उसने हैलीना को दी थी। हैलीना कह गई थी कि मैं इसे अपने हाथ से कभी पृथक् न करूँगी। हाँ, जब मुझ पर कोई विपत्ति पडेगी तो अवश्य इसे किसी के हाथ आपकी सेवा में भेज दूँगी। अब वह क्रोध में आकर ब्रतराम से कहने लगा—

"अरे दुष्ट! क्या तूने हैलीना से वह चीज़ भी लेली जिसकी उसे बडी ज़रूरत थी।"

ब्रतराम—यह उसकी अँगूठी नहीं है।

रानी—बेटे। मैंने उसे इसको पहने देखा था। वह इसे बहुत प्यार करती थी।

लेफू—मैंने भी देखा था।

भवराम—महाराज! आप को धोका हुआ है। यह अँगूठी कभी उसके पास नहीं थी। फ्लोरेंस में एक स्त्री ने अपने कमरे में यह अगूठी मेरे पास फेंक दी थी। उसके चारों ओर एक कागज लिपटा हुआ था जिस पर उस स्त्री का नाम था। वह स्त्री बडी योग्य थी और उसने समझा कि मै उससे प्रेम करूँगा। परन्तु जब मैने अपने विवाह का हाल सुनाया तो वह स्त्री चुप हो गई और मुझ से फिर कभी अपनी अँगूठी न माँगी।

राजा—चाहे किसी ने दी हो, यह मेरी अँगूठी है, यह हैलीना की अगूठी है। तुम ठीक बताओ कि तुमने उससे किस प्रकार यह अँगूठी छीनी। वह कहती थी कि या तो यह अँगूठी वह तुमको देगी, जब तुम उससे प्यार करोगे, और या वह इसे मेरे पास भेजेगी। सो बताओ तुमने यह अगूठी कहाँ पाई?

भवराम—उसने इसे देखा तक नही।

राजा—झूठ बोलता है।

यह कहकर राजा ने अपने सिपाहियों द्वारा भवराम को पकडवा लिया क्योंकि उसे यह निश्चय हो गया कि भवराम अपनी स्त्री का घातक है।

उसी समय एक नौकर राजा के पास एक पत्र लाया और कहने लगा—"महाराज! फ्लोरेंस की एक स्त्री ने आपकी सेवा में यह प्रार्थनापत्र भेजा है।"

राजा ने पढा। उसमें यह लिखा हुआ था—

"रोसिलन के अधिपति ने सैकडों शपथें खाई कि जब मेरी स्त्री मर जायगी तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा। मैं कहती हुई शरमाती हूँ, परन्तु कहना पडता है कि इसी लालच से

मैंने अपना सतीत्व नष्ट कर दिया। अब अतराम की स्त्री मर गई है। लेकिन यह पुरुष बिना मुझसे मिले हुए यहाँ चला आया है। आप कृपा करके मेरा विवाह कर दीजिए नहीं तो मेरा जीवन नष्ट हो जायगा और लोग इसी प्रकार स्त्रियों को नष्ट किया करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी

डायना।

अब राजा ने अतराम से इसका हाल पूछा तो उसने राजा के क्रोध से डरकर इनकार कर दिया। इस पर डायना अपनी माता सहित महाराज की सभा में उपस्थित हुई और माता ने रोकर कहा—

"महाराज! आज मेरे कुल की नाक कट गई। आप हमारे साथ न्याय कीजिए।"

फिर डायना ने एक अँगूठी दिखला कर कहा—

"महाराज! यह अँगूठी अतराम ने मुझे दी थी और मैंने इसके बदले एक अँगूठी दी थी। इससे प्रकट होता है कि मेरा कथन ठीक है।"

राजा ने हेलीना की अँगूठी दिखाकर कहा—

"क्या यही अँगूठी है?"

डायना ने उत्तर दिया कि "भगवन् यही अँगूठी मैंने अतराम को दी थी।

अब तो राजा ने समझा कि डायना भी हेलीना की अँगूठी का भेद जानती है। इसलिए उसने कहा—

"सच सच बताओ कि तुमने यह अँगूठी कहाँ से पाई। नहीं तो अभी एक एक को प्राणदण्ड दूँगा।"

इस पर डायना ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी माता को

आज्ञा दीजिए कि उस जौहरी को ले आवे जिससे यह अँगूठी ला गई है।'

डायना की माता को आज्ञा दी गई और थोड़ी देर पीछे वह हैलीना को लेकर कमरे में आई।

राजा हैलीना को देखकर फूला न समाया और कहने लगा—

"अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ ?"

हैलीना—नहीं महाराज! नहीं! (अतराम से) यह आप की स्त्री की छाया मात्र है। नाम है वस्तु नहीं!

अतराम—दोनों। दोनों। क्षमा कीजिए,

हैलीना—स्वामिन्! जब मैं डायना के भेष में थी तो आप मुझ पर बड़े प्रसन्न थे। देखो यह अँगूठी है। और यह पत्र भी आप ही का है जिस में आपने एक बार लिखा था कि अगर तुम मेरी अँगूठी प्राप्त करलो तो तुम मुझे अपना पति कह सकती हो। यह सब हो गया!

अतराम—(राजा से) महाराज, अगर हैलीना मुझे समझा दें कि यह सब बातें किस प्रकार हुई तो मैं सदा इससे प्रसन्न रहूँगा।

हैलीना के लिए अब यह बात कुछ कठिन न थी। डायना और उसकी माता इसीलिए वहाँ आई हुई थीं। जब सब कथा आद्योपान्त कही गई तो सब को बड़ा हर्ष हुआ और हैलीना अपने प्यारे अतराम की चहेती रानी हुई।

राजा डायना से बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने एक दुखिया स्त्री को सहायता की थी और उसने उसका विवाह भी एक योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष से करा दिया।

छठा हनरी

पहला भाग

(HENRY VI. PART I)

'पाँचवें हनरी' में यह वर्णन हो चुका है कि उसने न केवल फ्रांस का राज्य ही ले लिया किन्तु फ्रांसकी राजकुमारी कैथरायन से भी विवाह कर लिया। इङ्गलैण्ड में उस समय बड़ा आनन्दोत्सव मनाया गया और समस्त प्रजा अपने अपूर्व सम्राट् पर अभिमान करने लगी। परन्तु डौफिन अर्थात् फ्रांस के युवराज ने हनरी से विरोध किया और इसलिए हनरी को फ्रांस जाना पड़ा। दो वर्ष तक युद्ध होता रहा। परन्तु इन युद्धों से पञ्चम हनरी का स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था इस कारण ३१ अगस्त सन् १४२२ ई० को विन्सीनिस में उस का देहान्त हो गया।

हनरी का शव इङ्गलैण्ड में लाया गया और सब लोगों को इस अकाल मृत्यु पर बड़ा ही शोक हुआ क्योंकि पञ्चम हनरी से पूर्व किसी राजा ने फ्रांस पर इस प्रकार विजय न पाई थी। इसके समय में इङ्गलैण्ड का यूरोप के अन्य देशों में बड़ा मान बढ़ गया था। परन्तु यह उन्नति केवल क्षणिक थी क्योंकि पिछले युद्धों में न केवल राजकोष ही ख़ाली हो गया था किन्तु राजसेना भी वीर पुरुषों से वञ्चित हो चुकी थी। प्रायः

सब बड़े बड़े योद्धा मृत्यु-प्राप्त हो चुके थे। इसलिए हेनरी के मरते ही राज में गड़बड़ी मच गई अभी उसका मृतक संस्कार भी न होने पाया था और लोगों के आँसू अभी सूखे तक न थे कि एक दूत ने यह कुसमाचार सुनाया कि अँगरेजी सेना परास्त होगई और गाइनी, शेम्पेन, रीम्स, औलियन्स, पेरिस, गिसर्स और पोइक्टियर्स नामी प्रान्त उनके स्वत्व से निकल गये।

यह सुनकर अँगरेजी राजनेताओं को बड़ा दु:ख हुआ। हेनरी की मृत्यु के पश्चात् उसका २ वर्ष का पुत्र छठे हेनरी के नाम से गद्दी पर बैठा और बैडफर्ड को राजकार्य्य का कर्त्ता नियत किया गया जैसी कि पञ्चम हेनरी ने मृतक-शय्या पर अपनी इच्छा प्रकट की थी।

बैडफर्ड ने जब यह दु:खमय वार्त्ता सुनी तो झट से फ्रांस को जाने की तैयारियाँ कर दी। उसी समय दूसरे दूत ने आकर खबर दी कि डौफिन चार्ल्स (फ्रांस के युवराज) का रीम्स में राज्याभिषेक हो गया। और आर्लियन्स, पेन्जु तथा एलङ्कन के जागीरदार उस से मिल गये। परन्तु सब से बुरी बात जो सुनी गई वह यह थी कि अँगरेजों का एक बड़ा वीर योद्धा टालबट फ्रांस में कैद हो गया। यह घटना इस प्रकार हुई कि १० वीं अगस्त को जब टालबट आर्लियन्स नामी नगर से कुछ दूर पर पड़ा हुआ था उस पर अचानक शत्रु ने आक्रमण किया और उसे अपनी सेना को ठीक करने का अवकाश न मिला। तीन घण्टे तक घोर युद्ध हुआ जिसमें टालबट ने ऐसी वीरता दिखाई कि सैकड़ों शत्रु नरकधाम को पहुँचा दिये। उसे देख कर शत्रु दल में हलचल पड़ गई और जिस को जिधर मुँह उठा भाग निकला। अँगरेजी सेना अपने योद्धा का नाम ले लेकर शत्रुगण को परास्त करने लगी। उस समय फ्रांस

के पराभव में कुछ भी कसर नहीं रही थी परन्तु सर जोन फाल्स्टाफ नामी एक अँगरेजी सेनापति अपनी कायरता के कारण भाग निकला। और इसी अवस्था में पीछे से आकर एक फरांसीसी ने टाल्बट की पीठ में धोखे से एक ऐसी तलवार मारी कि वह गिर पड़ा और पकड़ लिया गया।

टाल्बट की वीरता पर सब को बड़ा भरोसा था और उसी के आश्रय पर अब तक अंगरेज लोग निश्चिन्त बैठे हुए थे, परन्तु अब सब लोग घबड़ा उठे और बेडफ़र्ड ने दश सहस्र सेना के साथ फ्रांस को प्रस्थान कर दिया।

उस समय बचे कुचे अँगरेज औलियन्स को लेने का प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि टाल्बट कैद हो चुका था परन्तु सालसबरी अभी स्वतन्त्र था और उसने डौफिन का इस वीरता से सामना किया कि एक बार फिर उसे अपनी हार का निश्चय हो गया। सालसबरी के सामने से भाग कर उस ने कहा—

"हाय! मेरे आदमी कैसे कायर हैं। दुष्ट! अधम! यदि यह लोग मुझे अकेला शत्रुदल में न छोड़ देते तो मैं कभी यहाँ से भाग कर पीठ न दिखाता।"

रिगनियर नामी एक दूसरे सैनिक ने उत्तर दिया कि "सालसबरी बड़ा लड़ाकू है। वह इस प्रकार लड़ता है मानो अपने जीवन से थक गया है। दूसरे लोग भूखे शेरों की तरह हम पर टूट रहे हैं।"

एलेङ्कन—हमारे एक सजातीय विद्वान् ने तीसरे एडवर्ड की लड़ाई का वर्णन करते हुए लिखा है कि इङ्गलैण्ड में वीर ही वीर उत्पन्न होते हैं जिन का एक आदमी हमारे दश लोगों को मार गिरा देता है। ऐसे पतले दुबले मनुष्यों

को देखकर कौन ऐसी आशा कर सकता था कि इनमें
इतना बल है। क्या यह सब सैमसन* ही हैं।

डौफिन चार्ल्स † इस समय निराश हो गया और उसने औलिं-यन्स छोड़ देने का इरादा किया परन्तु इस द्विविधा के समय जेन डार्क नामी एक लड़की वहाँ पर आई और कहने लगी कि मुझे स्वप्न हुआ है जिसमें मरियम ‡ ने प्रेरणा की है कि मैं रणक्षेत्र मे जाकर तुम्हारी सहायता करूँ, तुम अवश्य विजय पाओगे।

चार्ल्स—मुझे तेरी बातें सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ है। परन्तु जब तक तेरे बल की जाँच न कर लूँ, तेरा विश्वास नहीं कर सकता। मैं तुझसे मल्ल युद्ध करूँगा। यदि मैं हार गया तो तुझे अपनी सेना का सेनापति नियत कर दूँगा।

जेनडार्क—"मैं तैयार हूँ।"

अभी जेन ने दो तीन ही हाथ चलाये थे कि चार्ल्स चिल्ला उठा।

"बस कर। बस कर। तू बड़ी बुरी तरह मारती है।"

जेनडार्क—ईसा की मा मेरी सहायता कर रही है।

---

*सैमसन जोरा नामक नगर मे मनोह का लड़का था। जिसको ईश्वर ने इतना बल दिया था कि वह शेर को फाड़ डालता था। एक समय जब उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया तो उसने एक बड़े मकान के खम्भों को हिलाकर उन सब के ऊपर गिरा दिया और स्वय भी मर गया। (देखो बाइबिल Judges 12)

† डौफ़िन का नाम चार्ल्स था।

‡ मरियम ईसामसीह की मा का नाम है।

चार्ल्स—कोई तेरी सहायता करता हो। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि तू बड़ी प्रवीरा है, मैं तेरा राजा होना नहीं चाहता किन्तु मेरी यह इच्छा है कि तू मुझे अपना दास बनाले।

जैनडार्क—नहीं नहीं! मेरा उद्देश पवित्र है। मैं तुझ से विवाह नहीं कर सकती। मुझे केवल विजय प्राप्ति के लिए आज्ञा हुई है।

यह कह कर उसने डौफिन और समस्त सेना को ऐसा उत्तेजित किया कि वे फिर लड़ने पर कटिबद्ध हो गये। और अँगरेजों से जामिड़े।

इसी समय टाल्बट बन्दीगृह से छुटकारा पाकर साल्सबरी के पास जा पहुँचा। साल्सबरी ने बड़े हर्ष के साथ उस से कहा—

"टाल्बट! टाल्बट! आप किस प्रकार छूट आये। मुझे आप को देख कर बड़ा हर्ष हुआ है।"

टाल्बट—बैडफर्ड के पास एक फरासीसी कैदी लार्ड पौण्टन था जिस के बदले में फरासीसी लोगों ने मुझे मुक्त कर दिया। पहले वे मुझे एक साधारण पुरुष के बदले छोड़ देते थे। परन्तु मन इस बात को स्वीकृत नहीं किया क्योंकि इस से मेरा अपमान होता था और यश में बाधा पड़ती थी। मैंने कह दिया कि इस अपमान युक्त छुटकारे से तो मृत्यु ही भली है।

साल्सबरी—"आप के साथ फ़रासीसियों ने कैसा व्यवहार किया?"

टाल्बट—"बहुत बुरा! उन्होंने मुझे बाज़ार में निकाला, तालियाँ बजाई गईं और अनेक प्रकार से अपमान किया गया। मैंने भी क्रोध के मारे हाथों से पत्थर उठाकर भोड़ भाड़

को भगा दिया। उन लोगों में मेरी वीरता की ऐसी धाक थी कि वह डरते थे कि कहीं मैं लोहे का शीकचा न तोड डालूं। इसलिए उन्होंने चुने हुए सिपाही बन्दूक लिये मेरे ऊपर नियत कर दिये कि यदि मैं हाथ पैर हिलाऊँ तो वे झट मुझे मार डालें।"

सालसबरी—'मुझे आप के इन कष्टों पर बडा खेद है परन्तु हम लोग शीघ्र ही इस का बदला ले लेंगे।

अभी सालसबरी ने अपना कथन समाप्त भी नहीं किया था कि जेनडार्क से प्रेरित फरासीसियों की एक गोली साल्सबरी के ऐसी लगी कि एक आँख और एक गाल बिल्कुल उड गया और वह बेहोश हो कर धरातल मे गिर पडा।

इतने में जेनडार्क शस्त्र धारण किये आ पहुँची और उस के सम्मुख समस्त अँगरेज़ी सेना तितर बितर हो गई। यद्यपि टाल्बट बडी वीरता से लडा परन्तु उस का साहस व्यर्थ गया और अँगरेजों की हार हुई। वे औलियन्स को न ले सके और डौफिन चार्ल्स ने बडे समारोह से जेनडार्क की महिमा के गीत गाये। नगर में उसी के नाम के जय जयकार होने लगा। रात भर विजयोत्सव मनाया गया।

थोडी देर पीछे बैडफर्ड अपनी सेना सहित बरगण्डी के साथ वहाँ आगया। और जब इन सब ने जेनडार्क की वार्ता सुनी तो उनको बडा आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझा कि इस के ऊपर कोई भूत आगया है अथवा यह कोई जादूगरनी है जो एक गडरिये की लडकी होने पर भी उस मे इतना बल है और ऐसे पराक्रम के साथ लडती है।

अब इन सब ने विचार किया कि रात के समय जब फरासीसी लोग उत्सव में सलग्न हो रहे हैं अचानक इन पर छापा

मारना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए टालबट, बरगएडी और बैडफर्ड नगर की दीवारों पर चढ़ गये। और थोड़ी देर में नगर को ले लिया क्योंकि फरासीसी लोगों को इस आक्रमण की कुछ भी आशा न थी।

प्रातःकाल को फरासीसी लोगों ने टालबट के पकड़ने का एक और उपाय किया और औवर्न की रानी ने, जो एक प्रसिद्ध रमणी थी, टालबट को सहभोज के लिए निमन्त्रित किया। टालबट को इसके छल कपट का कुछ भी पता नहीं था इसलिए वह वहाँ चला गया परन्तु जब टालबट वहाँ पहुँचा तो उसे देखकर रानी अपने नौकर से कहने लगी—

"क्या यही टालबट है? क्या इसी ने फ्रांस का इतना नाश कर दिया है? क्या यही मनुष्य है जिसके नाम से मातायें अपने बच्चों को चुप किया करती हैं? मैं समझती थी कि वह बड़ा भारी लम्बा चौड़ा आदमी होगा। प्रतीत होता है कि किसी ने झूठ मूठ उड़ा दिया है। यह तो छोटा सा है।"

टालबट—देवि! मैंने आप को व्यर्थ कष्ट दिया। आपको अव-काश नहीं है। इसलिए मैं यहाँ से जाता हूँ।

रानी ने उस समय अपने नौकर द्वारा फाटकों में ताला डलवा दिया। और कहने लगी—

"अब तुझे मैंने कैद कर लिया।"

टालबट—कैद?

रानी—हाँ! कैद! तूने मेरे देश की बहुत हानि की है। इसी-लिए मैंने तुझे यहाँ बुलाया था। बहुत दिनों से मेरे मकान में तेरी तसवीर टँगी हुई थी परन्तु अब तू स्वय आ गया। अब मैं तेरे हाथ पाँव बाँध कर डाल दूँगी और तू मेरे देशवासियों को कुछ भी कष्ट न दे सकेगा।

टालबट—ओहो ! ओहो !

रानी—अरे दुष्ट ! तू हँस रहा है। देख तो अब तुझे रोना पड़ेगा।

टालबट—मुझे हँसी आ रही है कि श्रीमतीजी ने मेरे चित्र को कुछ और समझ लिया है जिसको आप दण्ड देना चाहती है।

रानी—क्या तू टालबट नहीं है ?

टालबट—मैं हूँ !

रानी—तो क्या इस समय टालबट मेरे वश में नहीं है ?

टालबट—नहीं नहीं ! यह तो मेरा चित्र है। मेरा शरीर तो कुछ और ही है। यदि आप मेरे शरीर को देखतीं तो चकित हो जाती क्योंकि यह इतना बड़ा है कि आप के इस छोटे मकान मे नहीं समा सकता।

रानी—यह तो असम्भव बात है।

टालबट ने इस समय बड़े जोर से बिगुल बजाया जिसको सुनते ही उसके साथी जो किसी गुप्त प्रदेश में छिपे खड़े थे आ उपस्थित हुए और दरवाजा तोड़ कर घर के भीतर घुस आये। अब टालबट कहने लगा—

"आप ने देखा ! देवी जी ! मेरे हाथ पाँव ये हैं। जो शरीर अब तक आप के सम्मुख खड़ा था वह तो केवल टालबट का चित्र है।"

रानी यह देखकर घबरा गई और टालबट से क्षमा माँगी। अन्त में उसने टालबट और उसके साथियों को सहभोज दिया। इस प्रकार अँगरेज लोग औलियन्स की लड़ाई में जीत गये।

परन्तु चार्ल्स डौफिन और जोनडार्क अभी अंगरेजों को निकालने का उद्योग कर रहे थे। अगरेज लोग उस समय रोयें नामी नगर में पड़े हुए थे। चार्ल्स और जेन ने इस नगर को लेने का इरादा किया और व्यापारियों का भेष धारण करके नाज के बोरों के सहित रोयें के फाटक पर दस्तक दी। द्वारपालों ने पूछा—"तुम कौन हो ?"

इन्होंने उत्तर दिया कि "हम दरिद्र व्यापारी हैं और अन्न बेचने आये हैं।" यह सुनकर फाटक खोल दिये गये। और यह लोग नगर में घुस गये। फाटक के खुलते ही फरासीसी सेना घुस पड़ी। और टालबट तथा बरगण्डी को बड़ी कठिनाई हो गई। दैवगति और दुर्भाग्य से उस समय बेडफर्ड रोग-ग्रसित होगया और उसके बचने की आशा न रही। टालबट आदि ने चाहा कि उसे किसी सुरक्षित स्थान में भेज दिया जाय, जहाँ वह युद्ध के कोलाहल से बच सके। परन्तु उसने न मानी और युद्ध जिस स्थान पर हो रहा था वहीं बैठा बैठा सिपाहियों को उत्तेजित करता रहा। अन्त में जब फ्रांसवालों का पराजय हुई और चार्ल्स तथा जान रणक्षेत्र से भागनेलगे तो बेडफर्ड के मन को शान्ति हुई और हर्षपूर्वक यह कहते हुए उसने प्राण त्याग दिये कि "अब शत्रु को पराभूत हुआ देखकर मुझे बड़ा सन्तोष है। अब मैं सुखपूर्वक मरता हूँ।" युद्ध के पश्चात् अँगरेजों को अपने ऐसे वीर सेनापति की मृत्यु पर बड़ा शोक हुआ और रो रो कर उसका मृतक संस्कार किया गया।

अब टालबट और बरगण्डी ने पेरिस की ओर कूच किया जिससे वे लोग फ्रांस देश की राजधानी पर स्वत्व प्राप्त कर सकें। जोन डार्क ने ओर्लियन्स और रोयें में अपना काम बिगड़ा हुआ देखकर बरगण्डी को अपनी ओर मिलाने का उपाय

किया। और यह बात सम्भव भी थी। क्योंकि बरगण्डी* फ्रांस का मान्त है जिसका शासक ड्यूक आफ बरगण्डी अँगरेजों से जा मिला था। जोन इसे फिर अपने देश की भलाई के विषय में समझाना चाहती थी। इसलिए जब बरगण्डी की सेना पेरिस को जा रही थी तो जोन डार्क ने मार्ग में बरगण्डी से कहा—

"वीर बरगण्डी! फ्रांस की आशा तुझी से है! हे बरगण्डी! मैं तेरी दासी कुछ प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

बरगण्डी—संक्षेप से कह! मुझे अवकाश नहीं है।

जेनडार्क—अपने देश की ओर देख! उपजाऊ फ्रांस की ओर देख! सोच तो सही कि यह सुन्दर नगर किस प्रकार विनष्ट हो रहे हैं। अरे! अपने देश की ओर उसी दृष्टि से देख जिस प्रकार एक माता अपने मरते हुए पुत्र की ओर देखती है। देख तूने स्वय अपनी तलवार से अपने ही देश का हृदय किस प्रकार विदीर्ण किया है। अपनी इस तलवार को दूसरी ओर फेर और उन लोगों को मार जो तेरे देश को नष्ट कर रहे हैं। भला अपने देश के मित्रों के साथ इस प्रकार अहित क्यों करता है? अपनी मातृभूमि के रक्त की एक बूंद से तुझे शत्रु के रुधिर की नदियों की अपेक्षा अधिक पीड़ा होनी चाहिए। इसलिए हे बरगण्डी! अब लौट आ और अपने देश की रक्षा कर।

बरगण्डी—(मन में)—अरे! इसके शब्दों में बड़ी आकर्षण-शक्ति है।

---

*अँगरेजी में राजों को उनके देश के नाम से पुकारते हैं जैसे "बरगण्डी" बरगण्डी के ड्यूक को कहते हैं। "यार्क" यार्क के ड्यूक को इत्यादि।

जोनडार्क—अगर तू ऐसा नहीं करता तो लोगों को तेरी उत्पत्ति और वश में सन्देह है। क्योंकि तू ऐसी जाति से जा मिला है जो केवल स्वार्थ के लिए तुझे चाह रही है। यदि टाल्वट जीत गया तो सिवा हनरी के और कौन राजा होगा? और क्या उस समय तू इसी प्रकार रहने पायेगा।"

जोन्डार्क ने बरगण्डी को ऐसा फुसलाया कि अन्त में वह पिघल गया और अगरजों को छोड़कर डोफिन चार्ल्स से आ मिला।

फ्रांसदेशीय घटनाओं को हम इस समय यहीं छोड़ते हैं और इङ्गलैण्ड के विषय में कुछ वर्णन करते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि पंचम हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसकी इच्छानुसार बेडफर्ड राज कार्य्यकर्त्ता नियत किया गया। परन्तु वह प्रायः फ्रांस के झगड़े में फँसा रहा और उसे इङ्गलैण्ड में रहने का कुछ भी अवकाश न मिला। उस की अनुपस्थिति में उस का भाई ग्लोस्टर छठे हनरी का संरक्षक नियत हुआ।

परन्तु सम्राट् की बाल्यावस्था में इङ्गलैण्ड के मंत्रिगण और अन्य प्रसिद्ध पुरुष आपस में लड़ने लगे। ग्लौस्टर और विंचेस्टर के लार्ड पादरी में बहुत कुछ वैमनस्य हो गया। उन दोनों ने बारी बारी से बालक इङ्गलैण्ड-नरेश को अपनी रक्षा में लेने का उद्योग किया। इस प्रकार कई बरसों तक घोर युद्ध होता रहा। इन दोनों के नौकर जहाँ कहीं मिल जाते परस्पर लड़ाई करते। एक समय इन के झगड़ों से तंग आकर लन्दन के लार्ड मेअर (मुख्याधिष्ठाता) ने उनको शस्त्र धारण करने से वर्जित कर दिया। परन्तु वे लोग अब पत्थर इकट्ठे करके अपनी जेबों में भरने लगे और एक दूसरों को मारने लगे। उधर थोड़े दिनों

पीछे ग्लोस्टर ने पार्लियामेंट (राजसभा) में विंचेस्टर के पादरी के विरुद्ध अभियोग चलाने की तैयारियां कीं। पादरी ने उस कागज को जिस पर ग्लोस्टर ने, उसके दोष लिखे हुए थे, भरी सभा में राजा के सम्मुख फाड़ डाला। छठा हनरी अब यद्यपि बड़ा हो गया था और राजसभा में आया करता था परन्तु उसके अशक्त होने के कारण और लोग उससे डरते नहीं थे। और सब अपने को स्वतन्त्र समझते थे। पादरी के कागज़ फाड़ डालने पर ग्लोस्टर और पादरी में बहुत झगड़ा हुआ। हनरी बिचारे ने बहुत कुछ इन से प्रार्थना की कि अब आप लोग ही, जो कि राज-काज के करने वाले हैं, आपस में लड़ेंगे तो राज का क्या हाल होगा। पहले तो उन्होंने अपने राजा की बात न सुनी। परन्तु जब हनरी ने बहुत कुछ उन से विनती की तो वे मान गये। और थोड़े दिनों के लिए झगड़ा मिट गया।

परन्तु इस समय एक और झगड़ा खड़ा हो रहा था। उस की कथा इस प्रकार से है। चतुर्थ हनरी का हाल लिखते हुए यह दिखलाया जा चुका है कि तीसरे एडवर्ड के दूसरे बेटे लाइनल क्लेरेन्स के वंश का एक पुरुष मार्टीमर ग्लेण्डोवर और हैरी हाटस्पर के साथ मिल जाने के कारण कैद कर लिया गया था। यह मार्टीमर अभी तक बन्दीगृह में ही सड़ रहा था। और हनरी चतुर्थ तथा उस के लड़के पञ्चम हनरी ने उसे इस भय से मुक्त नहीं किया था कि कहीं वह राज लेने का प्रयत्न न करे। पाँचवें हनरी के समय में इस के बहनोई कैम्ब्रिज ने इस को राज देने का कुछ प्रयत्न किया था परन्तु उस का भाँडा शीघ्र ही फूट जाने के कारण कैम्ब्रिज को झट से प्राणदण्ड दे दिया गया। कैम्ब्रिज का पुत्र रिचार्ड जो मार्टीमर का भांजा था और जो उस के पुत्ररहित होने के कारण उस का उत्तराधिकारी

था इस समय गुप्तरीति से अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहा था।

जब मार्टीमर का अन्त समय आया तो उसने रिचार्ड को अपने संरक्षकों द्वारा बुलवाया और कहा—

"मेरी वृद्धावस्था के संरक्षको! मुझ मरते हुए को इस स्थान पर बिठा दो! जिस प्रकार बहुत कष्टों के पश्चात् मनुष्य कुछ आराम लेता है इसी प्रकार बहुत दिनों के बन्धन के पश्चात् मेरे शरीर का हाल है। श्वेत केश कह रहे हैं कि अब मार्टीमर का अन्त समय है। ये आँखें उन दीपकों की भाँति, जिनका तेल समाप्त हो जाता है, धुँधली हो रही हैं। कन्धे बोझ के मारे दुर्बल हो रहे हैं, पैर अब शरीररूपी भार को धारण करने में असमर्थ हैं। अब मृत्यु के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नहीं है। क्या मेरा भांजा रिचार्ड आ रहा है?"

इसी समय रिचार्ड आगया, और मार्टीमर ने बड़े प्रेम से उसे छाती से लगाया। अब रिचार्ड ने अपने मामा से कहा—

"मामा! आज मुझसे और सोमर्सेट से झगड़ा हो गया। जब हम सब बैठे हुए थे तो वह मेरे पिता के लिए अपशब्द कहने लगा। मुझे अपने पिताजी का कुछ भी हाल ज्ञात नहीं है नहीं तो अवश्य मैं उसका सिर तोड़ डालता। इसलिए मामाजी बताइए कि मेरे पिताजी को क्यों प्राणदण्ड दिया गया।"

मार्टीमर—इसका कारण वही था जिसने मुझे कैद कराया। और जिससे मेरा युवावस्थारूपी पुष्प इस बन्दीगृह में पड़ा पड़ा सूख गया।

रिचार्ड—स्पष्ट बताइए। मैं नहीं समझा।

मार्टीमर—यदि मेरी साँस चलती रही तो कहने का प्रयत्न करूँगा। इस वर्त्तमान सम्राट् के पितामह चतुर्थ हनरी

ने अपने भतीजे रिचार्ड (द्वितीय) को गद्दी से उतार दिया। उसके समय में उत्तरी देश के नार्थम्बरलैण्ड और उसके पुत्र हॉटस्पर ने राजा के अत्याचारों से तंग आकर मुझे गद्दी पर बिठाने का इरादा किया। मैं वास्तव में राज्य का अधिकारी था क्योंकि तीसरे एडवर्ड के पहले पुत्र का लड़का रिचार्ड सन्तानरहित मर चुका था। अब राज मेरा था क्योंकि मेरी माता एडवर्ड के दूसरे लड़के लाइनल के वंश की थी। चतुर्थ हनरी का पिता गारद एडवर्ड का तीसरा लड़का था इसलिए मेरे होते हुए उसका अधिकार नहीं था। परन्तु मेरे सहायक कृतकार्य नहीं हुए और मुझे कैद कर लिया गया। पंचम हनरी के समय में तेरे पिता केम्ब्रिज ने, जो यार्क के वंश से था, मेरी बहन अर्थात् तेरी माता से विवाह किया और मेरे कष्टों पर दया करके एक सेना इकट्ठी की। परन्तु भेद खुल जाने पर उसको प्राण दण्ड दिया गया। इस प्रकार आज मार्टीमर-कुल की समाप्ति होती है।

रिचार्ड—तो मेरे पिता जी के साथ अत्याचार किया गया।

मार्टीमर—हाँ। अब तू मेरा उत्तराधिकारी है। परन्तु सोच समझ कर काम करना चाहिए क्योंकि वर्तमान राजवंश बड़ा प्रबल हो रहा है।

अब मार्टीमर तो मर गया। और रिचार्ड ने राजसभा में आकर यार्क की जागीर के लिए प्रार्थना की। छठे हनरी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली और रिचार्ड को यार्क का ड्यूक बना दिया गया।

इसके पश्चात् ग्लोस्टर ने राजा से प्रार्थना की कि "आप फ्रांस को चलिए। वहाँ आप का राज्याभिषेक होना चाहिए। क्योंकि आप को देखकर फ्रांस के विद्रोही लोग शान्त हो जायँगे।" ऐसा विचार करके हनरी फ्रांस को प्रस्थान किया।

पेरिस पहुँच कर हनरी का अभिषेक हुआ। ग्लोस्टर सोमरसेट और रिचार्ड यार्क उसके साथ थे। अभिषेक के पश्चात् यार्क और सोमरसेट मे फिर झगडा हो गया। परन्तु हनरी ने बडी मुश्किल से उनको शांत किया, पर यद्यपि उनके मन में शत्रुता की आग भड़कती रही। इसी समय हनरी ने सुना कि बरगण्डो डौफिन से जा मिला। इस पर हनरी को बडा क्रोध आया और टालबट को उसके दमन के लिए भेजा। परन्तु कई बातों का विचार करके वह स्वयं इग्लैण्ड को लौट गया।

टालबट थोड़ी सी सेना लेकर बोर्डो की ओर चला। और नगर के फाटक को खुलवाने का इरादा किया। परन्तु नगरवासी पहले से ही अँगरेजों के विरुद्ध हो रहे थे उन्होंने टालबट की बात न सुनी और छठे हनरी का स्वत्व अङ्गीकार नहीं किया। अभी टालबट फाटक पर ही खड़ा था कि डौफिन की सेना ने आकर उसको घेर लिया।

टालबट के पास बहुत थोड़ी सेना थी और शत्रु का सामना करने में असमर्थ थी। उसने यार्क और सोमरसेट से सहायता की प्रार्थना की। परन्तु ये दोनों आपस में झगड़ा कर रहे थे, भला टालबट को कैसे सहायता भेजते। यार्क ने उद्योग भी किया कि किसी प्रकार कुछ सेना टालबट के पास पहुँचा दी जाय। परन्तु सोमरसेट ने डाह के मारे सेना भेजने में देर कर दी। क्योंकि हनरी ने रिचार्ड यार्क को फ्रांस का अध्यक्ष नियत

किया था और यदि विजय हो जाती तो इसमें टिवाई थार्क का ही नाम होता।

इस समय टाल्बट का पुत्र जौन अपने पिता से मिलने गया, टाल्बट ने सात वर्ष से इसे देखा न था और अब अपना अन्त निकट समझ कर उसने इसे इसलिए बुलाया था कि युद्ध-विद्या में कुछ शिक्षा दे सके। जौन अपने पिता से ऐसे समय मिल सका जब टाल्बट शत्रु के बीच में घिरा हुआ था। इसलिए उसने अपने पुत्र से कहा कि जल्दी से भाग जा।

जौन—"क्या मैं आपका पुत्र नहीं हूँ? क्या मैं भाग जाऊँगा? यदि आप मेरी माता से प्रेम करते हों तो मुझे रण से भगा कर उसका अपमान न कीजिए क्योंकि मुझे भागता हुआ देखकर लोग कहेंगे कि यह टाल्बट का पुत्र नहीं है।

टाल्बट—अरे भाग भाग! यदि मैं मर गया तो तू बदला ले सकेगा।

जौन—जो इस प्रकार भागेगा वह बदला कब ले सकेगा।

टाल्बट—अगर हम दोनों रहे तो दोनों मरेंगे।

जौन—तो आप जाइए। मैं यहीं रहूँगा। आपके मरने से अधिक हानि होगी। मुझे कोई नहीं जानता इसलिए मैं मरा भी तो क्या? आप की मृत्यु से सब निराश हो जायेंगे। आपके पराक्रम इतने हैं कि एक बार भागने से उनमें कमी नहीं आ सकती। परन्तु यदि पहली ही लड़ाई से मैं भाग गया तो बड़े अपयश की बात है। यदि आप भागेंगे तो लोग कहेंगे कि यह नीतिकुशल है। परन्तु मेरे भागने को लोग भय से ही सम्बद्ध करेंगे। मरना अच्छा है परन्तु अपयश के साथ जीना भला नहीं।

टाल्बट—मैं तुझे भागने की आज्ञा देता हूँ ।

जौन—मैं भाग नहीं सकता । मैं लड़ाई करूँगा ।

टाल्बट—यदि तू भाग जायगा तो तेरे पिता का नाम जीवित रहेगा ।

जौन—केवल अपयश के साथ ।

टाल्बट—पिता की आज्ञा से भागने में कुछ दोष नहीं है ।

जौन—आप तो मर जायँगे फिर इसकी साक्षी कौन देगा । यदि मृत्यु का ऐसा ही भय है तो हम दोनों भाग चलें ।

टाल्बट—फिर मेरे साथियों का क्या हाल होगा ? मेरी श्वेत डाढ़ी में धब्बा लग जायगा ।

जौन—फिर मेरी युवावस्था में क्यों धब्बा लगे ? मैं आप के पास से नहीं जा सकता । चाहे ठहरिए चाहे जाइए ।

टाल्बट—अच्छा, यहीं रहेंगे । और यदि भागेंगे तो साथ साथ स्वर्ग को भागेंगे ।

अब युद्ध हुआ और बाप बेटे दोनों इस वीरता से लड़े कि शत्रु के दाँत खट्टे हो गये । यदि सोमरसेट और यार्क की सहायता पहुँच जाती तो फरांसीसियों की अवश्य हार होती । परन्तु अकेला टाल्बट क्या क्या करता । जौन का युद्ध दर्शनीय था । वह जिस ओर से निकल जाता था शत्रु के दल के दल खाली हो जाते थे और काई सी फट जाती थी । एक बार जौनडार्क ने जौन से कहा कि "आ मुझसे लड़ ।" परन्तु उसने बड़े अभिमान के साथ उत्तर दिया कि "अँगरेज वीर अबला स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते" यह कहकर वह उसकी ओर से चला गया । एक बार शत्रु ने उसे घेर लिया । परन्तु टाल्बट ने आकर उसे बचा लिया । इस प्रकार घण्टों लड़ते लड़ते यह दोनों थक गये और पहले जौन मारा गया फिर टाल्बट घायल होकर मर

गया। इन दोनों की मृत्यु पर फरासीसियों को बड़ी खुशी हुई क्योंकि अब अँगरेजों के दल में कोई ऐसा बाकी नहीं रहा था जो विजय पा सके। यद्यपि कई वीर पुरुष अभी जीवित थे। परन्तु फूट और डाह के मारे उनकी योग्ता निकम्मी हो रही थी। अब चार्ल्स फ्रांस का राजा हो गया।

परन्तु अभी लड़ाई बन्द न हुई और पैंजीर्स के युद्ध में रिचार्ड यार्क ने जेन डार्क को पकड़ लिया। फरासीसी सेना भाग गई और किसी ने इस युवती के छुड़ाने का प्रयत्न नहीं किया जिसने फ्रांस को अँगरेजों के स्वत्व से मुक्त किया था।

अँगरेजों ने इस अबला के साथ बड़ा अन्याचार किया। उस पर जादूगरनी होने का दोष लगाया गया। उस समय जादू करना बड़ा दोष माना जाता था और जिस पर इसका सन्देह होता था उसको जीते जी जला दिया जाता था। यही हाल जेन डार्क के साथ हुआ। बहुत से पादरियों ने बैठ कर उसको इसी दण्ड के योग्य ठहराया और बहुत बड़ी अग्नि जला कर उसे उस पर फेंक दिया। इस प्रकार इस प्रवीरा कुमारी का जीवन समाप्त हुआ जिसने अपने पराक्रमों से अच्छे अच्छों के दाँत खट्टे कर दिये थे। फरासीसियों की कृतघ्नता और अंगरेजों के निर्दयीपन ने एक विचित्र आत्मा को संसार से उठा लिया।

इसी युद्ध में एंजू के राजा की लड़की मारगरेट अँगरेजी योद्धा सफोक के हाथ लग गई। मारगरेट बड़ी रूपवती थी। उसके रूप को देखकर सफोक का चित्त उसकी ओर आकर्षित हो गया। परन्तु उसका विवाह हो चुका था इसलिए मारगरेट के साथ सम्बन्ध करना असम्भव था। अतएव उसने यह विचार किया कि इस युवती को इङ्गलैण्ड की महारानी बनाना

चाहिए । मारगरेट ने इस बात को स्वीकार कर लिया । और उसके पिता से इस शर्त पर सन्धि हो गई कि उसको ऐंजू का राज लौटा दिया जाय ।

सफोक ने इङ्गलेण्ड में आकर राजा हनरी को इसके लिए राजी किया । उधर राम से पोप ने भी आग्रह किया कि फ्रांस और इङ्गलेण्ड के युद्ध में सहस्रो ईसाइयों का रक्तपात होता है । इसलिए सन्धि हो जानी चाहिए ।

यद्यपि ऐसे समय मे जब इङ्गलेण्ड के हाथ से फ्रांस का बहुत सा भाग निकल चुका था और यार्क को जेन के मर जाने से फिर कुछ आशा हो चली थी कि गया हुआ राज फिर लौट आवे उसे यह सन्धि अच्छी नही लगी, परन्तु उसका कुछ बस नही चला । वह कहने लगा—

"क्या हमारे सब कष्टो का यही परिणाम निकला । क्या इतने सेनापतियों तथा योद्धाओ की मृत्यु के पश्चात् जिन्होंने केवल अपने देश के हित के लिए अपने शरीरो का बलिदान कर दिया, हम इस अपमान के साथ सन्धि करेंगे । क्या झूठ, कपट छल तथा विद्रोह के कारण हमने फ्रांस के बड़े बड़े प्रान्त हाथ से नहीं दे दिये, जिनको हमारे पूर्वजों ने रक्त बहाकर जीता था । शोक ! शोक !"

परन्तु अब हो क्या सकता था । यह सन्धि केवल पोप के आग्रह से की गई थी और विंचेस्टर का लार्ड पादरी, जो ग्लोस्टर का बड़ा शत्रु था, पोप के इस प्रस्ताव का कारण था । चार्ल्स डौफिन भी यही चाहता था कि जिस प्रकार हो सके सन्धि हो जाय, क्योंकि इस समय मुख्य मुख्य प्रदेश उसके हाथ लग चुके थे । इसलिए इस शर्त पर सन्धि हुई कि चार्ल्स डौफिन सदा हनरी का मित्र रहेगा और उसकी आज्ञा पालन

क्रिया करेगा और कभी इङ्गलैण्ड नरेश से बैर न करेगा। यह शर्तं केवल नाम मात्र थी क्योंकि सब प्रसिद्ध स्थान चार्ल्स के हाथ में थे, अंगरेजों को कर लेने का भी अधिकार न था। अब सिवा कैले के और कोई फ्रांस देशीय स्थान उनके पास नहीं रहा था। परन्तु अब यहाँ उस युद्ध की समाप्ति होगई जो एडवर्ड (तृतीय) के समय में आरम्भ हुआ था और जिसको शताब्दीय युद्ध (HUNDRED YEARS, WAR) कहते हैं।

छठे हनरी की मारगरेट के साथ शादी हो गई और इसके बदले में ऐंजू और मेन नामी दो प्रान्त उसके पिता को दे दिये गये।

——:o:——

छठा हनरी

दूसरा भाग

(HENRY VI. PART II.)

हम प्रथम भाग में बता चुके हैं कि छठे हनरी और डौफिन चार्ल्स से सन्धि हो गई। अब चार्ल्स डौफिन नहीं रहा किन्तु फ्रांस का सम्राट् हो गया। मारगरेट सफ़ोक के साथ इङ्गलैण्ड में आई जिसका हनरी ने बड़े समारोह से स्वागत किया और भरी सभा में सब मन्त्रियों ने अपनी इस नई महारानी को प्रणाम किया। सब ने उसकी चिरायु के लिए असीस दी। इसके पश्चात् सन्धिपत्र पढ़ा गया जिसमें लिखा हुआ था।—

"फ्रांसनरेश चार्ल्स * और इङ्गलैण्डनरेश हनरी के पल्ची विलियम डीलापूल सफ़ोक के मध्य में यह सन्धिपत्र लिखा गया कि हनरी का विवाह नेपिल्स, सिसली और जरूसलम के राजा की पुत्री मारगरेट से हो और १३ वीं मई से पहले पहल वह इङ्गलैण्ड की महारानी बनाई जाय। और एँजू और मेन जो पहले इसके पिता के अधीन थे फिर उसे लौटा दिये जायें। और मारगरेट हनरी के खर्च पर इङ्गलैण्ड को लाई जाय। यह भी निश्चित हुआ कि उसे कुछ यौतुक न दिया जाय"।

---

* सफ़ोक का पूरा नाम विलियम डीलापूल था।

हनरी ने इस पर बड़ा हर्ष प्रकट किया और डीलापूल को, जो अब तक सफोक का* मार्किसही था, ड्यूक बना दिया और मारगरेट को महारानी बनाने के लिए बड़ी बड़ी तैयारियाँ की। परन्तु इस विवाह तथा सन्धि से हनरी के मन्त्रिगण ख़ुश नहीं हुए। ग्लोस्टर, सालसबरी, वारिक विंचेस्टर का पादरी और रिचार्ड यार्क ये सब लोग लदन्न के राजमहल में बैठे बैठे इस प्रकार वार्त्तालाप करने लगे :—

ग्लोस्टर—"इङ्गलैण्ड के मन्त्रिगण! राज्य के स्कन्ध! मैं आपके सम्मुख अपना दुःख प्रकाशित करता हूँ। यह केवल मेरा ही दुःख नहीं है किन्तु आप का और समस्त जाति का दुःख है। क्या मेरे भाई ने वीरता, धन तथा सेना इस फ्रांस की विजय के लिए अर्पण नहीं की थी। क्या उसने जाड़े और गर्मी में इसी के लिए कष्ट नहीं सहे। क्या बेडफोर्ड ने इसीलिए अपने प्राण नहीं दिये। क्या वीर यार्क, सालसबरी वारिक, आप लोगों ने फ्रांस और नारमण्डी के रणक्षेत्रों में घाव नहीं खाये? यदि ऐसा है तो क्या इन सब कष्टों का यही परिणाम होना था? हम लोग रात दिन कोशिश करते करते थक गये कि किसी प्रकार फ्रांस हाथ से न जाय। परन्तु इन सब का परिणाम यह हुआ कि अपयश सूचक सन्धि करनी पड़ी। क्या इस विवाह से भी अधिक घृणित कोई बात हो सकती थी जिसने हम सबकी वीरता को पानी में मिला दिया। आज कई पीढ़ियों की वीरता का चिह्न फ्रांस से मिट गया।

सालसबरी—ईसा की सौगन्ध ऐंजू और मेन नारमण्डी की

*मार्किस का पद ड्यूक से नीचा होता है।

कुंजियाँ थीं और यह हाथ से चली गईं।

वारिक—मुझे तो रोना आता है कि अब फ्रांस को कभी न ले सकेंगे। हाय! जो देश मैंने घाव खाकर जीते थे वे बात की बात में दे दिये गये।

यार्क—यह सब इसलिए है कि अब सफोक की चलती है। मेरी चलती होती तो मैं कभी इस सन्धि का अनुमोदन न करता चाहे मेरी बोटी बोटी उड़ जाती। मैंने किसी इतिहास मे नही पढा कि किसी इङ्गलैण्ड नरेश का विवाह बिना यौतुक के हुआ हो। यहाँ हमारा सम्राट् अपनी रानी के बदले अपने देशों को बेच रहा है।

ग्लोस्टर—विवाह क्या है हास्य है। देखो सफोक इसके मार्ग-व्यय का कितना रुपया माँगता है। इससे तो वह फ्रांस मे ही क्यों न रह गई।

विंचेस्टर का पादरी—आप बहुत गर्म हो रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारे सम्राट् की यही इच्छा थी?

ग्लोस्टर—मैं आपकी इच्छा को भले प्रकार समझता हूँ। न केवल मेरी बात ही आपको बुरी लगती है किन्तु मेरी उपस्थिति से भी आप को दुःख होता है। अभिमानी पादरी! आप के चहरे से क्रोध के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यदि मैं यहाँ रहा तो न जाने क्या मुँह से निकल जाय, इसलिए जाता हूँ।

ग्लोस्टर तो चला गया अब विंचेस्टर के पादरी ने कहा—

"ग्लोस्टर महाशय बड़े क्रोध मे जाते हैं। आप लोग जानते हैं कि इसको मुझसे बैर है। न केवल मुझसे ही किन्तु आप सब से। यह हनरी के वंश में निकटतम है और सन्तानाभाव की अवस्था में उसका उत्तराधिकारी भी यही है। इसीलिए

यह सब कोप है। आप सब लोग सावधान रहिए और इसकी बातों में न आइए, यद्यपि साधारण लोग इसको "भला! भला!" कहते हैं परन्तु मुझे तो इससे भय होता है।

बकिङ्घम—यदि ऐसा है तो हम लोग इसको राजा का सरक्षक न रहने देंगे। हम सब इसको निकाल बाहर करेंगे।

यह कह कर बकिङ्घम और पादरी सफोक की सम्मति लेने के लिए चले गये। रिचार्ड यार्क अपने मन में सोचने लगा कि "ऐञ्जू और मेन तो हाथ से निकल ही गये, पेरिस छिन गया। नार्मण्डी भी गया ही सा है। लोगों ने सन्धि करली। हनरी ने एक राजा की कन्या के लिए दो राज्य दे दिये। परन्तु इसमें इनका क्या दोष है। हराम का माल हराम में जाता है। यह लोग अपना क्या दे रहे हैं! है सो सब मेरा है। लुटेरे लोग अपनी लूट को बडी उदारता से व्यय करते हैं। इष्ट मित्रों को खिलाते हैं। रण्डी मुण्डियों को लुटाते हैं। बिचारा माल वाला हाथ पर हाथ धर कर रोता है। यही रिचार्ड* यार्क का हाल है। मुझे एक दिन फ्रांस मिलने की आशा थी। वह तो जाती रही। अब इङ्गलैण्ड लेने की कोशिश करनी चाहिए।" यह विचार कर उसने इरादा किया कि आपस के झगडों से लाभ उठावे। क्योंकि उसे विश्वास था कि ग्लोस्टर आदि में अवश्य झगडा होगा।

थोडे दिन पीछे फ्रांसदेशीय प्रान्तों के अध्यक्ष पद के लिए झगडा हुआ। पहले बेडफर्ड फ्रांस का अध्यक्ष था। दो आदमी अर्थात् सोमरसेट और यार्क इस पद के इच्छुक थे। ग्लोस्टर

---

* हम प्रथम भाग में दिखा चुके हैं कि राजगद्दी वास्तव में रिचार्ड यार्क की थी (देखो मार्टीमर का वार्त्तालाप)।

यार्क की ओर था परन्तु सफोक सोमरसेट को चाहता था'। दूसरी ने कहा—

"महाशयो ! मेरे लिए तो जैसा यार्क वैसा सोमरसेट। जो चाहे अध्यक्ष हो मुझे कुछ नहीं कहना।"

यार्क—यदि मैंने फ्रान्स में कोई अयोग्य कार्य्य किया हो तो आप मुझे अध्यक्ष नियत न कीजिए।

सोमरसेट—यदि मैं इस पद के अयोग्य हूँ तो यार्क को अध्यक्ष कर दिया जाय ! मैं उसके अधीन रहूँगा।

वारिक—चाहे आप योग्य हों या अयोग्य ! यार्क को अध्यक्ष होना चाहिए।

विंचेस्टर का पादरी—वारिक ! अपने बड़ों को बोलने दे।

वारिक—रणक्षेत्र में पादरी बड़े नहीं होते।

सालसबरी—अच्छा बताइए, सोमरसेट को क्यों अध्यक्ष होना चाहिए ?

रानी मारगरेट—क्योंकि राज यही चाहते हैं।

ग्लोस्टर—महाराज स्वयं इतने बड़े हैं कि अपनी इच्छा प्रकट कर सकते हैं। राज-काज में स्त्रियों की आवश्यकता नहीं।

मारगरेट—अगर महाराज बड़े हैं तो आपके संरक्षक होने की क्या आवश्यकता है।

ग्लोस्टर—महारानी ! मैं राज का संरक्षक हूँ। और महाराज की इच्छानुसार इस पद को छोड़ सकता हूँ।

सफोक—तो छोड़ क्यों नहीं देते ? तुम्हीं अब तक राज कर रहे हो। तुम्हारे शासन में देश की बड़ी अवनति हुई है। तुम्हारे ही शासन में डौफिन ने फ्रांस का इतना भाग ले लिया। और सब प्रसिद्ध पुरुष आज तुम्हारे दास बन रहे हैं।

विंचेस्टर का पादरी—तूने प्रजा को लूट लिया और 'धर्म* धन नष्ट कर दिया।

सोमरसेट—और राज-कोष तेरे मकान और तेरी स्त्री के बहुमूल्य कपड़ों की भेंट हो गया।

मारगरेट—और तूने नगर के नगर फ्रांस में शत्रु के हाथ बेच दिये।

सफ़ोक—मैं सिद्ध करूँगा कि यार्क इस पद के लिए सब से अनुचित मनुष्य है।

यार्क—मैं ही क्यों न कह दूँ। सब से पहली अयोग्यता तो यही है कि मैं तेरी खुशामद नहीं कर सकता। दूसरी बात यह कि अगर मैं इस पद पर नियत भी हो गया तो सोमरसेट धन और सेना मेरी सहायता को न भेजेगा और डाफिन रहा सहा देश भी ले लेगा। यही हाल तो पेरिस का हुआ था।

बहुत झगड़े के पश्चात् सोमरसेट फ्रांस के अँगरेजी प्रान्तों का अध्यक्ष नियत हुआ।

अब ग्लोस्टर के अधःपतन की बारी आई। यद्यपि ग्लोस्टर राजभक्त था परन्तु उसकी स्त्री एलीनर ऐसी न थी। वह लेडी मैकबिथ की भाँति इङ्गलैण्ड की महारानी होना चाहती थी। एक दिन जब ग्लोस्टर अपने घर में बैठा हुआ कुछ सोच विचार कर रहा था तब एलीनर ने कहा—

"स्वामिन्, किस सोच में हो! आज आपका सिर पके खेत की भाँति क्यों झुक रहा है। आज आपकी आँख पृथ्वी पर क्यों

---

* यह कर जो धर्मसंस्था (Church) की ओर से प्रजा पर धर्मार्थ के लिए लगाया जाता है।

लगी हुई है ? आप क्या देख रहे हैं ? क्या आपकी दृष्टि हनरी के राजमुकुट पर है। यदि ऐसा है तो प्रयत्न कीजिए और राज-मुकुट धारण कीजिए। हाथ बढ़ाइए और मुकुट उतार लीजिए हम तुम दोनों इङ्गलैण्ड पर राज करेंगे!

ग्लोस्टर—प्यारी! यदि तुम अपने पति से प्रेम करती हो तो ऐसे विचारों को अपने अन्तःकरण से दूर कर दो! ईश्वर न करे कि अपने महाराज से मैं विरोध करूँ मेरे दुःख का कारण भयानक स्वप्न है जो मैंने रात देखा है। मैंने देखा कि मैं सरक्षण से पृथक् कर दिया गया और सफोक और सोमरसेट मेरे स्थानापन्न हो गये।

एलीनर—यह कुछ भी नहीं है। मैंने रात यह देखा कि मैं और तुम राजमुकुट पहने हुए बैठे हैं और हनरी तथा मार-गरेट हमको प्रणाम कर रहे हैं।

ग्लोस्टर—एलीनर! एलीनर। ऐसे विचारों को दूर कर। क्या तू अपना और अपने पति का नाम विद्रोहियों में लिखाना चाहती है। हे ईश्वर! मेरी रक्षा कर।

यह कहकर ग्लोस्टर तो चला गया परन्तु एलीनर अपनी सी कोशिश करती रही। उसने सगुन लेने वालों को बुलाया जिन्होंने कहा कि "हनरी मारा जायगा।" फिर उसने सफ़ोक के विषय में पूछा। उन्होंने सगुन विचार कर कहा "कि समुद्र के बीच में उसकी मृत्यु होगी।" सोमरसेट के सम्बन्ध में सगुन यह निकला कि वह नगर छोड़कर बराबर बनवास करे। एलीनर इस सगुन को निकलवा रही थी बकिङ्घम ने उसकी बातें सुनली और राजा हनरी से सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया।

अब क्या था मारगरेट तो पहले से ही उसके विरुद्ध हो रही थी। उसने सफ़ोक से कई बार कह दिया था कि जिस

प्रकार हो सके ग्लोस्टर के संरक्षण से महाराज को मुक्त करना चाहिए।भरी सभा में एलीनर पर विद्रोह का अपराध लगाया गया। और जीवन पर्यन्त के लिए मान टापू में कैद करदी गई।

इसके पश्चात् हनरी ने ग्लोस्टर को संरक्षक पद से अलग कर दिया और स्वतन्त्र होगया। इस प्रकार ग्लोस्टर ने जो स्वप्न देखा था वह ठीक हो गया। और उसके अध पतन में केवल इतनी ही कसर रही थी कि अभी उसके प्राणों पर हस्ताक्षेप नहीं किया गया। परन्तु अब उसकी भी बारी आई। हनरी ने बेरी नामीनगर में राजसभा की और ग्लोस्टर को बुलाया। जिस समय ग्लोस्टर ने निमन्त्रण की सूचना पाई उसी समय उसका माथा ठनकने लगा। क्योंकि इस सभा के करने में उसकी सम्मति नहीं ली गई। वह समझ गया कि अवश्य दाल मे कुछ काला है। बेरी में राजसभा हुई। राजा, रानी, विंचेस्टर का पादरी, सफोक, यार्क, बकिङ्घम और अन्य प्रतिष्ठित पुरुष बैठे हुए थे। उनके सामने राजा ने कहा—

"ग्लोस्टर अभी नहीं आये। वह तो कभी पीछे नहीं रहते थे। न जाने क्या कारण हुआ?"

मारगरेट—क्या तुम देखते नहीं हो कि थोडे दिनों से उसकी क्या दशा हो रही है। उसका मुँह कैसा चमकता जाता है। और वह कैसा अभिमानी होता जाता है। हम उसे उस समय से जानते हैं जब वह आज्ञा पालन में तत्पर रहता था। क्या आपने देखा नहीं था, कि टेढी आँख होते ही उसका सिर झुक जाता था। और समस्त सभा उसकी राजभक्ति की प्रशंसा

करती थी। परन्तु अब उसका हाल ही और है। प्रातःकाल को सब लोग प्रणाम दण्डवत् किया करते हैं परन्तु यदि हम ग्लोस्टर को मिल जाय तो वह नाक-भौं चढ़ा लेता है। और उचित प्रणाम भी नहीं करता। छोटे पिल्लों के गुर्राने का कोई खयाल नहीं करता परन्तु शेरों की धाड़ से बड़े बड़े लोग डर जाते हैं। आप जानते हैं कि ग्लोस्टर कोई छोटा आदमी नहीं है जिसके क्रोध का कुछ खयाल न किया जाय। पहले तो वह वंश के खयाल से आप से निकटतम है। यदि दुर्भाग्यवश आप को कुछ हो जाय तो वह झट गद्दी पर चढ़ बैठेगा। इसलिए उसके विचारों को देखे मुझे तो यही उचित मालूम होता है कि आप उसे अपने पास न आने दीजिए और अपने मन के भावों को उस पर प्रकट न कीजिए। उसने खुशामद से सर्वसाधारण के हृदय को आकर्षित कर लिया है और मुझे भय है कि यदि कहीं उसने सिर उठाया तो सब लोग उसे सहायता देंगे। अभी तो बेटी बाप के है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। विद्रोह की जड़ें अभी गहरी नहीं जमीं। परन्तु यदि इनके उखाड़ने का प्रबन्ध न किया गया तो विद्रोहरूपी वृक्ष अपने विषैले फल दिये बिना न रहेगा। सफोक, बकिङ्घम और यार्क! मैं आप लोगों से सविनय पूछती हूँ कि यदि मेरा कहना असत्य हो तो मुझे ठीक रास्ते पर लाइए।

सफोक—महारानी जी ने ठीक कहा है। यदि मुझे आज्ञा दी जाती तो मैं भी आपके ही कथन को कहता। इसकी स्त्री तो महाराज के मारने का ही प्रयत्न कर रही थी। वह अपने किये को पहुँच गई। परन्तु अब ग्लोस्टर से

सावधान रहना चाहिए। गहरी जगह में नदी बिना किसी कोलाहल के बहती है। जब लोमड़ी मेमने को पकड़ती है तो भौंकती नहीं। यही हाल ग्लोस्टर का है। न जाने इस चुप्पे के मन में क्या क्या बातें काम कर रही हैं।

विंचेस्टर का पादरी—क्या उसने नियम विरुद्ध छोटे छोटे दोषों के लिए लोगों को प्राण दण्ड नहीं दिया?

यार्क—और क्या अपने संरक्षण के समय में उसने फ्रांस भेजने के लिए प्रजा पर अनुचित कर नहीं लगाया जिसको उसने कभी नहीं भेजा और जिसके कारण नगर के नगर विरुद्ध हो गये?

बकिंहम—यह दोष तो बहुत तुच्छ है। अभी इनसे भी बड़े बड़े अपराध हैं जिनसे ग्लोस्टर का हृदय कलङ्कित है और जिनको आप लोग नहीं जानते।

हनरी—महाशयो! मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आप मुझसे इतना प्रेम रखते हैं और मेरे मार्ग से कण्टक-निवृत्ति की कोशिश करते हैं। परन्तु मेरा अन्तःकरण यही कह रहा है कि ग्लोस्टर निर्दोष है। वह इतना कोमल-हृदय है कि उसके आत्मा में मेरे अहित की बात नहीं आ-सकती। वह तो हंस के समान अपराध रहित है।

मारगरेट—इस अज्ञान से अधिक हानिकारक क्या हो सकता है? आप उसे हंस कहते हैं। परन्तु उसने वास्तव में हंस के पर लगा लिये हैं, उसकी आन्तरिक दशा बगले के समान है। छली पुरुष इसी प्रकार अपने छलों को छिपाया करते हैं। हमारा भला इसी में है कि इसे दुष्ट को अलग कर दिया जाय।

इस समय सोमरसेट आया और उसने यह कुसमाचार सुनाया कि फ्रांस के रहे सहे प्रान्त भी हाथ से निकल गये। इसके पश्चात् ग्लोस्टर आया और कहने लगा—

"महाराज की जय हो! श्रीमान् मुझे क्षमा करें। आने में कुछ देर होगई।"

सफोक—नहीं ग्लोस्टर! आप जल्दी आये हैं। यदि आप राजभक्त होते तो अवश्य हम आपसे देरी की शिकायत करते। परन्तु अब मैं आप को विद्रोह के कारण पकड़ता हूँ।

ग्लोस्टर—मुझे इस से कुछ भी भय नहीं है। क्योंकि शुद्ध-हृदय मनुष्य कभी नहीं डरते। शुद्ध से शुद्ध नदी भी इतना शुद्ध नहीं होती जितना मेरा अन्तःकरण विद्रोह से शुद्ध है। मुझ पर कौन दोषारोपण कर सकता है?

यार्क—आप पर यह दोष लगाया गया है कि फ्रांस में आपने रिशवत ली और सेना को वेतन नहीं दिया जिस से महाराज की सेना पराजित हो गई।

ग्लोस्टर—कौन है जो यह बात कहता है? मैंने कभी सेना को वेतन से वञ्चित नहीं किया! और न कभी एक पाई तक रिशवत ली। ईश्वर जानता है कि मैं इङ्गलैण्ड के हित के लिए रातों रात जागते हुए विचार करता रहा हूँ। यदि मैंने एक पैसा भी अनुचित रीति से लिया हो तो ईश्वर न्याय के समय मुझे दण्ड दे। यही नहीं मैंने बहुत सा अपना रुपया सेना को केवल इसलिए दे दिया कि कहीं प्रजा पर अधिक कर न लगाना पड़े। और कभी इस रुपये को माँगा तक नहीं।

विंचेस्टर का पादरी—यही कथन आप का हितकर है।
ग्लोस्टर—ईश्वर जानता है कि मैं सत्य कहता हूँ।
यार्क—अपने संरक्षण के समय अपने अपराधियों को ऐसे कठोर दण्ड दिये कि इङ्गलेण्ड कठोरता के लिए बदनाम हो गया!
ग्लोस्टर—सब लोग जानते हैं कि यदि मेरे शासन का कोई दोष था तो नम्रता! अपराधी के अश्रुपात पर मेरा हृदय पिघल जाता था। हाँ मनुष्य-हत्या के बदले में अवश्य प्राण दण्ड देता था।
सफोक—श्रीमन्, इन दोषों का उत्तर तो आप सरलता से दे सकते हैं। परन्तु आप पर तो इनसे भी घोरतर अपराध लगाये गये हैं जिनसे आप का जल्दी छुटकारा नहीं हो सकता। इसलिए मैं आप को पकड़ कर पादरीजी के हवाले करता हूँ।
हनरी—लार्ड ग्लास्टर! मुझे पूर्ण आशा है कि आप इन दोषों को असत्य सिद्ध कर देंगे, क्योंकि मेरा अन्तःकरण कह रहा है कि आप निर्दोष हैं।
ग्लोस्टर—महाराज! यह समय बड़ा बुरा है। ऐश्वर्य की इच्छा ने शुभ गुणों को छिपा रक्खा है। लोगों से दया का भाव उठ गया। श्रीमान के देश से न्याय का अभाव हो गया। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरे प्राण लेना चाहते हैं। यदि मेरी मृत्यु से इस देश में शान्ति हो जाय तो मैं बड़ी खुशी से प्राण देने को उद्यत हूँ। परन्तु मेरी मृत्यु इन लोगों के अत्याचारों की भूमिका है। पादरी की लाल लाल आँखें मेरे कथन को पुष्ट कर रही हैं। सफोक की चढ़ी हुई भौंहें उसके वैर-भाव को प्रकट कर रही हैं,

बकिङ्घम की वाणी उसके अन्तःकरण को दिखा रही है और यार्क की इच्छा मेरी जान लेने की है। और हे महारानी जी! आपने विना किसी कारण के मेरे सिर पर अनेक दोष आरोपण कर दिये हैं। मैं यह नहीं चाहता कि झूठे साक्षी इकट्ठे किये जायें। लोकोक्ति है कि "कुत्ते को मारने के लिए लकड़ी मिल ही जाती है।"

पादरी—महाराज! इसकी गालियाँ असह्य हो रही हैं। यदि आपके रक्षकों को इस प्रकार कोसा जाय और कोसने वाले से कुछ न कहा जाय तो न जाने क्या परिणाम हो!

सफोक—क्या इस दुष्ट ने महारानी जी को झूठा कह कर उनका अपमान नहीं किया?

मारगरेट—परन्तु मैं दुःखी मनुष्य को आज्ञा देती हूँ कि जो चाहे सो कहे।

ग्लोस्टर—ठीक कहा! मैं अवश्य दुःखी हूँ।

बकिङ्गम—यह तो बातें बना कर दिन भर बिता देगा। इसलिए पादरी जी! इसे पकड़ लीजिए।

ग्लोस्टर—आज हनरी प्रबल होने से पूर्व ही अपने सहारे को नष्ट किये देता है। आज भेड़िये गड़रिये को भेड़ों के पास से भगाये देते हैं। हनरी! आज मुझे अपना भय नहीं, किन्तु तेरे प्राणों का भय है, क्योंकि ये भेड़िये पहले तुझे ही काटेंगे।

अब ग्लोस्टर को तो लोग पकड़ कर ले गये। परन्तु हनरी शोक के मारे उठने लगा। मारगरेट ने कहा "क्या आप राज-सभा से जाते हैं?"

हनरी—हाँ मारगरेट! मेरा हृदय शोक से पूरित हो रहा है। मेरे आँसू निकले आ रहे हैं। मेरा शरीर दुःख से प्रसित

हो रहा है। क्योंकि अशान्ति से अधिक और क्या दुःख हो सकता है। ग्लोस्टर! मुझे तो तू सच्चा और राजभक्त मालूम होता है। परन्तु हा! कैसे बुरे ग्रह आये हैं कि ये सब लोग, यहाँ तक कि महारानी मारगरट भी तेरी जान लेना चाहती हैं। तूने इनका कुछ नहीं बिगाड़ा। जिस प्रकार कसाई बछड़े को बाँधते हैं और यदि वह भागता है तो उसे मारते हैं इसी प्रकार ये लोग तेरे साथ व्यवहार करते हैं। हाय! मैं तो यही कहूँगा कि ग्लोस्टर सच्चा राजभक्त है।

यह कहकर हनरी तो सभा से उठ गया, परन्तु बाकी लोगों ने निश्चय कर लिया कि ग्लोस्टर को मार डालना चाहिए। पहले तो नियमानुसार उस पर अभियोग चलाने का विचार हुआ। परन्तु मारगरेट इस से सहमत न हुई। क्योंकि उसे डर था कि हनरी ग्लोस्टर को बचाने की कोशिश करेगा। इसलिए यह सलाह हुई कि उसे गुप्त रीति से मरवा डालना चाहिए। इस विचार के अनुकूल सफाक ने घातकों द्वारा उसे मरवा डाला।

इसी समय यह भी खबर मिली कि आयर्लेण्ड के लोगों ने सिर उठाया है और बहुत से अँगरेज राजपुरुषों को मार डाला। उनके दमन के लिए यार्क बहुत सी सेना के साथ भेजा गया। यार्क इस काम से बहुत खुश हुआ, क्योंकि इसकी इच्छा किसी तरह राज्य लेने की थी। उसने यह भी इरादा किया कि केण्ट के एक प्रसिद्ध पुरुष केड के द्वारा वह इङ्गलैण्ड में विद्रोह मचाने और अवसर मिलने पर अपनी सेना-सहित आकर हनरी को राजगद्दी से च्युत कर दे।

जब हनरी को यह पता लगा कि ग्लोस्टर मारा गया तो ‍से बहुत शोक हुआ। यद्यपि सफोक और मारगरेट उसकी त्या को छिपाने लगे, परन्तु राजा को विश्वास हो गया कि ह काम पादरी और सफोक की सलाह से हुआ है। उसकी त्यु को सुनते ही राजा मूर्छा खाकर गिर पड़ा। जिस समय सकी आँख खुली तो सफोक उससे कह रहा था "महा-ाज! सन्तोष कीजिए।" हनरी ने उत्तर दिया 'अरे सफ़ोक! ा तू मुझे सन्तोष दिलाता है। अरे! अपने विष को मीठी ातों से क्यो छिपाता है? इन हाथों से मुझे मत छू, क्योंकि ह मुझे साँप के समान काटे खाते है। अरे तू मुझे मत देख, ोंकि तेरी आँखों से मुझे डर लगता है। हाय तूने ग्लोस्टर ा मार डाला।"

मारगरेट—आप सफोक को क्यों कहते है। यद्यपि सफोक ौर ग्लोस्टर मे शत्रुता थी परन्तु सफोक को उसकी मृत्यु पर ोक है। यदि आज ग्लोस्टर जी जाय तो मै रोते रोते अपनी ाँखें फोड़ दूँ।

जिस समय हनरी इस प्रकार दुःख प्रकट कर रहा था, लोस्टर की मृत्यु की खबर नगर में फैल रही थी। समस्त प्रजा लोस्टर को प्यार करती थी। लोगो को पता लग चुका था कि ादरी और सफ़ोक ने उसे मरवा डाला है। इसलिए वे सब कट्ठे होकर राजमहल पर आये और सालसबरी और वारिक े द्वारा राजा को सदेसा भेजा कि या तो सफोक को अभी ाणदण्ड दे दिया जाय या उसे सदा के लिए देश से निकाल दिया जाय। नही तो हम अभी द्वार तोड़कर सफोक को निकाल लेंगे और पत्थरो से उसका सिर कुचल देंगे। जिस समय हनरी यह सोच रहा था कि क्या किया जाय, उस समय

लोगों की भीड़ राजमहल के दरवाजे पर कोलाहल कर रही थी। अन्त में हनरी ने सफोक को देश-निकाला दे दिया। मारगरेट ने उसकी बहुत सिफ़ारिश की, परन्तु हनरी ने उसकी बात न सुनी और हुक्म दे दिया कि यदि सफोक परसों तक इङ्गलैण्ड में पाया गया तो उसका सिर काट लिया जायगा। इस प्रकार ग्लास्टर के घातकों में से एक तो देश से निकल गया। अब दूसरे का हाल सुनिए।

विंचेस्टर का पादरी ग्लोस्टर की मृत्यु के पश्चात ही उन्मत्त हो गया। ईश्वर ने स्वयं ही उसे दण्ड देना चाहा। वह आत्म-अनुताप के मारे चिल्लाने लगा। राजा और अन्य पुरुष उसके पलंग के पास पहुँचे, परन्तु उसने किसी को नहीं पहचाना और ग्लोस्टर की मृत्यु के विषय में बकवाद करता रहा। उसकी अन्त समय की बातचीत यह प्रकट कर रही थी कि निस्सन्देह ग्लोस्टर की मृत्यु का कारण यही था। अन्त में राजा ने कहा—

"पादरी! ईश्वर से क्षमा माँग और अपने हाथों को जोड़" परन्तु इस पादरी का जीवन ऐसा पापमय था कि अन्त समय ईश्वर का नाम भी उसके मुँह से न निकला और उसके हाथ भी आकाश की ओर न उठे। वह इसी दुःख में समाप्त हो गया। हनरी पर इसकी मृत्यु का बड़ा प्रभाव पड़ा और जब वारिक ने कहा "कि इस बुरी मौत से मालूम होता है कि इसने कितने पाप किये थे।" तो राजा ने उत्तर दिया "हम कुछ नहीं कह सकते! क्योंकि वारिक! हम सब पापी हैं।"

सफोक को भी फ्रांस में ईश्वर ने सुरक्षित न रहने दिया। क्योंकि थोड़े ही दिनों में वह कैद कर लिया गया, और एक नाव पर लोग उसे कैण्ट में ले आये, जहाँ वह अपने शत्रु विट-

मोर के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यह सगुन ठीक हो गया कि सफोक समुद्र में मरेगा।

हम ऊपर कह चुके हैं कि यार्क ने आयर्लेण्ड को चलते समय कैण्ट के एक मनुष्य केड को विद्रोह के लिए उभार दिया था। इसलिए अब उसने बहुत से आदमियों को इकट्ठा कर लिया और लन्दन पर चढ़ाई करने की तैयारी करली। उसके दल में बहुत से गवाँर मिल गये और केड ने उनके हृदयों को बहुत सी विचित्र आशाओं से भर दिया। उसके साथियों में डिक नामी क़साई और स्मिथ नामी जुलाहा भी था। इनके अतिरिक्त बहुत से नीच जातियों के आदमी थे। उसने अपने लिए एक गढन्त यह गढ़ी कि मेरा बाप लाइनल क्लेरेंस का पुत्र था, जिसे बालकपन में कोई चुरा कर ले गया था, इसलिए उसने राज (विश्वकर्मा) का काम करना आरम्भ किया, और कैण्ट में रहने लगा। इस अद्भुत वंशावलि के द्वारा उसने अपने को राज का अधिकारी प्रकट किया और अपने साथियों से कहा कि अगर मैं राजा हो जाऊँगा तो अन्न बड़ा सस्ता कर दूँगा। सब लोग समानता से रहेंगे। ऊँच नीच में कुछ भेद न रहेगा। सबने यह सुन कर केड महाराज के जयजयकार बोले। केड ने इसके उत्तर में कहा—

"सज्जनों मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे राज में रुपये के सिक्के न होंगे, क्योंकि रुपयों की आवश्यकता ही न होगी। सब मेरा सिर खायेंगे। मैं सबको एक से वस्त्र बनवा दूँगा, जिससे सब लोग भाई के समान रहें और मुझे अपना राजा कहें।"

डिक—सबसे पहले हम वकीलों को मारेंगे।

केड—हाँ हाँ! यह जरूर होगा। कैसे अन्याय की बात है कि निर्दोष भेड की खाल से कागज बनाया जाय जिस पर लिखकर लाग अपने भाइयों का सत्यानाश करें। लोग कहते हैं कि मक्खी डङ्क मारती है, पर मैं कहता हूँ कि मोम डङ्क मारता है। क्योंकि मैंने एक बार एक चीज पर मुहर करदी और मुझे कष्ट उठाना पड़ा।

इस प्रकार के मनुष्यों ने विद्रोह का झण्डा उठाया। राज्य की ओर से हम्फरे स्टफर्ड और उसका भाई विलियम स्टफर्ड उनके दमन के लिए भेजे गये। उन्होंने जाकर बहुत समझाया कि जो लोग केड का साथ छोड देंगे उनको महाराज क्षमा कर देंगे। परन्तु किसोने उनकी न सुनी। अन्त में ब्लैकहीथ पर लडाई हुई। परन्तु हम्फरे और विलियम दोनों खेत रहे और उनकी सेना अपने सेनापतियों को मरता देखकर भाग निकली। अब क्या था, विद्रोहियों के दिल बढ़ गये, वे चौगुने उत्साह से लडने लगे। अब उन्होंने समझा कि हम अवश्य देश को जीत लेंगे। अब उन्होंने लन्दन की ओर कूच किया और शीघ्र ही लन्दन के पुल पर पहुँच गये। जब यह खबर राजमहल में पहुँची तो राजा के पेट मे पानी हो गया और उसने जाकर रानी सहित किलिंगवर्थ में शरण ली। राजा की ओर से अब मैथ्यूगफ बहुत बडी सेना के साथ केड का सामना करने के लिए भेजा गया। परन्तु वह भी मारा गया। नगर भर में लूट मच गई। विद्रोहियों ने महलों को तोड डाला। कागजों को जला दिया और सैकड़ों मनुष्यों को मार डाला। लार्ड से और उसके दामाद को पकड लिया और इस अपराध में इनके शिर काट लिये कि उन्होंने फ्रांस के युद्ध के लिए लोगों से कर लिया था।

जब इन्होंने यह आफ़त मचा दी तो बकिङ्घम और क्लिफ़र्ड इनके हराने के लिए आगे बढ़े और बकिङ्घम ने कहा—

"केड ! हम राजा की ओर से यह कहने आये हैं कि जो लोग तेरा साथ छोड़ देंगे, उनको महाराज क्षमा कर देंगे।"

क्लिफ़र्ड—भाइयो, क्या कहते हो। क्या तुम इसका साथ छोड़ कर दया के पात्र बनोगे, या विद्रोही बन कर मारे जाओगे? तुममें से जो लोग राजभक्त हों उनको चाहिए कि अपनी टोपी उछाल दें।

केड ने देखा कि सब लोग राजा के लिए जयजयकार बोलने और टोपियाँ उछालने लगे। इसलिए उसने कहा—

"भाइयो। क्या तुम क्लिफ़र्ड के बहकाने में आ गये ! क्या तुमको यह नहीं मालूम कि यह लोग प्रजा के शत्रु हैं। क्या अभी मेरी तलवार टूट गई जो तुम निराश होकर मेरा साथ छोड़े जाते हो। क्या तुम ऐसे अधम हो कि अपनी प्राचीन स्वतन्त्रता को खोये देते हो? यदि इस समय भी अपने बच्चों, अपनी स्त्रियों और अपने घरों का हित चाहो तो अवश्य मेरा साथ दो।"

मूर्ख लोगों का बहकाना क्या दुस्तर था। उनमें निज की बुद्धि तो थी ही नहीं, वे झट से केड के साथ होगये। इस पर क्लिफ़र्ड ने कहा—

"भाइयो ! क्या तुम केड को राजवंशी समझे हो? क्या तुमको आशा है कि यह जाकर फ़्रांस को जीतेगा और तुममें से हर एक को जागीरें दे सकेगा। क्या तुमको यह नहीं मालूम कि इसके पास रहने को घर तक नहीं है। भाइयो ! अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाड़ी क्यों मारते हो ! मुझे तो यह दीखता है कि केड का बश चला तो तुमको लूट कर खा जायगा और

शीघ्र ही फरासीसी लोग, जिनको तुम कई बार हरा चुके हो, आकर तुमको जीत लेंगे।"

इतना सुनना था कि वही लोग जो अब तक केड के साथी थे अब क्लिफर्ड के साथी हो गये और केड अपने को अकेला जान कर भाग गया। उसके पकड़ने के लिए एक हजार रुपये का विज्ञापन दे दिया गया। पहले तो वह केण्ट के जंगलों या बागों में छिपा रहा। एक दिन आइडिन नामी एक किसान ने उसे मार डाला।

हनरी अभी एक आपत्ति से नहीं निकल पाया था कि उसके सिर पर दूसरी आ पड़ी। यह ऐसी विपत्ति थी जिसने आयुभर उसे चैन न लेने दिया और एक दिन उसके प्राणों की लेवा हो गई। अभी केड के विद्रोह को दमन करके लोग आ भी नहीं थे कि यार्क की चढ़ाई का कुसमाचार सुनाई दिया हम ऊपर बता चुके हैं कि रिचार्ड यार्क बहुत सी सेना-सहित आयर्लैण्ड के विद्रोह दमन को गया हुआ था। वहाँ से लौट कर उसने लन्दन पर चढ़ाई करदी, क्योंकि वह बहुत दिनों से राज छीन लेने का अवसर ढूँढ रहा था।

बकिंह्म एक सेना लेकर डार्टफर्ड और ब्लैकहीथ के बीच में यार्क से मिलने गया और उससे कहा "यार्क! यदि तुम्हारा उद्देश बुरा न हो तो मैं तुमसे मिलने आया हूँ।।"

यार्क—मैं बहुत खुश हूँ। परन्तु क्या तुम राजा के भेजे हुए हो अथवा स्वयं आये हो?

बकिंह्म—मुझे महाराज ने भेजा है कि तुमसे इस चढ़ाई का कारण पूछूं।

यार्क—बकिंह्म! क्षमा करो। मेरे मन में बड़ा दुःख है। इतनी सेना इकट्ठी करने का कारण यह है कि मैं सोमरसेट को

महाराज के पास से हटाना चाहता हूँ । क्योंकि उसका रहना राजा और देश दोनों के लिए हानिकारक है ।

बकिङ्घम—यदि तुम्हारा यही प्रयोजन हो तो अच्छी बात है । महाराज ने आपकी इच्छा पूर्ण की और सोमरसेट को कैद कर लिया ।

यार्क—क्या सत्य कहते हो कि सोमरसेट कैद हो गया ?

बकिङ्घम—सत्य कहता हूँ ।

यार्क—अच्छा मैं सिपाहियों को लौटाये देता हूँ । मैं महाराज का भक्त हूँ ।

यह कहकर वह राजा के सामने गया और उसको प्रजावत् प्रणाम किया । राजा के पूछने पर उसने कहा कि मैं सेना को इसलिए लाया था कि सोमरसेट को कैद करलूँ और दुष्ट केड को अपने किये की सजा दूँ ।

जिस समय यह बातें हो रही थीं सोमरसेट मारगरेट के साथ वहीं पर आ गया । क्योंकि हनरी ने वास्तव में सोमरसेट को कैद नहीं किया था । इसको देखते ही यार्क के तन में आग लग गई और कड़क कर कहने लगा "क्यों ! क्यों ! क्या सोमरसेट छूट गया ! अच्छा फिर मैं भी अपने गुप्त विचारों को प्रकट करता हूँ । क्या मैं सोमरसेट को देख सकता हूँ ? झूठे राजा ! तूने मुझे धोखा दिया ! मैं तुझे राजा कहता हूँ । पर तू राजा नहीं है । तू राज करने के योग्य नहीं है । तू इतने लोगों को वश में नहीं रख सकता । यह सिर राज-मुकुट के योग्य नहीं है । अब मैं तुझे राज करने न दूँगा । राजा मैं हूँ ।

सोमरसेट—विद्रोही ! विद्रोही ! राजशत्रु ! मैं तुझे पकड़ता हूँ ।

इस पर बहुत झगड़ा हुआ। यार्क के लड़के भी वहाँ पर आ गये। वारिक और सालसबरी ने भी आकर यार्क के पक्ष में ही कहना आरम्भ किया। अब तो खुल्लमखुल्ला लड़ाई आरम्भ हो गई। ऐसी अवस्था में किसका बल था कि यार्क को पकड़ सकता! हनरी ने वारिक और सालसबरी से कहा—

"अरे वारिक! क्या तू अपने राजा को भी भूल गया! सालसबरी! तुझे इन श्वेत केशों पर भी लज्जा नहीं आती। तेरी राजभक्ति क्या हुई। यदि तेरे समान वृद्ध पुरुष भी विद्रोह करने लगें तो औरों का क्या हाल होगा।"

सालसबरी—महाराज! मैंने यार्क के अधिकार पर पूर्ण रीति से विचार किया है। और मेरा आत्मा यही कह रहा है कि इङ्गलैण्ड के राज्य का वास्तविक अधिकारी यही है।

हनरी—क्या तूने मेरी भक्ति की शपथ नहीं खाई थी!

सालसबरी—हाँ!

हनरी—फिर ईश्वर को इससे विमुख होने के लिए क्या उत्तर देगा!

सालसबरी—अनुचित बात के लिए शपथ खाना पाप है। और पापयुक्त शपथ के अनुकूल चलना महापाप। यदि किसी ने किसी की हत्या करने, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने, किसी अनाथ का माल लेने या किसी विधवा को लूटने की शपथ खाई हो तो क्या उसे ऐसी प्रतिज्ञा का पालन करना उचित है?

अब वारिक और यार्क अपनी अपनी सेनायें लेकर सेण्ट एल्बन्स की ओर चले। उनके मुकाबिले के लिए क्लिफर्ड राज्य की सेना लेकर उसी ओर गया और बड़ा घोर युद्ध हुआ। परन्तु क्लिफ़र्ड यार्क के हाथ से मारा गया।

सोमरसेट भी यार्क के लड़के रिचार्ड के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यार्क के मुख्य मुख्य शत्रु नष्ट हो गये। मारगरेट ने हनरी को क्षेत्र मे देखकर कहा "स्वामिन्! भाग जाओ! जल्दी भाग जाओ!"

हनरी ने निराश होकर कहा—

'मारगरेट। ठहरो! भला ईश्वर से भाग कर कहाँ जायँ।"

मारगरेट—अरे! तुम किस चीज के बने हो कि न लड़ते हो और न भागते हो। यही बुद्धिमत्ता और पुरुषत्व है कि शत्रु को रास्ता दे दिया जाय। यदि तुम पकड़े गये तो हम सब की मौत है। यदि हम भाग जायँ तो जल्दी से लन्दन पहुँच सकते हैं और वहाँ हमारे साथी हमारी सहायता करेंगे।

इस प्रकार हनरी अपनी महारानी सहित लन्दन को भाग गया और जीत यार्क के हाथ लगी। वह अपने बेटे रिचार्ड से पूछने लगा—

"क्या किसी ने सालसबरी को भी देखा है? वह बूढ़ा सालसबरी, जो रणक्षेत्र में अपने बुढ़ापे को भूल जाता है जो युवकों से भी अधिक लड़ता है। यदि आज सालसबरी मर गया तो यह हमारी जीत नहीं, किन्तु हार है।

रिचार्ड—पूज्य पिता जी! मैंने आज तीन बार उसे घोड़े पर चढ़ाया और तीन बार लड़ने से निषेध किया। परन्तु वह ऐसी ही जगह पहुँच जाता था जहाँ भय अधिक हो। जिस प्रकार सादे मकान में सुनहरे परदे लगे हों इसी प्रकार इस वृद्धावस्था में उसका साहस मालूम होता है।

इतने में सालसबरी वहीं पर आगया और कहने लगा—

"आज हम सब ख़ूब लड़े। ईश्वर जाने मुझे कितने दिन

और जीना है। आज उसने तीन बार मुझे मृत्यु के ग्रास से बचाया। परन्तु यह बात अच्छी नहीं हुई कि शत्रु भाग गये। क्योंकि वे अब फिर युद्ध की तैयारियाँ करेंगे।"

याक—हमारा इसी में भला है, कि उनके पीछे पीछे लन्दन को चलें। मैंने सुना है कि हनरी लन्दन को राजसभा करने गया है। इसलिए हुक्म लिखे जाने से पूर्व ही हम वहाँ पहुँच जायें तो अच्छा है। कहो वारिक! क्या कहते हो!

वारिक—उनके पीछे नहीं, किन्तु आगे जाना चाहिए।

इस प्रकार याकं ने सेण्ट एलबन्स की लड़ाई जीत कर हनरी का पीछा किया। इसका वर्णन तीसरे भाग में किया जायगा।

———:o:———

छठा हनरी

तीसरा भाग

(HENRY VI, PART III)



सरे भाग में यह बताया जा चुका है कि सेण्ट पेलबन्स की लड़ाई में हार कर छठा हनरी राजसभा करने के लिए लन्दन में आया और सभासदों को निमन्त्रित करके सभा की। जिस समय सभाभवन (Parliament House) में राजमन्त्रि-गण वर्तमान दुर्घटना पर विचार कर रहे थे, यार्क अपने पुत्रों, एडवर्ड और रिचार्ड तथा नार्फोक और वारिक, के साथ वहाँ पर आ गया। इनकी टोपियों में श्वेत गुलाब के फूल लगे हुए थे और इनके विपक्षियों अर्थात् हनरी के साथियों का चिह्न लाल गुलाब था, इसलिए इस युद्ध को जो पेलबन्स की लड़ाई से आरम्भ हुआ और बराबर २५ वर्ष तक रहा गुलाब युद्ध के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

जिस समय यार्क अपने साथियों सहित राजसभा-भवन की ओर आया था उसका विचार हनरी को पकड़ लेने का था। परन्तु हनरी अवसर पाकर निकल गया। इसीलिए जब वारिक ने कहा "कि न जाने हनरी किस तरह हमारे हाथ से निकल गया?" तो यार्क ने उत्तर दिया।

"जब हम नार्थम्बरलैण्ड की सेना का पीछा कर रहे थे, हनरी अपने आदमियों को छोड़कर भाग गया और जब नार्थ

म्बरलैण्ड, स्टैफोर्ड और *क्लिफर्ड ने हमारे ऊपर धावा किया तो नार्थम्बरलैण्ड मारा गया"। इस पर एडवर्ड ने अपनी रक्त-मय तलवार को दिखा कर कहा कि 'मैंने स्टैफर्ड के बाप बकिंघम को मार डाला।"

रिचार्ड ने सोमरसेट के सिर को पटक कर कहा "मेरे पराक्रम को यह स्वय कह देगा।"

यार्क—रिचार्ड ने सब से प्रशंसनीय काम किया। परन्तु क्या लार्ड सोमरसेट! आप मर गये?

नार्फ़ाक—जोन आफ़ †गाण्ट की सब सन्तान को यही आशा रखनी चाहिए।

रिचार्ड—इस प्रकार मैं हनरी के सिर को हिलाऊँगा!

अब इन लोगों ने भवन में आकर यार्क को राजगद्दी पर बिठा दिया। विचारे सभासद इनका मुँह ताकते रहे। किसी की यह हिम्मत न पड़ी कि कुछ कह सकता।

यार्क का गद्दी पर पैर रखना था कि हनरी वहाँ पर आ गया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड (पहले नार्थम्बरलैण्ड का लड़का) वेस्टमोरलैण्ड और एक्सीटर उसके साथ थे। हनरी ने अपनी गद्दी पर यार्क को बैठा देखकर सभासदों से कहा—

"महाशयो! देखो यह राजशत्रु सिंहासन पर बैठा है और दुष्ट वारिक की सहायता से इङ्गलैण्ड का राजा होना चाहता है। क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैण्ड! देखो इसने तुम दोनों के पिताओं का संहार किया है। इसलिए तुमको इससे बदला लेना चाहिए।"

---

* यह क्लिफर्ड उस क्लिफर्ड का लड़का था जो पहले मर चुका था।

† चतुर्थ हनरी का पिता।

नार्थम्बरलैण्ड—ईश्वर मेरी सहायता करे! मैं अवश्य बदला लूँगा।
क्लिफर्ड—इसीलिए मैंने अभी शस्त्र हाथ से नहीं रक्खा।
वेस्टमोरलैण्ड—अभी मैं इस दुष्ट को गद्दी से खींचे लेता हूँ।

वह यार्क को खींचने के लिए आगे बढने लगा। इतने में हनरी ने कहा—

"यार्क! दुष्ट यार्क! नीचे उतर और मेरे सामने माथा टेक! मैं तेरा राजा हूँ।"

यार्क—मैं तेरा राजा हूँ।
एक्सीटर—धिक्! धिक्! अरे तुझे हनरी ने यार्क का ड्यूक बनाया था।
यार्क—यह जागीर मेरे बाप-दादों की है।
एक्सीटर—तेरा बाप राजशत्रु था।
यार्क—तू स्वयं राजद्रोही है जो हनरी का साथ देता है।
हनरी—अरे क्या मैं खड़ा रहूँ और तू सिंहासन पर बैठा रहे।
यार्क—अवश्य अवश्य! यही होगा! तुझे सतोष करना चाहिए।
वारिक—लङ्कास्टर की जागीर तुझे मिल सकती है। यार्क राज करेगा।
वेस्टमोरलैण्ड—वह राज भी करेगा और लङ्कास्टर की जागीर भी लेगा।
वारिक—वारिक ऐसा करने न देगा! क्या तुम मुझे भूल गये, जिसने तुम्हारे पिता को हरा कर मार डाला था।
नार्थम्बरलैण्ड—वारिक! याद रख! तुझे और तेरे सम्बन्धियों को इसका बदला देना पड़ेगा।
वैस्टमोरलैण्ड—यार्क! तू और तेरे लड़के! नहीं नहीं! तेरे वंश के इतने आदमी मारे जायेंगे जितनी बूँद रक्त मेरे बाप के शरीर में था!

यार्क—(सभासदों से) क्या आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मेरा राज पर क्या अधिकार है ?

हनरी—तेरा राज पर कुछ भी अधिकार नहीं। तेरा बाप तेरी तरह यार्क का ड्यूक था। तेरा पितामह मार्टीमर, मार्च का जागीरदार था। मैं पाँचवें हनरी का पुत्र हूँ, जिसने डौफ़िन से फ्रांस को छीन लिया।

वारिक—फ्रांस के विषय में क्यों कहता है। उसे तो तू खो चुका।

हनरी—क्या तुम समझते हो कि हनरी अपना राज इस तरह छोड़ देगा। वह राज, जिस पर उस के बाप और दादे ने राज किया है।

वारिक—अच्छा ! अपना अधिकार सिद्ध कर दे। और फिर राज तेरा है।

हनरी—चौथे हनरी ने इङ्गलैण्ड को जीत कर राज किया था।

यार्क—नहीं ! वह अपने राजा से लड़ पड़ा था।

हनरी—क्या राजा गोद नहीं रख सकता ?

यार्क—इससे क्या प्रयोजन ?

हनरी—यदि ऐसा है तो मैं नियमानुसार राजा हूँ, क्योंकि रिचार्ड ने सब लोगों के सामने मुकुट चौथे हनरी को दे दिया था।

यार्क—उससे तलवार के ज़ोर से मुकुट ले लिया गया।

वारिक ने इस समय अपने पैर ज़मीन पर मारे और आहट के सुनते ही बहुत से सिपाही राजभवन में घुस आये। अब तो हनरी डर गया और समझा कि मैं कैद हुआ। बस उसने यार्क से कहा कि "यावज्जीवन मुझे राज करने दो। इसके पश्चात् राज तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान का"। यार्क ने यह

बात स्वीकार करली और गद्दी से उतर पड़ा । उसने शपथ खाई कि कभी मन, वाणी, या कर्म से हनरी का विरोध न करूंगा । हनरी ने लिख दिया कि मेरे पीछे राज यार्क या उसके पुत्रों का होगा ।

छठे हनरी के एक लड़का था, जिसका नाम था एडवर्ड और जिसको यार्क के लड़के एडवर्ड से भिन्न करने के लिए हम प्रिंस आफ़ वेल्ज कहेंगे । जिस समय महारानी मार्गरट ने सुना कि मेरे लड़के को राज के अधिकार से च्युत कर दिया है, तो वह बहुत बिगड़ी । मारगरेट हनरी की तरह डरपोक या मृदु स्वभाव की नहीं थी । वह कभी राज देने को तैयार नहीं थी । इसलिए इस प्रतिकूल खबर को सुनते ही प्रिंस आफ वेल्ज को साथ लिये वह वहाँ पर आ पहुँची, और हनरी को बुरा भला कहने लगी । हनरी ने कहा "प्यारी रानी ! सन्तोष करो ।"

मारगरेट—ऐसी दशा में कौन सन्तोष कर सकता है ? अभागे आदमी ! अच्छा होता अगर मैं तुझसे विवाह न करती और तेरे लिए पुत्र न जनती । क्योंकि तूने अपने पुत्र के साथ ऐसा अन्याय किया ! क्या उसका जन्म का अधिकार इस प्रकार नष्ट हो गया । यदि तू उसे मेरी अपेक्षा आधा भी चाहता या तूने उसके जनने में मुझसे आधा भी कष्ट उठाया होता या जिस प्रकार अपने रुधिर से मैंने उसका पोषण किया उसी प्रकार तूने किया होता तो तू अपने प्राण देना पसन्द करता परन्तु अपने पुत्र को राज के अधिकार से च्युत करना स्वीकार न करता !

प्रिंस आफ वेल्ज—पिता जी ! जब आप राजा हैं तो मैं क्यों न होऊँ ?

हनरी—मारगरट ! क्षमा करो ! प्रिय पुत्र ! क्षमा करो ! वारिक और यार्क ने मुझसे मजबूर करके स्वीकार करा लिया ।

मारगरेट—मजबूर करके! हाँ मजबूर करके! क्या यह राजा है? राजा को कौन मजबूर कर सकता है? हे कायर अभागे! तूने अपना, मेरा और अपने पुत्र का नाश कर लिया। क्या तू समझता है कि अब बच जायगा? क्या भेड़ियों से घिरी हुई भेड़ बच जाती है? यदि मैं तेरी जगह होती तो चाहे सिपाही लोग भालों पर उछाल उछाल कर मुझे मार डालते परन्तु इस अन्याय युक्त बात का स्वीकार न करती। परन्तु तू अपने प्राणों को यश से अधिक चाहता है। अतएव मैं तेरे पास से जाती हूँ और जब तक राजसभा से यह निश्चय न हो जायगा कि तेरे पीछे मेरा लड़का गद्दी पर बैठेगा उस समय तक तेरे पास न आऊँगी। मैं जाती हूँ और नार्थम्बरलैण्ड आदि की सहायता से यार्क का सामना करूँगी।

यह कह कर मारगरेट प्रिंस आफ वेल्ज को साथ लिये वहाँ से चली गई। और वेकफील्ड के पास बहुत सी सेना के साथ यार्क का मुकाबला किया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड और बहुत से अन्य योद्धा उसके साथ थे। पहले तो क्लिफ़र्ड ने यार्क के छोटे लड़के रटलैण्ड को जो महल में अपने अध्यापक के साथ पढ़ रहा था पकड़ लिया और उसे मार कर उसके रक्त में रूमाल रँग लिया। फिर वे सब समर-क्षेत्र में आकर लड़ने लगे। बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। यार्क के लड़के बड़े साहस से लड़े। तीन बार रिचार्ड ने यार्क के लिए रास्ता कर दिया और कहा "पिता जी! साहस से लड़िए।" एडवर्ड कई बार रुधिर-भरे वस्त्र-सहित अपने बाप की सहायता को आया। रिचार्ड अपनी सेना को अपने उत्साह से उत्तेजित कर रहा था और कहता जाता था कि या तो राज मिलेगा या मौत! परन्तु इनकी

वीरता काम न आई। यार्क की हार हुई और मारगरेट ने विजय पाई। यार्क के लड़के तो भाग गये। परन्तु वह इतना थक गया था कि खेत से न उठ सका और मारगरेट, क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैण्ड ने उसे पकड़ लिया। मारगरेट ने उसके साथ बड़े अत्याचार किये। पहले तो कागज का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रख दिया गया, फिर उसके पुत्र रटलैण्ड के खून से भीगा हुआ रूमाल उसके मुँह पर डाल दिया गया। जब वह रोने लगा तो मारगरेट ने उसको बहुत अपशब्द कहे और अन्त में पहले क्लिफर्ड ने, फिर मारगरेट ने उसे मार डाला।

इस समय वारिक लन्दन में था। जब उसने सुना कि वेकफील्ड में उसके साथियों की हार हुई और यार्क मारा गया तो वह शीघ्र ही वहाँ से सेण्ट एलबन्स की ओर बढ़ा कि रानी मारगरेट को लन्दन आने से रोक दे। क्योंकि वेकफील्ड की जीत से प्रफुल्लित होकर मारगरेट लन्दन को आने तथा राजसभा से अपने पुत्र को युवराज नियत कराने के लिए आरही थी। हेनरी इस समय भी वारिक के साथ था। सेण्ट एलबन्स के निकट आकर फिर भारी युद्ध हुआ। वारिक की सेना हार गई और जिस समय वह लोग भागने लगे, हेनरी उनके हाथ से छूट कर रानी मारगरेट से आ मिला।

यार्क के मरने के उपरान्त उसका लड़का एडवर्ड यार्क वालों का मुखिया बना और यद्यपि इन लोगों की दो लड़ाइयों में हार हो चुकी थी तथापि वारिक ने हिम्मत न हारी और इन लोगों को इकट्ठा करके जल्दी से लन्दन में पहुँच गया। यद्यपि जीत मारगरेट की हुई थी परन्तु अभी उसे लन्दन जाने में सफलता नहीं हुई थी कि एडवर्ड लन्दन पहुँच कर वारिक की सहायता से चौथे एडवर्ड के नाम से राजगद्दी पर बैठ गया और देश भर

में अपने राजा होने का ढँढोरा पिटवा दिया! अब मारगरेट, हनरी और प्रिंस आफ़ वेल्ज क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैण्ड समेत यार्क नगर में आये। नगर के द्वार पर यार्क का सिर लटका हुआ था। उसकी ओर सकेत करके मारगरेट ने कहा—

"स्वामिन्! देखिए! आपका शत्रु, जिसने आपका राज-मुकुट लेने का इरादा किया था, वह है। उसे देखकर अपने हृदय को सन्तुष्ट कीजिए।"

परन्तु हनरी को इस दृश्य से सन्तोष नहीं हुआ, क्योंकि उसका आत्मा कह रहा था कि मेरे पितामह ने बलात्कार और अन्याय से राज ले लिया था और वास्तव में यह राज यार्क को ही मिलना चाहिए। यदि हनरी का बस चलता तो वह कभी यार्क के विरुद्ध लड़ाई न करता। परन्तु उसकी रानी झगड़ा मचा रही थी। हनरी जैसा न्याय-प्रिय था वैसा बलवान् नहीं था। इसलिए अपनी इच्छा पूर्ण करने में उसे सफलता नहीं होती थी। पहले दिखलाया जा चुका है कि उसका सर-क्षक ग्लोस्टर किस प्रकार उसकी इच्छा के विरुद्ध मारा गया, फिर मारगरेट ने किस प्रकार उसे युद्ध के लिए उत्तेजित किया। इन सब बातों से भली भाँति प्रकट होता है कि हनरी का हृदय कोमल और बलहीन था। मारगरेट की बात सुन कर वह कहने लगा—

"मेरे आत्मा को दुःख होता है। हे ईश्वर! क्षमा कर! यह मेरा अपराध नहीं है।"

क्लिफर्ड ने इस पर कहा—

"महाराज! आपको ऐसी कोमलता उचित नहीं है। सिंह कभी किसी पर दया नहीं करते। क्या साँप उस मनुष्य को बिना काटे छोड़ देता है जो उसकी पीठ पर पैर रखता हो! दब

कर तो चींटी भी काट खाती है। यार्क ने आपका राज लेने की इच्छा की थी और आपके लड़के को राज से च्युत कर दिया था। आपने इसका विरोध न किया। पक्षी भी उस मनुष्य पर आक्रमण करते हैं जो उनके बच्चों को मारता हो। इन्हीं से शिक्षा ग्रहण कीजिए। आप अपने लड़के की ओर देखिए। आपके पीछे यह कहेगा कि "जिस राज को मेरे परदादे और दादे ने प्राप्त किया था उसको मेरे बाप ने खो दिया", इसलिए राजन्! अपने हृदय को कठोर कीजिए और अपने राज की रक्षा करने का प्रयत्न कीजिए।

हनरी—क्लिफर्ड। तुम्हारी युक्तियाँ प्रबल हैं। परन्तु क्या तुमने नहीं सुना कि अन्याय से ली हुई चीज दुःखदायी होती है? पुत्र को तो वही पिता अच्छा लगता है। उसजेके लिए धन एकत्र करके नरक को चला जाय! मैं अपने पुत्र के लिए अपने शुभ कार्य्य छोड़ जाऊँगा! अच्छा होता अगर मेरे पिता जी मेरे लिए कुछ न छोड़ जाते! हाय! यार्क तेरे सिर को देखकर मुझे कैसा खेद होता है।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय चतुर्थ एडवर्ड और वारिक सेना सहित वहाँ पर आगये। और एडवर्ड ने कहा—

"झूठे हनरी! मेरे आगे माथा टेक और अपना मुकुट मेरे सिर पर रख।"

मारगरेट—चल! छोकरे! परे हट!

एडवर्ड—मैं इसका राजा हूँ। इसलिए इसको चाहिए कि अपने सम्राट् के आगे सिर झुकावे! इसने मुझे अपना उत्तराधिकारी चुना था, अब प्रतिज्ञा भंग करके अपने पुत्र को राज देना चाहता है।

क्लिफर्ड—यही तो उचित बात है। पिता के पीछे पुत्र राजा होता है।

रिचार्ड—अरे कसाई! तू भी बोलता है!

क्लिफर्ड—हाँ मैं बोलता हूँ। तू या तेरे बड़े मेरा क्या कर सकते हैं?

रिचार्ड—इस कसाई ने बालक रटलैण्ड को मार डाला।

क्लिफर्ड—और बूढ़े यार्क को भी!

वारिक—हनरी! राज देने को तैयार है या नहीं?

मारगरेट—हा! हा! बातूनी वारिक! सेण्ट एलबन्स में तेरी टाँगो ने तेरे हाथों की अपेक्षा अधिक काम किया था!

वारिक—तब मैं भागा था, अब तेरी बारी है।

क्लिफर्ड—तू तो पहले भी यही कहता था!

वारिक—तो क्या तूने मुझे भगाया था?

एडवर्ड—हनरी! क्या तू मुझे मेरा राज देगा?

वारिक—अगर न देगा तो इतने आदमियों का खून इसके सिर है। क्योंकि एडवर्ड को राज मिलना ही न्याय है।

प्रिंस आफ् वेल्ज—यदि यही न्याय है तो अन्याय क्या होगा?

रिचार्ड—अपनी मा का सिखाया बोल रहा है।

मारगरेट—अरे तू तो बाप मा किसी को कुछ नहीं मानता!

रिचार्ड—हा! हा! तू बोलती है। अब इङ्गलैण्ड में आकर तुझे यह साहस हो गया! तेरा बाप भी राजा कहलाता है, जैसे कोई* नाले का नाम समुद्र रख दे।

---

*मारगरेट का पिता नेपिलिज आदि कई देशों का राजा कहलाता था, यद्यपि उसके पास मेन और एंजू के सिवा और कुछ नहीं था!

इस प्रकार थोड़ा देर तक यह लोग वाक्युद्ध करते रहे। परन्तु इसके पश्चात् युद्ध आरम्भ हुआ। टौटन नामी नगर के पास दोनों दल मिले और ऐसा घोर युद्ध हुआ कि समस्त इङ्गलैण्ड वीरों से खाली होगया। कहते हैं कि दोनों ओर के बीस बीस हजार आदमी मारे गये। समस्त गुलाब युद्ध में टौटन की लड़ाई सबसे बड़ी हुई। पहले तो यार्क वाले हारते हुए मालूम हुए, परन्तु अन्त मे उनकी जीत हो गई। इस युद्ध ने हनरी को बहुत निर्बल कर दिया और उसके उभरने की कोई आशा रही क्लिफर्ड मारा गया। अन्य बहुत से योद्धा खेत रहे। हनरी अपनी रानी और लड़के सहित स्काटलैण्ड को भाग गया। और चौथे एडवर्ड का लन्दन मे आकर बड़े समारोह से राज्याभिषेक हुआ।

थोड़े दिनो के पश्चात् हनरी को अपने देश की याद आई और वह उसे बिना देखे न रह सका। इसलिए एक दिन पुजारी का भेस रख, हाथ में धर्मपुस्तक लिये हुए इङ्गलैण्ड के उत्तरी भाग मे आ निकला और यह देखकर कि वही इङ्गलैण्ड, जिस पर वह थोड़े दिनों पहले राज करता था और जो उसका देश कहलाता था, आज दूसरों के हाथ में है, उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। दो शिकारियों ने, जो उस समय उसी वन में आखेट के लिए गये हुए थे, उसे पकड़ लिया और चौथे एडवर्ड के हवाले कर दिया। एडवर्ड ने उसे कैद कर लिया।

हनरी की रानी मारगरेट अपने पुत्र सहित स्काटलैण्ड से फ्रांस को भाग गई। और उसने फ्रांस नरेश लूइस से सहायतार्थ प्रार्थना की। जिस समय मारगरेट फ्रांस के राज दरबार में प्रविष्ट हुई तो लूइस खड़ा होगया और स्वागत करके कहने लगा—

"राजराजेश्वरी! महारानी! आप मेरे आसन पर विराजिए क्योंकि इस प्रकार खड़ा रहना आपको उचित नहीं है।"

मारगरेट—नहीं! महाराज! अब मुझे उस स्थान पर सेवकाई करनी चाहिए जहाँ राजे शासन करते हैं। मैं मानती हूँ कि पहले मैं इङ्गलिस्तान की रानी थी! परन्तु अब दुर्भाग्य ने मुझे पददलित कर दिया है और अब मेरा बहुत अपमान हो चुका है। अतएव आप मुझे वही स्थान दीजिए जो मेरी वर्त्तमान अवस्था के अनुकूल हो!

लूइस—भला! आप ऐसी निराश क्यों हैं?

मारगरेट—कहते हुए मेरी जीभ रुकती है और आँखों में आँसू भर आते हैं। कलेजा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है।

लूइस—चाहे कुछ हो! हमारे लिए अब भी आप महारानी हो! इसलिए मेरे पास उच्च आसन पर सुशोभित हूजिए।

मारगरेट ने बैठ कर सब हाल कहा और चौथे एडवर्ड के विरुद्ध उससे सहायता चाही। लूइस ने यद्यपि कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया, परन्तु कुछ कुछ सहारा अवश्य दिया और प्रतिज्ञा की कि सोच विचार कर जो कुछ बन पड़ेगा किया जायगा।

अभी मारगरेट वहीं थी कि वारिक भी इङ्गलैण्ड से आकर वहीं पहुँच गया। वारिक वस्तुतः बड़ा बुद्धिमान् था। उसने पहले ही से समझ लिया था कि मारगरेट को फ्रांस से सहायता मिल जायगी और न जाने ऊँट किस करवट बैठे इसलिए उसने फ्रांसनरेश से मेल करने का एक नया उपाय सोचा और एडवर्ड (चौथे) को इस बात पर राजी करके कि उसका विवाह फ्रांस-नरेश की बहन बोना से हो जाय, उसकी ओर से फ्रांस-दरबार में सन्देसा ले गया।

लूइस ने प्रार्थना स्वीकार करली और यह निश्चित हो गया कि बोना इङ्गलैण्ड की महारानी होगी। मारगरेट को उसने अब स्पष्टतः कह दिया कि यद्यपि मुझे तुम्हारे और हनरी के साथ सहानुभूति है, परन्तु वंशावलि के अनुकूल राज एडवर्ड का ही है। इसलिए मैं सहायता नहीं दे सकता।

परन्तु इस समय वारिक का बनाबनाया खेल एडवर्ड की गलती से बिगड गया। क्योंकि उसने इस समय वारिक की अनुपस्थिति में, बिना उसकी इच्छा के, एलीजबेथ ग्रे से विवाह कर लिया। एलीजबेथ का भूतपूर्व पति हनरी की ओर से लड़ा था। एडवर्ड के राज्याभिषेक पर उसने आकर प्रार्थना की कि मेरे पति की जायदाद मेरे पुत्रों को देदी जाय। जिस समय यह राजा के समीप आई, राजा इस पर मोहित हो गया और झट से उस के साथ विवाह कर लिया।

जब इस विवाह के समाचार फ्रांस में पहुंचे तो लूइस को बड़ा क्रोध आया। उसे यह बात अच्छी न लगी कि पहले उस की बहन के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट कर के फिर बिना किसी कारण के एडवर्ड ने दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया, इस से लूइस का बड़ा अपमान हुआ और उसने क्रोध में आकर मारगरेट को सहायता देने और एडवर्ड को गद्दी से उतारने की प्रतिज्ञा करली।

उधर वारिक भी एडवर्ड से क्रुद्ध हो गया, क्योंकि वह उसके इस नये विवाह से अप्रसन्न और असन्तुष्ट था। इसलिए उस ने भी मारगरेट की सहायता की और अपनी बड़ी लड़की का विवाह मारगरेट के पुत्र प्रिंस आफ़ वेल्ज़ से करने का निश्चय कर लिया।

जब एडवर्ड ने वारिक के विरोध की खबर सुनी तो उसने लड़ाई की तैयारियाँ करदीं। परन्तु उसका भाई क्लेरेंस वारिक से मिल गया, क्योंकि वारिक की छोटी लड़की का उससे विवाह होगया था।

जब वारिक ने फ्रांस से आकर सेना एकत्रित की तो एडवर्ड उस के मुकाबले के लिए आगे बढ़ा, परन्तु पकड़ा गया। वारिक ने एडवर्ड को यार्क में कैद कर दिया और हनरी को क़ैद से छुड़ा कर बादशाह बना दिया।

एडवर्ड यार्क से भागकर बरगण्डी को चला गया।

बरगण्डी के राजा ने उसकी सहायता की और बहुत सी सेना उस के साथ भेजी। पहले कवैण्ट्री में वारिक के साथी इकट्ठे हुए जिनमें लार्ड मोण्टेग, लार्ड आक्सफोर्ड, और लार्ड सोमर्सेट भी थे। एडवर्ड का भाई क्लेरेंस जो पहले वारिक से मिल गया था, अब फिर अपने भाई की ओर आगया। और दोनों दलों की बार्निट नामक रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। एडवर्ड बड़ी वीरता से लड़ा और वारिक उस के हाथ से मारा गया। वारिक के मरते ही उस के साथियों में खलबली मच गई और उस के शत्रुओं के मन बढ़ गये, क्योंकि वारिक से सब डरते थे। यह वारिक ही था जिसने हनरी को गद्दी से उतार कर एडवर्ड को राजा बनाया था। यह वारिक ही था, जिसने एडवर्ड के पिता यार्क को लड़ने के लिए उत्तेजित किया था। यह वारिक ही था जिसने फिर हनरी को सहारा दिया; सच पूछिए तो वारिक ही गुलाब-युद्ध का कारण था। इसी की वजह से युद्ध आरम्भ हुआ। इसी के द्वारा युद्ध की स्थिति हुई और इसी के शांत होते समय युद्ध भी शांत हो गया। वारिक अपने समय का बड़ा योद्धा हुआ है। उसके नाम से राजे काँपते थे। इङ्गलैण्ड

की राजगद्दी तो सर्वथा उस के हाथ में थी। उसे सम्राट् निर्माता (King Maker) कहा करते थे। वह जिसे को चाहता था उसे गद्दी पर बिठा देता था और जब उससे अप्रसन्न होता तो राज-मुकुट उसके सिर से उतार कर दूसरे के सिर पर रख देता था। अब वार्विक के रणक्षेत्र में वारिक की मृत्यु होने से युद्ध की जान सी निकल गई।

जब थोडे दिनों पीछे रानी मारगरेट फ्रांस से सेना लेकर आई तो उसने फिर अपने साथियों को उभारा और ट्युकसबरी पर बडा भयङ्कर युद्ध हुआ! जय एडवर्ड की हुई और मारगरेट अपने पुत्र सहित पकडी गई। एडवर्ड ने उस के पुत्र से पूछा—

"रह! दुष्ट! तुझे क्या दण्ड दिया जाय, क्योंकि तूने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भडकाया है!"

राजकुमार—"अरे! दुष्ट! अपने बडों से धृष्टता करता है। जो प्रश्न मुझे तुझसे करना चाहिए वही प्रश्न करने से क्या तात्पर्य है? क्योंकि तूने मेरे पिता की प्रजा को उस के विरुद्ध भडकाया है, जिसके लिए तुझे भारी दण्ड दिया जायगा!"

जिस समय राजकुमार यह बातें कर रहा था, एडवर्ड ने उसे तलवार मार दी। इसके देखते ही उसके भाई क्लैरेंस और रिचार्ड ग्लोस्टर ने भी बारी बारी से तलवार चलाई और बिचारा राजकुमार वहीं पर ढेर हो गया। ग्लोस्टर ने मारगरेट की ओर भी तलवार चलाई, परन्तु एडवर्ड ने उसे रोक दिया। मारगरेट रोती रही। जब एडवर्ड ने हुक्म दिया कि इसे यहाँ से ले जाओ तो यह कहने लगी—

"नहीं नहीं। ले मत जाओ। मुझे यहीं समाप्त करदो।"

- इस पर क्लेरेंस ने उत्तर दिया।

"नहीं नहीं। मैं तुझे इतना आनन्द नहीं देना चाहता।"

मारगरेट को तो बलात्कार से पकड़ कर ले गये, और रिचार्ड ग्लोस्टर लन्दन को चल दिया, जहाँ पर हनरी कैद था। हनरी उस समय किताब पढ़ रहा था। रिचार्ड ने जाकर कहा—

"महाराज की जय हो! स्वामिन्! क्या आप पुस्तकावलोकन में ऐसे संलग्न हैं?"

हनरी—हाँ भले स्वामिन्! नहीं नहीं! मेरे स्वामिन्—क्योंकि असत्य भाषण पाप है। और 'भले' कहना असत्य है।

रिचार्ड—(जेल के संरक्षक से) यहाँ से हट! हम कुछ गुप्त वार्त्तालाप करना चाहते हैं?

हनरी—(संरक्षक को चलता देखकर) इसी प्रकार गड़रिया भेड़िये को देखकर चला जाता है और बेचारी भेड़ की पहले तो ऊन कतरी जाती है, तत्पश्चात् गला काटा जाता है! (रिचार्ड से) कहिए! आप अब क्या हत्या करना चाहते हैं?

रिचार्ड—अपराधी को सदैव शंका होती है! चोर जिस झाड़ी को देखता है उसको सिपाही ही समझता है।

हनरी—यदि पक्षी एकबार किसी झाड़ी में फँस जाय तो उसे सब झाड़ियों पर शंका होती है। मैं स्वतः अपनी आँखों से देख चुका हूँ कि मेरा छोटा सा बच्चा पकड़ लिया गया और मार डाला गया! क्या तू मेरे प्राण लेगा?

रिचार्ड—क्या तू समझता है कि मैं हत्यारा हूँ?

हनरी—यदि निर्दोष बालकों को मारना हत्या है तो मैं कह सकता हूँ कि तू अवश्य हत्यारा है?

रिचार्ड—मैंने तेरे लड़के को तो उसकी धृष्टता के कारण मार डाला।

हनरी—यदि तुझे भी उसी समय मार डाला जाता, जब तूने पहले पहल धृष्टता की थी, तो तू कभी मेरे पुत्र के मारने को न रहता। और मैं अब कहे देता हूँ कि हजारों पुरुष, जिनको इस समय मेरी भाँति भय नहीं है, हजारों वृद्ध पुरुष, सहस्रों विधवायें, सहस्रों अनाथ अपने मा-बाप की अकाल मृत्यु के कारण पछतायँगे और उस घड़ी को कोसेंगे जिसमें तूने जन्म लिया था। जब तूने जन्म लिया था तो उल्लू बोला था और कुत्ते भोंके थे। भूकम्प आया था। तेरे जन्मते समय तेरी मा को बहुत कष्ट हुआ था। मा के पेट से ही तेरे दाँत थे, जिनसे विदित होता था कि तू जगत् को काट खाने के लिए उत्पन्न हुआ है। यदि जो कुछ मैंने सुना है वह सब ठीक हो तो तूने इसलिए जन्म लिया कि—

रिचार्ड—अब बकबक मत करो। मैंने इसलिए जन्म लिया है कि मैं तुमको मार डालूँ।

यह कह कर उसने हनरी के पेटमें जोर से तलवार मारी कि वह वहीं ढेर हो गया।

रिचार्ड हनरी को मार कर बड़ा ख़ुश हुआ, क्योंकि अब उसके शत्रु नष्ट हो चुके थे। परन्तु अभी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसकी इच्छा अपने भाई चौथे एडवर्ड से राजगद्दी छीनने की थी। इस कार्य्य की पूर्त्ति के लिए वह अपने मँझले भाई क्लेरेंस और अन्य निज-वंशजों को भी मारना चाहता था, जिसका वर्णन 'तृतीय रिचार्ड' में किया जायगा। सच है, गद्दी के लालच में मनुष्य क्या क्या पाप नहीं करता!

लैपीडस को तो इन दोनों ने इसलिए बीच में मिला लिया था कि एक दूसरे की शक्ति असीम न हो जाय। अपने शत्रुओं के नाश के पश्चात् एण्टनी रोमन राज्य की सैर को निकला और उसने पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया का चक्कर लगाया जहाँ जिसको मन चाहा उसी को गद्दी से उतार दिया और जिसको चाहा उसकी जगह गद्दी पर बिठा दिया। इस प्रकार राज्यों को बाँटता हुआ एण्टनी अब मिश्र की ओर झुका, जहाँ कि प्रसिद्ध महारानी क्लियोपाट्रा राज करती थी। पहले क्लियोपाट्रा का थोड़ा सा हाल लिख कर हम आगे चलेंगे।

मिश्र का बादशाह अपनी मृत्यु के समय अपना राज्य अपने लड़के टौलमी और अपनी लड़की क्लियोपाट्रा को दे गया था* जिन दोनों में देश नियम के अनुसार विवाह हो गया था। परन्तु क्लियोपाट्रा जो अपने भाई अर्थात् पति से बड़ी थी, अकेले राज करना चाहती थी। मिश्र उस समय रोम वालों के अधीन था इसलिए रोम की राजसभा ने केवल टौलमी को राज देकर क्लियोपाट्रा और उसकी बहन आर्सीनो को देश से निकाल दिया।

जूलियस सीज़र ने मिश्र पर अपना अधिक स्वत्व प्राप्त करने के लिए क्लियोपाट्रा को नई आशायें बँधा दीं और उधर टौलमी से भी बात चीत आरम्भ कर दी। टौलमी ने तो बात का उत्तर युद्ध से दिया, परन्तु हार गया। क्लियोपाट्रा जिस के सौन्दर्य की प्रशंसा ऐतिहासिक हो गई है और जिसकी लावण्यता प्रायः अत्युक्ति-अतीत समझी जाती है, एक विलक्षण महिला

---

* मालूम होता है कि मिश्र वाले सगे भाई बहन आपस में विवाह कर सकते थे।

थी। कवियों ने स्त्रिया के रूप में जो जो अच्छी बातें बताई हैं प्रायः उसमें सभी मौजूद थी। इस के अतिरिक्त उसमें वह वक्तृता भी थी जो शृङ्गार रस का अङ्ग समझी जाती है। सारांश यह है कि मनुष्य को रिझाने के उसमें सब गुण थे। भाषण उसका बहुत प्यारा और प्रभावशाली था। इसके अतिरिक्त उसकी विद्या का यह हाल था कि सात भिन्न २ देशों के राज-दूतों से बिना किसी अनुवादक (Interpreter) के भली प्रकार बात चीत कर सकती थी।

जब क्लियोपाट्रा ने देखा कि सीजर टॉलमी को पराजित कर चुका, वह झट जूलियस के पास पहुँच गई और अपने रूप से उसको ऐसा मोहित किया कि वह उसका पक्षपाती होकर उसके साथ रहने लगा। बहुत से झगड़े और लड़ाइयाँ हुईं। अन्त को सीजर ने मिश्र से क्लियोपाट्रा के शत्रुओं का बीज मेट दिया और उसे मिश्र की महारानी बनाया। सीजर का यह भी विचार था कि क्लियोपाट्रा के नाम से इथोपिया को भी जीत ले। परन्तु रोम की सेना ने इस अनुचित व्यवहार में सीजर का साथ देने से इनकार किया और तब सीजर इस प्रेम-मुग्ध अवस्था से जागकर रोम को लौट गया।

हम ऊपर कह आये हैं कि फ़िलिपी के युद्ध के पश्चात् एण्टनी का मिश्र पर दृष्टि-पात हुआ। सुना गया था कि क्लियो-पाट्रा सीज़र के घातकों को सहायता दे रही है। इसलिए एण्टनी ने उसे बुलाया कि अपने इस दोष का क्या उत्तर देती है।

क्लियोपाट्रा की अवस्था इस समय २७ वर्ष की थी। वह इस समय पूर्ण युवावस्था को पहुँच चुकी थी और अब उसमें वह छल बल भी आगये थे जो स्त्रियों में प्रायः हुआ करते हैं। इसके अतिरिक्त उसे सब बातों से बढ़कर अपने रूप पर

विश्वास था। यद्यपि रोम की कई स्त्रियाँ क्लियोपाट्रा के समान रूप-लावण्य-सम्पन्ना थीं, परन्तु मोहन-शक्ति जो क्लियोपाट्रा में थी वह अन्य स्त्रियों में पाई नहीं जाती। वह पुरुष की नस नस पहचानती थी और उस पर अपना स्वत्व जमाने के लिये अनेक विधियों से अभिज्ञ थी। इसलिए एएटनी के कोप से बचने के लिए उसने अपने लावण्य का ही आश्रय लिया और एक सुन्दर जहाज में बैठ कर, जिसका पिछला हिस्सा बिल्कुल सुनहरा था, जिसके पर्दे लाल रेशम के थे, जिसके डाँड चाँदी के बने हुए थे, एएटनी से मिलने आई।

एएटनी जो उस समय टार्सस में था क्लियोपाट्रा को देखते ही अपनी चौकड़ी भूल गया और बजाय उस पर स्वत्व प्राप्त करने के स्वयं उसके अधीन बन गया।

क्लियोपाट्रा के स्वत्व से एएटनी मरणपर्यन्त मुक्त न हो सका और शृङ्गाररस में फँस कर उसने वीर रस को तिलाञ्जलि दे दी। जिस एएटनी ने सैकड़ों वीर पुरुषों का परास्त करके हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ डाल दीं वही एएटनी क्लियोपाट्रा की प्रेम रूपी बेड़ियों में फँसकर निकम्मा हो गया और उसके साथी आक्टेवियस ने उसके विरुद्ध अवसर पाकर रोम में प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

एएटनी की स्त्री फुल्विया ने अपने पति को क्लियोपाट्रा के पंजे से छुड़ाने का एक यह उपाय सोचा कि उसने बीच में पड़ कर आक्टेवियस और एएटनी में लड़ाई करा दी। इस बात से उसका केवल यही प्रयोजन था कि एएटनी मिश्र से आक्टेवियस के विरुद्ध लड़ने के लिए आवेगा। ऐसा ही हुआ। परन्तु इससे फुल्विया की मनोकामना सिद्ध न हुई। और एएटनी उस पर इतना क्रुद्ध हुआ कि दीन अबला शोक के मारे

मर गई। एण्टनी और आक्टेवियस में किञ्चित्काल के लिए सन्धि हो गई जिसके अनुसार आक्टेवियस की बहन आक्टेविया से उसका विवाह भी हो गया और रोमन राज्य का इस प्रकार विभाग हुआ कि पश्चिमी देश आक्टेवियस के पास रहें, पूर्वी एण्टनी के और अफ्रीका लैपीडस के।

यह सन्धि बहुत दिनों न चली, क्योंकि एण्टनी फिर मिश्र को लौट आया और क्लियोपाट्रा के साथ भोग विलास करने लगा। आक्टेवियस ने अवसर पाकर उसे रोम में खूब बदनाम कर दिया और अपनी बहन आक्टेविया को भेजा कि वह मिश्र में एण्टनी के पास जाकर अपने पत्नीत्व को स्थापित करे। आक्टेविया भी रूपवती थी। जब एण्टनी और क्लियोपाट्रा को मालूम हुआ कि आक्टेविया अथेंस से आरही है, तो क्लियोपाट्रा न वह वह खेल खेले कि एण्टनी ने बीच से ही उसे कहला भेजा कि तुम सीधी रोम को लौट जाओ और कि तुम मेरी स्त्री नहीं हो!

एण्टनी ने अपनी विषयासक्ति को यहीं तक रहने न दिया, किन्तु उसने खुल्लमखुल्ला क्लियोपाट्रा से विवाह कर लिया। सिकन्दरिया नगर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया और एक चाँदी के चबूतरे पर दो सोने के तख्त रक्खे गये, जिनमें से एक पर एण्टनी * बेकस बन कर और दूसरे पर क्लियोपाट्रा आइसिस* बनकर बैठे।

क्लियोपाट्रा का एक लड़का सिसारियो, जो जूलियस सीज़र से उत्पन्न हुआ था, एण्टनी के साथ मिल कर राज करने लगा, और उसके दो लड़के जो एण्टनी से उत्पन्न हुए थे महाराजाधिराज की पदवी पर नियत किये गये।

*बेकस मिश्र के एक देव और आइसिस एक देवी का नाम है।

छठे हनरी की मृत्यु के पश्चात् चौथे एडवर्ड ने थोड़े दि-
नक शांतिपूर्वक राज किया। उसके मरते ही रिचार्ड ग्लोस्टर
ने एडवर्ड के बालक पांचवें एडवर्ड को मार कर राज ह
लिया! यह कथा आगे आवेगी।

एएटनी और क्लियोपेट्रा

(ANTONY and CLEOPATRA)

अनुभूमिका

पाठकवर्ग ! आपने रोम का कुछ हाल 'जूलियस सीजर' की कथा से जान लिया है। शेष इस वर्त्तमान कहानी से विदित होगा, जिस को 'एएटनी और क्लियोपाट्रा' नामक नाटक में महाकवि शेक्सपियर ने दर्शाया है। परन्तु नाटकोक्त कहानी को आरम्भ करने से पूर्व उचित यह है कि जूलियस सीजर की मृत्यु के पश्चात् और इस कहानी के पूर्व तक जो कुछ घटनायें रोम में हुई हैं उनका संक्षेप से वर्णन कर दें, जिससे इस नाटक के समझने में कुछ सहायता मिले।

आपने जूलियस सीजर की मृत्यु का हाल पढ लिया। आपने यह भी जान लिया कि किस प्रकार फिलिपी की लड़ाई में सीजर के सब घातक आत्मघात करके या किसी अन्य के हाथ से मारे गये। रोम का राज्य तीन पुरुषों के संयुक्त आधिपत्य में आगया जिसको आधिपत्य-त्रय (Triumvirate) कहते हैं। एक इनमें से मार्क एएटनी था, जिसकी वक्तृता आप लोग सीजर की मृत्यु पर पढ चुके हैं और जो सीजर का भक्त सेनापति था। दूसरा आक्टेवियस था जो सीजर का नाती था और जिसे सीजर ने गोद रख लिया था। तीसरा लैपीडस था। परन्तु मुख्य इनमें से एएटनी और आक्टेवियस ही थे।

आक्टेवियस इन बातों से और चिढ़ गया और उसने रोम की राजसभा से सम्मति लेकर एण्टनी पर चढ़ाई की। एण्टनी भी सामना करने चला और दोनों दलों की एक्टियम में मुठ-भेड़ हो गई। परन्तु एण्टनी क्लियोपाट्रा को भागता हुआ देख कर स्वयं भी भाग आया, आक्टेवियस को जय प्राप्त हुई। और जय क्यों न प्राप्त होती? क्योंकि एण्टनी तो शृङ्गार रस का ही चस्का रहा था। एक ओर तो अधीन राजों की सेना एकत्रित करने का हुक्म दे रक्खा था, दूसरी ओर नाचने गाने वाले भोग विलास के लिए आये हुए थे। लड़ाई क्या थी, एक तमाशा था।

क्लियोपाट्रा एक बनी हुई औरत थी। उसने एण्टनी का तो इस प्रकार सत्यानाश ही कर दिया था, परन्तु दूसरी ओर गुप्त रीति से वह आक्टेवियस से अपने तथा अपने लड़कों के बचाव के लिए बात चीत करने लगी। एण्टनी को इसका पता लग गया और वह बड़ा क्रुद्ध हुआ। क्लियोपाट्रा ने एण्टनी को अप्रसन्न समझ कर अपने तईं प्रसिद्ध कर दिया कि क्लियो-पाट्रा मर गई। एण्टनी इसकी मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुःखी हुआ और अपने एक नौकर से कहा कि मुझे मार डालो। नौकर ने तो उसको नहीं मारा, परन्तु एण्टनी ने स्वयं अपने कलेजे में ऐसी तलवार मारी कि वह घायल हो गया। क्लियोपाट्रा ने इतने में एण्टनी को अपने पास बुला लिया और वह उसी की गोद में मर गया। क्लियोपाट्रा ने अपने प्यारे की मृत्यु पर बड़ा रंज किया और स्वयं अपनी छाती में इतने घूँसे मार लिए कि वह बीमार हो गई। आक्टेवियस इतने में सिक-न्दरिया आदि नगरों को जीतता हुआ आ पहुँचा। उसकी इच्छा यह थी कि मैं क्लियोपाट्रा को ले जाकर रोम में अपने जयोत्सव में दिखलाऊँ। क्लियोपाट्रा इस अपमान को सहन नहीं कर

सकी और उसने एक साँप को किसी माली से फूलों की टोकरी में मँगाकर अपनी छाती में डसवा लिया और मर गई। आक्टेवियस जब आया तो इस शोकप्रद दृश्य को देखकर बड़ा दुःखी हुआ। एएटनी और क्लियोपाट्रा एक ही शवालय में गाड़े गये।

यह सक्षेप से एएटनी और क्लियोपाट्रा का हाल लिखा गया। अब हम शेक्सपियर लिखित कहानी को आगे वर्णन करते हैं।

एएटनी के दो साथी डिमेट्रियस और फिलो नामी एक दिन एएटनी के वर्त्तमान आचार व्यवहार पर बातचीत करने लगे कि—

"देखो आज कल एएटनी की क्या दशा हो गई है ? क्या यह वही एएटनी है जो युद्ध का शब्द सुनकर उत्तेजित हो जाया करता था ? आज यह बिल्कुल क्लियोपाट्रा के हाथ में है। देखो, इस चतुर रमणी ने इसको भेड़ा बनाकर रख लिया है। देखो कहते कहते ही एएटनी अपनी प्रमदा सहित आ रहा है।"

जब यह बातें हो ही रही थीं कि एएटनी, क्लियोपाट्रा तथा अनुचरों सहित वहाँ पर आ पहुँचा। उन दोनों स्त्री पुरुषों में यह बातें हो रही थीं।

क्लियोपाट्रा—यदि यह सच्चा प्रेम है तो बताओ इसका परिमाण कितना है ?

एएटनी—वह प्रेम प्रेम नहीं जिसकी थाह हो सके !

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारे प्रेम की सीमा लगा लूँगी !

एएटनी—तो तुमको नया आकाश ढूँढ़ना पड़ेगा।

इतने में रोम का एक दूत एएटनी के पास आकर कहने लगा—

"महाराज! रोम से खबर लाया हूँ।" एण्टनी इस समय कुछ सुनना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कहा "संक्षेप से कहो।"

प्रेमरसिका क्लियोपाट्रा ताड़ गई कि एण्टनी को मिश्र से ले जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। इसलिए बातें बना कर कहने लगी—

"नहीं! एण्टनी! नहीं! तुमको रोम की खबर सुन लेना चाहिए। शायद श्रीमती फुलविया देवी नाराज हों। शायद युवक आक्टेवियस ने हुक्म दिया हो कि 'यह करो या वह करो। इस राज को ले लो और उसे छोड़ दो। ऐसा करो नहीं तो दण्ड मिलेगा।' भला ऐसी बातें न सुननी चाहिए?"

एण्टनी—क्यों प्यारी?

क्लियोपाट्रा—शायद अब तुम यहाँ न रह सको। आक्टेवियस ने तुमको मिश्र से चले जाने की आज्ञा दी हो! मालूम होता है कि अब तुम मिश्र में नहीं रह सकते! इस-लिए तुम को आक्टेवियस और फुलविया की बात सुननी चाहिए।

एण्टनी—चाहे रोम टाइबर नदी में बह जाय। चाहे समस्त राज नष्ट हो जाय। मुझे परवाह नहीं है। मेरा तो यही स्थान है। राज क्या है, मिट्टी ही मिट्टी तो है। (क्लियोपाट्रा का आलिङ्गन करके) जीवन का सुख तो केवल इसी में है।

क्लियोपाट्रा—प्रणयचातुरी! अब तुमने फुलविया से विवाह किया तो उससे प्रेम क्यों नहीं करते होगे।

एण्टनी—अब व्यर्थ न कहो। मैं सुख भोगने के समय को इन बातों में व्यय करना नहीं चाहता।

क्लियोपाट्रा—दूत की बात सुनो।

एण्टनी—चलो चलो! झगड़ो मत! पर तुमको सब बातें शोभा देती हैं! हँसना, रोना और झगड़ना सभी तुममें अच्छे मालूम होते हैं।

इस प्रकार क्लियोपाट्रा बातें बना बना कर एण्टनी को दूत की बात सुनने से रोकती थी, और एण्टनी उसके प्रेम में मुग्ध था। उस समय तो उसने राम के दूत को बिना बात सुने हुए ही टाल दिया, परन्तु एक समय उसे अवसर मिल गया और एण्टनी को अकेला पाकर उसने रोम की सब दशा सुना दी। वह कहने लगा—

"आप की स्त्री फुलूविया पहले पहल रणक्षेत्र में आई"

एण्टनी—मेरे भाई लूसियस से लड़ने!

दूत—हाँ। लेकिन उन दोनों में शीघ्र सन्धि हो गई और उन दोनों ने मिल,कर आक्टेवियस सीजर का सामना किया, परन्तु हार खाई।

एण्टनी—अच्छा! और भी कोई बुरी खबर है?

दूत—श्रीमहाराज! बुरी बात कहने में कहने वाले की भलाई नहीं है।

एण्टनी—उसी समय जब उस बात का सम्बन्ध किसी कायर या मूर्ख से हो—कहो डरो मत! जो बात हो चुकी वह हो चुकी! जो मुझसे सच सच कहता है, चाहे उसमें मृत्यु ही क्यों न हो, मैं उसे प्रिय भाषण समझता हूँ!

दूत—ख़बर बहुत बुरी है। लैबीनस ने एशिया का राज यूफ्रेटीज तक फैला लिया है। पार्थियन सेना के साथ उसने सीरिया से लेकर लिडिया और आयोनिया तक सब देश पर प्रभुत्व पा लिया है। फिर भी—

एएटनी—क्या तू यह कहना चाहता है कि एएटनी—

दूत—श्रीमहाराज !

एएटनी—स्पष्ट कहो—बात को मत छपाओ—बताओ लोग रोम में क्लियोपाट्रा के लिए क्या कहते हैं। फुलविया क्या कहती है—मेरे दोषों को भली प्रकार प्रकट करो।

दूत—जो श्री महाराज की आज्ञा !

"यह दूत तो चला गया। परन्तु उसी समय एक और दूत ने आकर खबर दी कि फुलविया मर गई।"

एएटनी—कहाँ ?

दूत—सिसम में उनका प्राणान्त हुआ ! बीमारी आदि का सब हाल इस पत्र में लिखा है।

दूत तो पत्र देकर चला गया पर एएटनी पत्र पढ़कर सोचने लगा।

"देखो। एक महान आत्मा संसार से उठ गया। यद्यपि मेरी इच्छा भी यही थी। परन्तु अब मैं चाहता हूँ कि वह जीवित होती। मुझे अब इस जादूगरनी (क्लियोपाट्रा) के पंजे से छूटना चाहिए। इन बुराइयों के अतिरिक्त जिनकी मुझे खबर है बहुत सी अन्य बुराइयाँ भी मेरे यहाँ रहने से उत्पन्न हो रही हैं।

फिर उसने अपने एक साथी एनोबार्बस को बुलाकर कहा कि हमको यहाँ से जाना चाहिए।

एनोबार्बस—तो मालूम होता है कि हम इन स्त्रीगण की मृत्यु का कारण होंगे। इस हमारे निर्दयीपन से उनको दारुण दुःख होगा। हमारे विरह में वे अवश्य अपने प्राण दे देंगी।

एएटनी—हमको तो जाना ही होगा !

एनोबार्बस—अगर ऐसी ही जरूरत है तो स्त्रियों को मरने दो। परन्तु बिना किसी बात के उनको मारना ठीक नहीं है। क्लियोपाट्रा को अगर आपके जाने की साँस भी मालूम हुई तो वह झट मर जायगी। मैंने देखा है कि वह इससे छोटी छोटी बातों पर बीस बीस बार मर जाती है। बोध होता है कि मरने में भी कुछ प्रेमाकर्षण है, नहीं तो क्लियोपाट्रा इतनी जल्दी मरना न चाहती।

एण्टनी—उसका चातुर्य मनुष्य की बुद्धि में नहीं आ सकता।

एनोबार्बस—नहीं नहीं ऐसा मत कहो। उसको प्रेम के सिवा और कुछ नहीं आता। दूसरी स्त्रियों के आँसू और दीर्घश्वास क्लियोपाट्रा के सामने तुच्छ हैं। इसके आँसू समुद्र की तरङ्गों से कम नहीं हैं। इसको छल नहीं कह सकते। अगर आप इसको भी छल कहते हैं तो मानना पड़ेगा कि क्लियोपाट्रा भी इन्द्र की भाँति वर्षा कर सकती है।

एण्टनी—अच्छा होता कि मैंने इसको कभी देखा न होता।

एनोबार्बस—तो आप दुनिया की एक अतुल वस्तु से वञ्चित रह जाते। और आपका देशाटन कलङ्कित हो जाता।

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या महाराज!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या फुल्विया?

एण्टनी—मर गई।

एनोबार्बस—यह तो ख़ुशी की बात है, ईश्वर को धन्यवाद दो। जब ईश्वर किसी पुरुष की स्त्री को मार डाले तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर सांसारिक दर्ज़ी के समान है।

क्योंकि जब पुराने वस्त्र फट गये तो नये मिलेंगे। अगर फुल्विया के सिवा दुनिया में कोई अन्य स्त्री न होती तो अवश्य शोक की बात थी। यह शोक तो हर्षसूचक है जीर्ण वस्त्र के स्थान में नया मिलेगा।

एण्टनी—राज के विषय में वह जो कुछ गड़बड़ डाल गई है, इससे तो जाना ही होगा।

एनोबार्बस—और आपने जो यहाँ गड़बड़ डाली है इसके कारण आपका यहाँ से जाना नहीं हो सकता। क्लियोपाट्रा बिल्कुल आपके ही आश्रित है।

एण्टनी—अब अधिक हँसी मत उड़ाओ। निश्चय है कि हमको रोम को आना चाहिए। राज में बड़ी गड़बड़ मची हुई है। रोम से कई मित्रों ने हमारे वहाँ आने पर आग्रह किया है। सेक्स्टस पोम्पे का ज़ोर हो रहा है उसने आक्टेवियस पर चढ़ाई की है। हमको बहुत काम करने हैं। मैं अब क्लियोपाट्रा को जाने की सूचना दूँगा।

क्लियोपाट्रा के छल बल प्रसिद्ध थे। उसे पहले से ही मालूम हो गया था कि एण्टनी जाने वाला है। इसलिए उसको रोकने के लिए उसने एक और ढङ्ग निकाला और बीमार सी बनकर बैठ गई। जब एण्टनी निकट आकर कहने लगा कि "शोक है मुझे अब मन का भाव कहना ही पड़ा।" तो क्लियोपाट्रा सुनी अनसुनी कर गई।

जब एण्टनी ने आगे बढ़ कर कहा "प्रियतम महारानी" तो क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"मुझसे दूर खड़े हो।"

एण्टनी—क्या बात है ?

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारी आँखों से पहचान गई कि कोई अच्छी ख़बर है। विवाहिता स्त्री ने क्या कहला भेजा है कि "तुम चले आओ?"। अगर वह तुम्हें कभी यहाँ आने न देती तो अच्छा होता। तुम जाओ! वह यह न कहे कि मैं तुमको रोकती हूँ। मेरा तुम पर कुछ वश नहीं है। तुम उसी के हो!

एण्टनी—ईश्वर जानता है!

क्लियोपाट्रा—कभी किसी महारानी को ऐसा धोखा नहीं दिया गया! मुझे तो पहले ही से शङ्का हो गई थी।

एण्टनी—हे क्लियोपाट्रा—

क्लियोपाट्रा—जब तुमने फुलविया के साथ अन्याय किया तो मैं फिर तुम्हारी प्रतिज्ञाओं का कैसे विश्वास करूँ। तुम शपथ खाते जाते हो और प्रतिज्ञा तोड़ते जाते हो!

एण्टनी—प्यारी महारानी!

क्लियोपाट्रा—नहीं नहीं! जाने के लिए बहाना ढूँढने की ज़रूरत नहीं। जाना है तो चले जाओ। बहानों की तो उस समय ज़रूरत थी जब रहना चाहते थे। तब तो जाने का नाम भी न था। तब हम रूपवती थी। तब हमारा कुरूप से कुरूप अंग भी महा सुन्दर था। वही अङ्ग अब भी है—हे एण्टनी! बड़ा वीर होकर भी तू बड़ा झूठा निकला!

एण्टनी—प्रिये क्या कहती हो?

क्लियोपाट्रा—हाय! एण्टनी जो मेरा हृदय तेरे शरीर में चला जाता तो तू जानता कि मिश्र में एक स्त्री तुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है।

एएटनी—सुनो ! मुझे कार्य्यवश घर जाना है। लेकिन मेरा मन यहीं रह जायगा। इटली में लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। सेक्स्टस पौम्पे रोम पर चढ़ा आ रहा है। तुमको डरना नहीं चाहिए। फुल्विया मर गई।

क्लियोपाट्रा—अरे मुझे बच्चों की तरह बहलाते हो ! भला फुल्विया मर सकती है ?

एएटनी—हाँ मर गई। देखो यह पत्र आया है। इसे पढ़ो।

क्लियोपाट्रा—हाय ! झूठा प्रेम ! पवित्र शीशियों में दुःख का पानी ! अब मैं जान गई कि फुल्विया के मरने पर मुझसे कैसा प्रेम होगा !

एएटनी—अब लड़ो मत। सुनो मुझे जाना है। कहो तो आऊँ कहो न आऊँ। ईश्वर साक्षी है कि मैं तुम्हें कभी न भूलूँगा।

इसके पश्चात् एएटनी मिश्र देश से चला गया और चलते समय एएटनी और क्लियोपाट्रा में दृढ़ प्रेम के लिए प्रतिज्ञायें हुईं। एएटनी के चले जाने पर क्लियोपाट्रा ने बड़ा शोक मनाया। वह प्रति दिन एक दूत एएटनी के पास भेजने लगी और सिवा 'एएटनी !' 'एएटनी !' के और कुछ बात उसके मुँह से नहीं निकलती थी। वह नित्य एएटनी का ही ध्यान किया करती थी। न उसे गाना अच्छा लगता था और न किसी और वस्तु से उसका जी बहलता था। परन्तु वह एएटनी के ही विरह में अपना समय व्यतीत करती थी।

उधर रोम में आक्टेवियस एएटनी को बदनाम कर रहा था। वह एक दिन लैपीडस से कह रहा था—

देखो मैं बिना कारण एण्टनी से घृणा नहीं करता । सिकन्दरिया से खबर आई है कि वह रात दिन नाच रंग में समय व्यतीत करता है । अब उसमें उतना ही पुरुषत्व है जितना क्लियेपाट्रा में । क्लियेपाट्रा में उतना ही स्त्रीत्व है जितना एण्टनी में । देखो उसने हमारे दूत को बिना बात किये ही टाल दिया ।"

लैपीडस—मुझे तो एण्टनी में इतने दोष नहीं दिखाई देते कि उसकी समस्त भलाइयों को छिपा लें ।

आक्टेवियस—आप तो बड़े नर्मदिल मालूम होते हैं । क्या टालमी * के पलंग पर लेटना दोष नहीं है ? क्या विषयासक्ति में राज लुटा देना दोष नहीं है ?

इस समय एक दूत ने आकर खबर दी कि सेक्स्टस पौम्पे मेसीना से युद्ध की तैयारियाँ करके रोम पर चढ़ा आरहा है । उसने यह विचार किया था कि एण्टनी क्लियेपाट्रा की गोद को छोड़कर एसे युद्ध के लिए क्यों आने लगा । सीजर के पास रुपया है, पर लोग उसको नहीं चाहते । लैपीडस खुशामदी आदमी है, पर कोई उसकी पर्वा नहीं करता, इसलिए रोम को जीतने का यह सब से उत्तम अवसर है ।

परन्तु उसका यह विचार ठीक न निकला । क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं एण्टनी अपने देश की दुर्दशा का हाल सुन कर मिश्र से चल पड़ा था । जब वह रोम पहुँचा तो उसमें और आक्टेवियस में झगड़ा होगया, क्योंकि आक्टेवियस पहले ही से लोगों को एण्टनी के विरुद्ध भड़का रहा था । लैपीडस उन दोनों में सन्धि कराने का यत्न करता था और कहता था कि हम तीनों मित्रों को इस समय अपने निज झगड़ों

---

*क्लियेपाट्रा टालमी की स्त्री थी ।

को भूल जाना चाहिए, क्योंकि हम सब का शत्रु पीछे आ रहा है। शत्रु को परास्त करने के लिए हम सब को एक हो जाना ही उत्तम है।

एएटनी ने कहा—

"आक्टेवियस ! मैंने सुना है कि तुम बहुत सी ऐसी बातों से नाराज हो गये हो, जिनका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

आक्टेवियस—भला मैं क्यों नाराज हो जाता ? और विशेष कर तुमसे ? मुझे आपके नाम से भी कुछ सम्बन्ध नहीं है।

एएटनी—तुम्हारा मेरे मिश्र में रहने से क्या सम्बन्ध था ?

आक्टेवियस—वही जो तुम्हारा मेरे रोम में रहने से है। हाँ अगर तुमने मेरे अधिकार में हस्तक्षेप किया तो तुम्हारा मिश्र में रहना भी मुझसे कुछ सम्बन्ध रखता है ?

एएटनी—कैसा हस्तक्षेप ?

आक्टेवियस—तुम मेरा आशय समझ गये होगे। तुम्हारे भाई और स्त्री दोनों ने मुझसे लड़ाई की। वह कहते थे कि तुमने उनको आज्ञा दी है।

एएटनी—तुम्हारी भूल है। मेरे भाई ने मुझसे कभी युद्ध के लिए नहीं पूछा। मेरे पत्रों से स्पष्ट है कि मेरे भाई ने मेरी इच्छा के विरुद्ध किया। अगर तुमको झगड़ा ही करना है तो दूसरी बात है। नहीं तो इसमें मैं निर्दोष हूँ।

आक्टेवियस—तुम तो आत्मश्लाघा करके मेरी भूल बताते हो। यह केवल बहाना है।

एएटनी—नहीं नहीं। हाँ मेरी स्त्री के झगड़ों का और कारण है। ईश्वर तुमको भी ऐसी स्त्री देता तो मालूम पड़

आता। देखो, तिहाई दुनिया तुम्हारे अधिकार में है। परन्तु इस पर राज करना सरल है, लेकिन ऐसी स्त्री को वश में करना दुस्तर है। तुमको यह सोचना चाहिए कि मेरी स्त्री पर मेरा वश न था।

आक्टेवियस—मैंने सिकन्दरिया में तुम्हारे पास एक दूत भेजा, जब तुम वहाँ रँगरेलियाँ खेल रहे थे। उसको तुमने अपमान के साथ निकाल दिया।

एण्टनी—वह विना आज्ञा के घुस आया था! दूसरे दिन मैंने उस का बात सुन ली। वह बात क्षमा माँगने के लगभग थी!

आक्टेवियस—तुमने प्रतिज्ञा भङ्ग की।

लेपीडस—आक्टेवियस! नर्मी से।

एण्टनी—नहीं नहीं कहने दो। भला कौन सी प्रतिज्ञा?

आक्टेवियस—मुझे ज़रूरत के समय न तो सेना भेजी और न अन्य सहायता दी, और साफ इनकार कर दिया।

एण्टनी—इनकार नहीं किया। भूल गया। बात यह है कि फुल्विया ने मेरे मिश्र से बुलाने के लिये आप से लड़ाई छेड़ दी थी। मैं इसके लिये क्षमा माँगता हूँ।

आक्टेवियस—जब हम दोनों के दिलों में भेद है तो अब बनने की नहीं।

जब इस प्रकार झगड़ा हो रहा था तो कुछ मनुष्यों के कहने से सन्धि का एक उपाय सोचा गया अर्थात् आक्टेवियस की बहन आक्टेविया का, जो पहले मार्सीलस से ब्याही गई थी और जो अब विधवा हो गई थी, एण्टनी के साथ विवाह हो जाय।

यह प्रस्ताव दोनों ओर से स्वीकृत हो गया और दोनों का विवाह कर दिया गया। इस प्रकार थोड़े दिनों के लिए

आक्टेवियस और एएटनी में सन्धि हो गई।

यह सब मिलकर मिसीनम के निकट पौम्पे का सामना करने के लिए उपस्थित हुए। परन्तु पौम्पे ने यह देख कर कि उसके शत्रुओं की सामुद्रिक तथा भौमिक सेना उसकी सेना से कहीं बढ कर है और जीतने की कुछ भी आशा नहीं है, युद्ध करने से इनकार कर दिया और इस शर्त पर सन्धि कर ली कि सिसली और सार्डीनिया पौम्पे ले ले और अन्य सामुद्रिक थाना पर अपना स्वत्व छोड दे।

इस सन्धि के पश्चात् इन चारों में प्रीति भोजन हुआ और पौम्पे ने बड़े समारोह से अपने जहाज पर एएटनी, लैपीडस और आक्टेवियस को निमन्त्रित करके उत्सव मनाया। जब ये सब एक दूसरे से पृथक् हुए तो एएटनी अपनी नई स्त्री आक्टेविया के साथ आकर अथेन्स में रहने लगा।

जिस समय एएटनी अथेंस में था क्लियोपाट्रा उसको वहाँ से बुलाने के बहुत से उपाय सोच रही थी। उसके दूत वहाँ की सब बातें उस तक पहुँचाया करते थे। कई बार उसने गुप्त रीति से एएटनी को बुलाना चाहा। आक्टेविया को विवाह की खबर सुन कर सपत्नीभाव ने उसे बड़ा कष्ट दिया और उसने एक दूत अथेंस को इसलिए भेजा कि देखो एएटनी और आक्टेविया मे कैसी बनती है। सिकन्दरिया में एक दिन जब क्लियोपाट्रा बैठी हुई थी, एक अनुचर ने उसे सूचना दी कि दूत आ गया।

क्लियोपाट्रा—कहाँ है?

अनुचर—आने से डरता है।

क्लियोपाट्रा—क्यों?

अनुचर—महारानी! यह तो बिचारा दूत है। यहूदियों का राजा हीरड भी आप के सम्मुख आने से डरता था!

क्लियोपाट्रा—हा! हा! हीरड का सिर अवश्य कटेगा! लेकिन एण्टनी जिसके हुक्म से ऐसा होता, यहां है ही नहीं!

दूत—महारानी की जय हो!

क्लियोपाट्रा—क्या तूने आक्टेविया देखी!

दूत—हाँ!

क्लियोपाट्रा—कहाँ!

दूत—रोम में एण्टनी और आक्टेवियस के साथ!

क्लियोपाट्रा—क्या वह मुझ जैसी लम्बी है।

दूत—नहीं!

क्लियोपाट्रा—क्या उसे बोलते सुना? धीरे बोलती है? या ज़ोर से?

दूत—महारानी जी! धीरे!

क्लियोपाट्रा—ये तो अच्छी बातें नहीं हैं। एण्टनी बहुत दिनों इससे प्रेम न करेगा!

एक अनुचर (दूसरे से)—वह महारानी के तुल्य कैसे हो सकती है।

क्लियोपाट्रा—ठिगनी और धीरे बोलने वाली! उसकी चाल कैसी है?

दूत—रेंगती है! उसका चलना और बैठना एक सा है! उसके देह पर चैतन्यता नहीं! केवल चित्रवत् है!

क्लियोपाट्रा—क्या यह ठीक है?

दूत—हाँ!

क्लियोपाट्रा—कितनी बड़ी है?

दूत—विधवा थी!

क्लिओपाट्रा—ओ हो! विधवा?

दूत—तीस वर्ष की होगी।

क्लियोपाट्रा—मुँह कैसा है? लम्बा या गोल?

दूत—गोल! वह भी भद्दा!

क्लियोपाट्रा एण्टनी के मन का भाव जानती थी। अपनी सपत्नी को अपने समान रूपवती न पाकर उसे कुछ सन्तोष हो गया और भीतर ही भीतर उसने इस प्रकार उद्योग किया कि एण्टनी का मन आक्टेविया से हट गया और वह मिश्र जाने के लिए अवसर खोजने लगा।

दैवगति से यह अवसर भी उसके हाथ शीघ्रही आ गया, क्योंकि किसी बात पर आक्टेवियस, लैपीडस और पौम्पे के मध्य में फिर युद्ध छिड़ गया! और बिना एण्टनी के सूचना दिये आक्टेवियस और लैपीडस ने पौम्पे का परास्त कर दिया। इसके पश्चात् आक्टेवियस ने इस दोष में कि उसने पौम्पे के साथ गुप्त रीति से देशहित के विरुद्ध पत्र-व्यवहार किया था लैपीडस को पकड़ लिया! इस प्रकार आक्टेवियस और एण्टनी के मध्य में जो एक प्रकार की रोक थी वह दूर हो गई। एण्टनी को ये सब बातें बहुत बुरी मालूम हुईं। उसने आक्टेविया से कहा कि अब मुझमें और तुम्हारे भाई में अवश्य लड़ाई होगी क्योंकि उसने पौम्पे से लड़ाई की और मनमानी बातें राज सभा से स्वीकृत करा,लीं, और सब के सामने मुझे गालियाँ देता है!

आक्टेविया—प्यारे पति! इन सब बातों का विश्वास मत करो! यदि युद्ध हुआ तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी। मैं भाई के लिए प्रार्थना करूँगी या पति के लिए! परमात्मा ऐसी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं करता है!

एण्टनी—जिसका अधिक प्रेम हो उसी के लिए। यहाँ आत्म-गौरव का प्रश्न है। मुझे अपना गौरव अवश्य रखना है। अगर तुम चाहती हो तो स्वयं जाकर अपने भाई से कहो और हम दोनों में सन्धि करा दो।

इस समय आक्टेविया तो अर्थेस से रोम को गई इधर एण्टनी वहाँ से चल कर क्लियोपाट्रा के समीप चला आया। जब आक्टेविया अपने भाई के पास पहुँची तो आक्टेवियस ने कहा, "बहन! क्या तुमको तुम्हारे पति ने छोड़ दिया!"

आक्टेविया—तुम ऐसा क्यों कहते हो?

भाई—तुम ऐसे चुपके मेरे पास क्यों आ गई! तुम उस समारोह के साथ नहीं आई जिससे आक्टेवियस की बहन को आना उचित है। एण्टनी की स्त्री के साथ सेना होनी चाहिए। घोड़ों के हिनहिनाने से मालूम होना चाहिए कि एण्टनी की स्त्री आ रही है। लोग वृक्षों पर तुमको देखने के लिए चढ़ जायें। धूल घरों की छत तक पहुँचने लगे। तुम तो साधारण स्त्री के समान चली आई! हम तुम्हारा सत्कार भी न कर सके!

बहन—मैं इस प्रकार आ सकती थी। परन्तु मुझे और काम था, जिसके कारण मैंने इसी तरह आना उचित समझा। मेरे स्वामी एण्टनी ने सुना था कि तुम युद्ध की तैयारी कर रहे हो। इसलिए मैंने यहाँ आने की आज्ञा चाही।

भाई—और उसने झट आज्ञा दे दी, क्योंकि तुम अपने पति तथा उसकी विषय वासना के बीच में एक प्रकार की रोक थीं।

बहन—भाई! ऐसा मत कहो!

भाई—मैं उसे खूब जानता हूँ। मुझे पल पल की खबर मिलती रहती है। वह अब कहाँ है?

बहन—अथेंस में।

भाई—नहीं! बहन नहीं! तुम्हें धोखा हुआ! उसे क्लियोपाट्रा ने बुला लिया! उसने अपना राज उस दुष्ट स्त्री को दे डाला! वे दोनों युद्ध के लिए राजों को इकट्ठा कर रहे हैं। लिबिया का राजा बोकस, कैपेडोसिया का आर्कीलस, पैफ्लेगोनिया का फिलेडैल्फस, थिरेस का एडालस, अरब का माल्कूस और अन्य राजे हमारे विरुद्ध तैयारी कर रहे हैं।

थोड़े दिनों पश्चात् दोनों दल एक्शियम के निकट एकत्रित हुए, एण्टनी की भौमिक सेना तो बहुत थी, परन्तु सामुद्रिक सेना इतनी सुशिक्षित नहीं थी, इसलिए एण्टनी के सेनापतियों ने प्रार्थना की कि महाराज आप भौमिक युद्ध कीजिए, क्योंकि आक्टेवियस के जहाज बड़े मजबूत हैं। परन्तु एण्टनी के विचार क्लियोपाट्रा के अधीन थे। क्लियोपाट्रा उसके साथ थी और वह जो कुछ कहती थी, एण्टनी वही करता था! क्लियोपाट्रा तो स्त्री ही थी परन्तु उसने एण्टनी पर लक्ष्य पाकर एण्टनी को भी स्त्रीवत् कर दिया, क्योंकि स्त्रैण मनुष्यों में पुरुषत्व कम हो जाता है, और उनके विचार भी बिगड़ जाते हैं। क्लियोपाट्रा के कथनानुसार, एण्टनी ने अपने सेनापतियों की बात न मानी और सामुद्रिक युद्ध आरम्भ कर दिया।

जब युद्ध हो रहा था उस समय क्लियोपाट्रा रणक्षेत्र से भाग निकली। उसके जहाजों को भागता देखकर एण्टनी भी उसके पीछे चल दिया। क्योंकि "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"। इस प्रकार आक्टेवियस ने उस एण्टनी पर जय पाई, जिसने

पहले कभी रण में पीठ नहीं दिखाई थी। जब वह सिकन्द्रिया में आया तो पछताने लगा और अपने कायरपन पर बड़ा लज्जित हुआ। उसने अपने को एक कमरे में बन्द कर लिया और जब कुछ अनुचर उसके समीप गये तो कहने लगा—

"सुनो! पृथ्वी मुझे अब अपने ऊपर चलने की आज्ञा नहीं देती। यह मेरा भार उठाने से लज्जित है! मित्रो! यहाँ आओ। मैं ऐसा मार्ग भूला कि सदा के लिए भूल गया। मेरे पास रुपयों से भरा हुआ एक जहाज है। उसे आपस में बाँट लो और आक्टेवियस से जा मिलो। यहाँ से भाग जाओ।"

अनुचर—हम नहीं भाग सकते!

एण्टनी—मैं स्वय भाग आया और कायरों को पीठ दिखाने की विधि बता दी! मित्रो जाओ। अब मेरा ऐसा विचार है जिसमें आपकी जरूरत नहीं है। हाय, मैं उसके पीछे भाग आया जिसको देखकर मुझे लज्जा आती है। हाय! मेरे केश मुझे लज्जा दिलाते हैं! श्वेत केश काले केशों से कहते हैं कि तुम मूर्ख हो। काले श्वेतों से कहते हैं कि तुम कायर हो! मित्रो! अब जाओ।

इतने में क्लियोपाट्रा वहाँ आ गई और कहने लगी—

"यहाँ बैठ जाऊँ!"

एण्टनी—नहीं नहीं!

क्लियोपाट्रा—हाय—हाय!

एण्टनी—धिक् धिक्! फिलिपी के रणक्षेत्र में इस आक्टेवियस ने तलवार तक न छुई। यह तो इधर उधर नाचता ही रहा! केसियस और ब्रूटस दोनों को मैंने ही पराजित कर दिया था। परन्तु हाय!

अनुचर—महाराज! महारानी खड़ी हैं!

एण्टनी—हाय! मेरा यश मिट्टी में मिल गया! हाय क्लियोपाट्रा! तू मुझे कहाँ ले आई! इन लज्जित आँखों से मैं तुझे कैसे देखूँ!

क्लियोपाट्रा—नाथ! क्षमा करो। मेरे जहाज भयभीत हो गये। मैं नहीं जानती थी कि आप मेरे पीछे पीछे भाग उठेंगे?

एण्टनी—अरी क्लियोपाट्रा! तू नहीं जानती कि मेरा मन तेरे पतवार से बँधा था। तू जानती है कि तेरा मुझ पर कितना स्वत्व है और तेरा सकेतमात्र मुझे खींचने के लिए काफी है!

क्लियोपाट्रा—(रोकर) क्षमा करो! क्षमा करो!

एण्टनी—आँसू न गिराओ। तुम्हारा एक एक आँसू एक एक राज से बढ कर है।

अब एण्टनी ने आक्टेवियस सीजर की सेवा में एक आदमी भेजा और प्रार्थना की कि मैं तुम्हारे अधीन रहना अङ्गीकार करता हूँ—अगर आप मुझे मिश्र में रहने दें। अगर यह बात आपको स्वीकृत न हो तो आप मुझे साधारण मनुष्य की भाँति अथेंस में रहने की आज्ञा दीजिए। इसके अतिरिक्त इसी दूत द्वारा क्लियोपाट्रा ने भी प्रार्थना की थी कि "मैं आप का स्वत्व स्वीकार करती हूँ, आप कृपाकर के *टोल्मी राज मेरी सन्तान के लिए छोड दीजिए, क्योंकि इस विजय से यह राज आप के अधीन हो गया है।" सीजर ने एण्टनी की प्रार्थना स्वीकृत नहीं की, किन्तु क्लियोपाट्रा की बात मानली और एक दूत भेजा जो उसको मिश्र मे आकर फुसलावे।

---

*मिश्र के राजे टोल्मी कहलाते थे।

जब एण्टनी का दूत सीजर के पास से लौटकर आया उस समय क्लियोपाट्रा सिकन्दरिया में बैठी हुई एनोबार्बस से बातें कर रही थी। उसने कहा—"एनोबार्बस ! अब हम क्या करें।"

एनोबार्बस—सोचो और मर जाओ !

क्लियोपाट्रा—इसमें हमारा दोष है या एण्टनी का !

एनोबार्बस—केवल एण्टनी का ! क्योंकि उसने अपनी बुद्धि को अपनी इच्छा के अधीन कर दिया, आप युद्ध से भागीं। वह क्यों भागा ? उस समय वीरता प्रेम के अधीन नहीं होनी चाहिए थी ! ऐसे समय में जब आधी आधी दुनिया दोनों ओर से लड़ रही हो, और सब एण्टनी की ओर देख रहे हों तो तुम्हारे जहाजों के साथ भाग आना न केवल हानिकारक ही है किन्तु बड़ी भारी लज्जा का स्थान है।

इतने में एण्टनी दूतसहित आ गया और कहने लगा—"क्या सीजर ने यह उत्तर दिया है ?"

दूत—जी हाँ !

एण्टनी—क्लियोपाट्रा को क्षमाकर दिया जायगा, और मुझे वह उसके हवाले कर देगी !

दूत—सीजर की यही इच्छा है।

एण्टनी—अच्छा इससे कह दो (क्लियोपाट्रा से) "लो इस श्वेत केश वाले सिर को युवक सीजर के समीप भेज दो। और वह तुमको बहुत सा राज दे देगा।"

क्लियोपाट्रा—इस सिर को ?

एण्टनी—(दूत से) अच्छा सीजर से इतना और कह दो कि अभी उसकी नई उम्र है—मैं बूढा हो चुका—रुपया,

जहाज सेना तो एक कायर के पास भी हो सकती हैं। इनकी सहायता से एक बच्चा भी ऐसी ही प्रबलता से लड़ सकता है जैसे सीजर—इसमें कोई वीरता नहीं है। इसलिए हम तुम अकेले युद्ध करें।

एण्टनी तो यह कहता हुआ दूत के साथ बाहर चला गया परन्तु क्लियोपाट्रा के नौकर ने आकर सूचना दी कि सीजर का एक दूत महारानी के दर्शन करना चाहता है। यह वही दूत था जिसे सीजर ने क्लियोपाट्रा को फुसलाने के लिए भेजा था।

क्लियोपाट्रा—कहो सीज़र की क्या आज्ञा है?

दूत—अकेले में सुनिए।

क्लियोपाट्रा—कोई बाहरी आदमी नहीं है, स्पष्ट कहो।

दूत—महारानी जी! सीज़र जानता है कि आपने एण्टनी को प्रेमवश ग्रहण नहीं किया किन्तु डर के कारण।

क्लियोपाट्रा—हाँ!

दूत—इसलिए जो दोष आप में आ गये उन पर आपका कोई वश नहीं था।

क्लियोपाट्रा—सीज़र तो साक्षात् देव है। वह ठीक बात जानता है। मैं स्वयं एण्टनी के वश में नहीं हो गई किन्तु मुझे जीत लिया गया।

दूत—सीजर आप से बड़ा प्रसन्न होगा अगर आप उसके आश्रित हो जायें और एण्टनी को छोड़ दें।

क्लियोपाट्रा—अच्छा सीजर से कह दो कि मैं उसके आश्रित हूँ।

ज्यों ही दूत ने सम्मान के लिये क्लियोपाट्रा के * हाथ

---

*पाश्चात्य देशों का यह नियम है कि सम्मान के लिए महाराजों या महारानियों के हाथ को चूमते हैं। पूर्वी देशों में पैर छूने का नियम है।

की ओर अपना मुँह बढ़ाया त्यों ही एएटनी वहाँ पर आ गया, और दूत को पकड़ कर इतना मारा इतना मारा कि उसके शरीर से रक्त बहने लगा। फिर क्लियोपाट्रा से कहने लगा—

"देख! मेरे आने से पहले तेरा आधा यौवन समाप्त हो चुका था। हाय! क्या मैंने रोम के स्त्री-रत्नों को इसलिए छोड़ा था कि एक दुष्ट स्त्री मेरी घातक बने।

क्लियोपाट्रा—स्वामिन्—

एएटनी—अरे तू सदा की दुष्ट थी। पर जब पाप बढ़ जाता है तो आँखें मुंद जाती हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अपना दोष ही गुण मालूम होने लगता है।

क्लियोपाट्रा—हाय! महाराज!

एएटनी—अरे। अभागी! तू तो सीज़र और पौम्पे के भोजन का ग्रास थी। तू सदाचार क्या जाने?

क्लियोपाट्रा—आप इतने क्रुद्ध क्यों हैं?

एएटनी—सीज़र की ख़ुशामद के लिये उसके दूत से मिलती है।

क्लियोपाट्रा—हाय! श्रीमान ने मुझे नहीं पहचाना।

एएटनी—और मुझे भूल गई।

क्लियोपाट्रा—हाय! अगर मैंने ऐसा किया हो तो परमात्मा मेरे हृदय पर पाषाण की वर्षा करें। मुझे विष लग जाय। मेरा जीवन आज ही नष्ट हो जाय। (रोकर) मेरी ही सन्तान मुझे मार डाले।

क्लियोपाट्रा के आँसुओं को देख कर एएटनी का सब प्रकोप शान्त हो गया और वह फिर उसी प्रकार उससे प्रेम करने लगा जैसा पहले किया करता था, क्योंकि क्लियोपाट्रा के स्वभाव में कुछ ऐसी चञ्चलता थी और एएटनी का मन कुछ ऐसा

वशीभूत हुआ था कि एण्टनी को यदि कभी क्रोध आता था तो वह थोड़ी देर से अधिक न रहता था और क्लियोपाट्रा के छल बल उसे अँगुलियों पर नचाते थे। जब वह चाहती एण्टनी को हँसाती थी जब चाहती रुलाती थी। अब एण्टनी ने एक बार फिर निश्चय किया कि थोड़ी सेना एकत्रित करके आक्टेवियस से भौमिक युद्ध किया जाय, क्योंकि अकेला लड़ना उसने स्वीकार नहीं किया था।

सिकन्दरिया के पास लड़ाई हुई और पहले दिन एण्टनी की विजय हुई। अब एण्टनी एक वीर सिपाही को, जिसने जान तोड़ कर कोशिश की थी, रात के समय क्लियोपाट्रा के पास लाया और उसकी प्रशंसा करने लगा तो क्लियोपाट्रा ने एक सुनहरा कवच उसे इनाम में दिया।

परन्तु भीतर ही भीतर आक्टेवियस के दूत क्लियोपाट्रा को फुसलाने में सफल हो गये और दूसरे दिन जिस समय बड़े ज़ोर से लड़ाई हो रही थी, क्लियोपाट्रा का संकेत पाकर बहुत से सिपाहियों ने सामुद्रिक युद्ध की भाँति पीठ दिखा दी और एण्टनी बिचारा देखता का देखता ही रह गया। परन्तु अब हो ही क्या सकता था, एण्टनी की रही सही आशाओं का भी अन्त हो गया। वह कहने लगा—

"सर्व नाश हो गया! इस दुष्ट स्त्री ने मुझे धोखा दिया। मेरी सेना शत्रु से मिल गई। देखो वे ख़ुशी के मारे टोपियाँ उछाल रहे हैं। हे व्यभिचारिणी तूने मुझे एक युवक के हाथ बेच दिया। हाय! अब मेरा मन चाहता है कि तुझे यहीं समाप्त करदूँ! हे सूर्य्यदेव! आप के उदय होने तक मैं न बचूँगा! आज एण्टनी और भाग्य दोनों एक दूसरे से पृथक् होते हैं। आज वे लोग जो मुझसे परम मित्रता रखते थे और जो मेरे

इशारे पर काम करने थे मेरे शत्रु से मिल रहे हैं। मिश्र की इस दुष्ट स्त्री ने मुझे पकड़वा दिया। इसी ने मुझसे युद्ध कराया। यह मेरे शिर का मुकुट थी और आज इसने फुसला कर मुझे नष्ट कर दिया। (क्लियोपाट्रा को देख कर) अरी चुड़ैल आ तो सही।

क्लियोपाट्रा—महाराज अपनी प्यारी से क्यों कुपित हैं ?

एण्टनी—चल, हट ! नहीं तो अभी तेरे प्राण ले लूंगा। जा, सीजर के साथ जा—वह तुझे रोम के बाजार में लटका कर दिखावेगा। लोग तुझे देख कर हँसेंगे। तू उसके रथ के पीछे चलेगी और चारों ओर से थू थू का शब्द सुनाई-देगा। तुझसे समस्त स्त्री जाति कलङ्कित हो गई। आक्टेविया अपने नाख़ूनों से तेरे मुँह को फाड़ेगी। (क्लियोपाट्रा भाग गई) अच्छा हुआ भाग गई। परन्तु यदि मेरी तलवार के नीचे आ जाती तो अच्छा होता, क्योंकि एक की मृत्यु से सैकड़ों बच जाते। अब मैं अवश्य इसे मार डालूँगा।

अब एण्टनी का मन क्लियोपाट्रा से बिल्कुल खट्टा हो चुका था। अब वह स्वय देख चुका कि यह चुड़ैल छल करती है। इसलिए क्लियोपाट्रा को भी उसे समझाने का कोई उपाय सूझता न था।

पहले तो दो चार आँसू गिरा कर वह एण्टनी को प्रसन्न कर देती थी और एण्टनी उसकी मुसकराहट देखते ही उसके सब दोष भूल जाता था। परन्तु इस समय एण्टनी के हृदय में बड़ा भयङ्कर घाव लगा था, जो एक दो चिकनी चुपड़ी बातों से अच्छा नहीं हो सकता था। इसलिए अपनी सहेलियों की अनुमति से (क्योंकि क्लियोपाट्रा की सहचरियाँ भी कुछ कम छली न थीं) उसने अपने आप को एक मन्दिर में बन्द कर

लिया और एण्टनी के पास कहला भेजा कि क्लियोपाट्रा मर गई और अन्तिम समय उसके मुख से यही शब्द निकलते थे—"एण्टनी! एण्टनी!"

जब वह दूत एगण्टनी के पास पहुँचा, एण्टनी ने कहा—

"देख आज तेरी रानी ने मेरे हाथ से तलवार छुड़ा दी।"

दूत—नहीं महाराज! रानी को आप से अगाध प्रेम था और उसका परिणाम भी आप का ही सा हुआ!

एण्टनी—नहीं दुष्ट! चुप रह! तेरी रानी ने मुझे नष्ट कर दिया। मैं उसे अवश्य प्राणदण्ड दूँगा!

दूत—श्रीमान्! मनुष्य को एक ही बार प्राणदण्ड दिया जाता है! यह वह स्वय पा चुकी। आप जो चाहते थे वह हो गया! अन्त में उसने यही कहा था "एण्टनी, सुयोग्य एण्टनी!" फिर उसका दम घुटने लगा और उसने "एण्टनी" कहना चाहा परन्तु शब्द मुँह का मुँह ही में रह गया!

एण्टनी—तो वह मर गई?

दूत—हाँ मर गई!

एण्टनी—अच्छा तो अब समस्त दिन का काम समाप्त हो गया। अब हमे सोना चाहिए। क्लियोपाट्रा! मैं तेरे पीछे आता हूँ। महारानी ठहर। मेरे लिए ठहर। मैं रो रो कर तेरे लिए क्षमा माँगूँगा। हम दोनों स्वर्ग लोक मे मिलेंगे। (नौकर से) क्लियोपाट्रा मर गई इसलिए हमारा जीना व्यर्थ है। मैंने अपनी तलवार से समस्त ससार जीत लिया था, परन्तु आज मुझ में एक स्त्री के बराबर भी साहस नहीं है। तूने प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी कोई अत्यावश्यक कार्य्य होगा तो आप की सेवा

करूँगा। सो आज सब से जरूरी काम है क्योंकि अब जीते रहने मे लज्जा और अपयश के सिवा और कुछ नहीं है। इसलिए आज तलवार से इस जीवन को समाप्त कर।

नौकर—भला मैं वह बात कब कर सकता हूँ जो आप के शत्रु भी नहीं कर सके।

एण्टनी—अरे! क्या तू यह चाहता है कि रोम की खिड़कियों से अपने स्वामी को सीज़र के रथ के पीछे घसिटता हुआ देखे। क्या वर्तमान अपयश कुछ कम है?

नौकर—नहीं मैं नहीं चाहता!

एण्टनी—नहीं चाहता तो तैयार हो जा। एक घाव से मेरा सब रोग दूर हो जायगा। तलवार उठा।

नौकर—श्रीमान्! क्षमा कीजिए।

एण्टनी—अरे दगा तूने प्रतिज्ञा नहीं की थी कि समय पर काम आऊँगा। सो तू आज क्यों हटता है?

नौकर—अच्छा महाराज अपना मुख दूसरी ओर को कर लें। क्योंकि मुख को देखकर अत्याचार नहीं किये जा सकते।

एण्टनी—(पीठ फेर कर) लो!

नौकर—मेरी तलवार खिच गई!

एण्टनी—अच्छा फिर कार्य्य समाप्त कर।

नौकर—श्री महाराज! इस अन्त समय में आज्ञा दीजिए कि मैं प्रणाम कर लूँ।

एण्टनी—अच्छा प्रणाम!

नौकर—क्या अब मारूँ!

एण्टनी—हाँ!

नौकर—अच्छा लो ! अब मुझे एएटनी की मृत्यु का शोक न भोगना पड़ेगा।

यह कह कर नौकर ने अपने सिर में तलवार मारली और गिर पड़ा।

एएटनी—अरे वीर नौकर तू मुझे शिक्षा दे गया कि मुझे क्या करना चाहिए। मेरी रानी और तू दोनों मुझ से अच्छे रहे अब मैं मृत्यु से विवाह करता हूँ।

यह कह कर एएटनी तलवार के ऊपर गिर पड़ा परन्तु उसकी जान न निकली। उसने पहर के सिपाहियों से प्रार्थना की कि एक तलवार से शेष सम्बन्ध को तोड़ दो, लेकिन किसी ने स्वीकार न किया। जब वह इस प्रकार घायल पड़ा हुआ था क्लियोपाट्रा का नौकर वहाँ पर आ गया, जिसे रानी ने यह सोचकर एएटनी के पास भेजा था कि कहीं एएटनी उसकी कल्पित मृत्यु के शोक में प्राण न दे दे। एएटनी ने नौकर से प्रार्थना की कि "तलवार द्वारा इस कष्ट से छुड़ा दो।"

नौकर—श्री महाराज ! महारानी क्लियोपाट्रा ने मुझे भेजा है।

एएटनी—अरे कब भेजा था ?

नौकर—अभी !

एएटनी—वह कहाँ है ?

नौकर—श्रीमहाराज ! मन्दिर में ! जब उसने देखा कि आप बहुत क्रुद्ध हैं और समझते हैं कि वह सीज़र से मिल गई तो उसने आपके पास अपनी मृत्यु का समाचार भेज दिया, परन्तु फिर वह डरी कि कहीं आप आत्मघात न कर लें। इसलिए मुझे आप की सेवा में सच सच कहने को भेजा है। पर अब क्या होना है।

एण्टनी—अच्छा अभी थोड़ी सी देर और है। पहरे वालों-के आग मुझे क्लियोपाट्रा के पास ले चलो।

इधर क्लियोपाट्रा ने सुना कि एण्टनी ने आत्मघात कर लिया इसलिए वह सिर पीटने लगी। परन्तु मन्दिर से बाहर जाना उचित नहीं था क्योंकि आक्टेवियस सीज़र के नौकर चारों ओर मँडला रहे थे और क्लियोपाट्रा को जीवित पकड़ना चाहते थे। जब लोग एण्टनी को मन्दिर के पास लाये तो खिड़की में होकर उसने बड़ी मुश्किल से उसे भीतर खींच लिया। उसके मुँह से इतना ही निकला—

"एण्टनी! एण्टनी!"

एण्टनी—सीज़र मुझे न मार पाया। एण्टनी का अन्त एण्टनी के ही हाथ से हुआ!

क्लियोपाट्रा—उचित भी यही था। एण्टनी के सिवा और कौन एण्टनी को जीत सकता था!

एण्टनी—रानी मेरा अन्त निकट है, मुझे प्यार करले।

क्लियोपाट्रा ने कुछ शराब पिलाई, जिसके नशे से वह थोड़ी देर तक बोलता रहा। उसने अन्त में कहा—"प्यारी क्लियोपाट्रा सीज़र के पास जा और रक्षा तथा यश की प्रार्थी हो।"

क्लियोपाट्रा—यश और रक्षा दोनों में परस्पर विरोध है।

एण्टनी—मेरी इस शोचनीय दशा पर शोक मत करो! किन्तु मेरी उस अवस्था का ध्यान करके ख़ुशी मनाओ जिसको मैं भोग चुका हूँ। न तो नीचता से मरो और न मेरे कवच को किसी अन्य रोमन के हवाले करो। अब मेरा अन्त आ गया। मैं कुछ नहीं कह सकता।

क्लियोपाट्रा—हे वीर! तुझे मेरी कुछ परवाह नहीं है, और मरा आ रहा है। क्या मैं अब इस संसार में रहूँगी।

क्योंकि बिना तेरे यह घर सुअर के घर से उत्तम नहीं है । देखो ! देखो ! दुनिया का मुकुट पिघला जा रहा है । स्वामिन् ! युद्ध की जयमाल मुरझा गई । अब लड़के और लड़कियाँ वीरों के समान हैं, क्योंकि जो भेद था सो जाता रहा ।

इतने में एण्टनी का प्राणान्त हो गया और क्लियोपाट्रा को यह देखकर मूर्छा आ गई । बड़ी देर के पश्चात् उसे होश आया और मृतकसंस्कार की तैयारियाँ कीं ।

सीज़र ने भी एण्टनी की मृत्यु के विषय में सुना और बड़ा पश्चात्ताप किया, क्योंकि यद्यपि सीज़र एण्टनी का शत्रु हो गया था तथापि उसे विश्वास था कि एण्टनी बड़ा वीर पुरुष था । वीर लोग अपने शत्रुओं की मृत्यु पर भी आँसू बहाया करते हैं ।

सीज़र को अब यह भी खयाल हुआ कि कहीं क्लियोपाट्रा एण्टनी के सोच में मर न जाय । इसलिए उसने जल्दी जल्दी उसे सन्तोष देने के लिये दूत भेजे । एक दूत ने मन्दिर के निकट आकर कहा कि महारानी सीज़र से क्या चाहती है ।

क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"अगर तुम्हारा स्वामी चाहता है कि मैं उससे भीख माँगूँ तो मैं यही माँगूँगी कि मेरे लड़के को मिश्र का देश दे दिया जाय ।"

इसके पश्चात् वह दूत खिड़की में रस्सी लगाकर मन्दिर के भीतर चढ़ गया । रानी डरी और तलवार उठा कर अपना अन्त करना चाहा परन्तु उस दूत ने झट उसके हाथ से तलवार छीन ली । इस प्रकार क्लियोपाट्रा आत्मघात करने में सफल न हो सकी । परन्तु उसने खाना-पीना छोड़ दिया । दिन रात रोती रहती । ज्वर ने उसे आ घेरा । सीज़र ने वैद्यों को उस

की चिकित्सा के लिये भेजा, परन्तु उसने औषध नहीं खाई। रोते रोते उसकी आँखें सूज गईं।

इसके पश्चात् सीजर स्वयं मन्दिर में आया। क्लियोपाट्रा उठ खड़ी हुई और पृथ्वी में सिर झुका कर प्रणाम किया। सीज़र ने कहा—

"दुखी मत हो। जो हानि तुमने हमको पहुँचाई है हम उसको भूल जायेंगे।"

क्लियोपाट्रा—महाराज! मैं केवल इतना कहती हूँ कि मुझसे ऐसी भूलें हो गई हैं जैसी प्रायः स्त्री जाति से हो जाया करती हैं।

सीजर—सुनो। अगर हमारे आश्रय आओगी तो हम तुम्हारे ऊपर दया करेंगे। पर जो एण्टनी की तरह आत्मघात किया तो हमारा क्रोध बहुत बढ़ जायगा और हम तुम्हारी सन्तान को मार डालेंगे।

क्लियोपाट्रा—आप जो चाहें करें। हम आपके आश्रित हैं।

अब सीजर ने हुक्म दिया कि मिश्र का कोश उसको दे दिया जाय। सिल्यूकस, क्लियोपाट्रा का कोशाध्यक्ष उसके साथ था। क्लियोपाट्रा ने कुछ बहुमूल्य रत्न छिपा कर शेष सब कुछ उसके सामने रख दिया। परन्तु सिल्यूकस ने कहा कि अभी बहुत कुछ छिपा लिया गया है। इस पर तो क्लियोपाट्रा को बड़ा क्रोध आया और सीजर के सामने ही उसके कई घूँसे मारे और निकाल दिया। सीज़र ने कुछ न कहा और वहाँ से चला गया।

इन्द्रिय-लालसा तो क्लियोपाट्रा के मन में अन्तिम समय तक रही। उसने बातों तथा शृङ्गार से सीजर का मन भी आकर्षित करना चाहा। जिस समय सीजर उसके समीप आया उस समय यद्यपि एण्टनी के शोक से उसकी आँखें सूज रही थीं,

बाल बिखरे हुए थे परन्तु उस समय भी उसका स्वरूप कुछ कम लुभाने वाला न था। लेकिन सीजर के सामने उसका चातुर्य कुछ न चला और वह अपने कार्य की सिद्धि में सफल न हो सकी।

सीज़र के चले आने के पश्चात् क्लियोपाट्रा ने उसके एक दूत की बड़ी खुशामद की और पूछा कि वास्तव में सीज़र मेरे साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है? उस दूत ने क्लियोपाट्रा की इस शोचनीय दशा पर तरस खाकर उत्तर दिया कि मिश्रेश्वरि! दो तीन दिन और सुख करलो। सीज़र का मुख्य प्रयोजन तो यही है कि तुमको बन्दी बना कर रोम को ले जाय। वह इस समय सीरिया हो कर रोम को जा रहा है और तीन दिन में तुमको अपने पुत्रों सहित रोम को जाना होगा।

यह बात सुन कर क्लियोपाट्रा का शरीर काँप उठा। उसे अब पूरा विश्वास हो गया कि दुर्दशा अवश्य होने वाली है। उस समय क्लियोपाट्रा को चारों ओर अन्धकार मालूम होने लगा वह कहने लगी कि अब जीवित रहने में ही मृत्यु है। और इस मृत्यु से बचने की केवल एक ही विधि है अर्थात् किसी प्रकार आत्मघात करना चाहिए। उस समय उसे एएटनी का एक उपदेश याद आया जो उसने मरते समय दिया था कि "रानी की मौत मरना"। अब उसने विचार किया कि मरने में ही कल्याण है।

यह सोच कर उसने अपनी प्रधान सहचरी चारमियन को बुलाया और कहा—

"प्यारी सखी! आज का दिन और बाकी है। हम को रानी की भाँति भली प्रकार शृङ्गार कराओ जिससे हम सम्मान के साथ मर सकें। मर कर ही हमको प्रियतम एएटनी के दर्शन होंगे।"

उसी समय एक किसान तरकारी की एक टोकरी दरवाज़े पर लाया और भीतर आने की आज्ञा चाही। इस किसान को क्लियोपाट्रा के किसी चाकर ने नील नदी के साँप लेकर भेजा था। इन साँपों की ऐसी प्रकृति कही जाती है कि वह जिसको काट लेते हैं वह किसी औषध से भी नहीं बच सकता, परन्तु इनके काटने में थोड़ा सा भी कष्ट नहीं होता। क्लियोपाट्रा उस को देख कर खुश हुई और पूछा—

"क्या तेरे पास नील नदी का सर्प है जिसके काटने से सहज में ही मृत्यु हो जाती है?"

किसान—हाँ सर्प है। देखो, देखने में यह कितना सुन्दर है।

क्लियोपाट्रा—अच्छा तुम इस टोकरी को रखकर बाहर चले जाओ।

किसान के जाने पर चारमियन से कहा—

"सखि! मुझे शृङ्गार कराओ। मै अवश्य मरूँगी। एण्टनी मुझे बुला रहा है। देर हो गई है वह कहता होगा कि मैं सीज़र के वश में आ गई। स्वामिन्! प्राणेश्वर! मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ। अब देर नहीं है।"

इसके पश्चात् उसने सब सहचरियों को गले लगाया। उसके पश्चात् एक सर्प को उठा कर अपने वक्षःस्थल से लगा लिया और कहने लगी—

"देखो! हमारे वक्ष में बालक दूध पी रहा है"

फिर उसने एक और सर्प को लेकर बाँह में लगा लिया। सर्प ने क्लियोपाट्रा के कोमल शरीर को झट काट लिया और वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी।

क्लियोपाट्रा की मृत्यु पर उसकी सहचरी चारमियन ने भी सर्प-द्वारा आत्मघात किया।

जिस समय मिश्रेश्वरी इस प्रकार स्वर्ग को सिधार गई उसी समय सीजर के दूत उसे पकड़ने के लिये आ पहुँचे और सीजर भी उनके साथ था, क्योंकि सीजर को यह समाचार मिल गया था कि क्लियोपाट्रा अब आत्मघात करना चाहती है। इसलिए वह जल्दी से उसे रोकने के लिये आया था। परन्तु अब क्या हो सकता था, क्लियोपाट्रा अपने एण्टनी के पास थी और वे दोनों स्त्री पुरुष सांसारिक बन्धनों से छूट चुके थे।

सीजर आया और अपने परिश्रम को विफल देखकर शोकातुर हुआ। अन्त में उसका मृतक-संस्कार बड़े सम्मान के साथ किया गया और उसका शव एण्टनी के शव के साथ समाधिस्थ कर दिया गया।

इति